UNIVERSAL
LIBRARY
OU_186348
UNIVERSAL
LIBRARY

POCKET MAP

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81 G L R   Accession No. G. H. 2876

Author गोस्वामी, मदन मोहन

Title रणभेरी   1963

This book should be returned on or before the date last marked below

सूबेदार जोगिन्दर सिंह

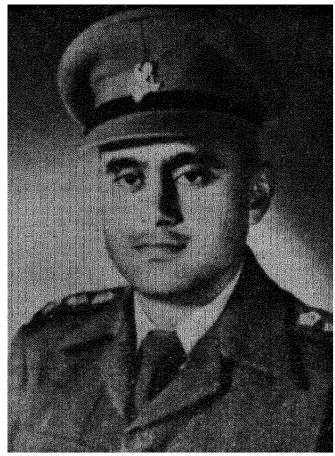

मेजर शैतान सिंह

मेजर धन सिंह थापा

परम वीर चक्र विजेता

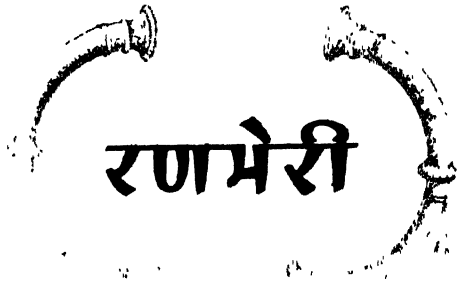

[मित्रघाती चीन की चुनौती का मुंह-तोड़
उत्तर देनेवाली ओजस्वी कविताओं का संग्रह]

भूमिका

सरदार प्रताप सिंह कैरों

मुख्य मंत्री, पंजाब

प्रकाशक

लोक-सम्पर्क विभाग, पंजाब

प्रकाशक

श्री हरिश्चन्द्र खन्ना

[illegible]

[illegible]

प्रथम संस्करण

१८८७ शकाब्द

(१९६५ ई.)

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

श्री हरिश्चन्द्र खन्ना

श्रीमती [illegible]

[illegible]

श्री मदनमोहन [illegible]

[illegible]

श्री मोहनलाल [illegible]

मुद्रक

नियंत्रक, मुद्रण तथा लेखन सामग्री, पंजाब, चण्डीगढ़

[illegible]

[illegible]

सत्यमेव जयते

हमारा संकल्प

"विश्वास और निष्ठा के साथ, यह सदन भारतीय जनता के इस दृढ़ संकल्प की पुष्टि करता है कि संघर्ष चाहे कितना ही लम्बा और कठिन क्यों न हो, भारत की पवित्र भूमि से हमलावरों को निकाल बाहर किया जाएगा।"

[नवम्बर, १९६२ में संसद द्वारा स्वीकृत एक प्रस्ताव से]

जय हिन्द

"हम अपनी कोशिशों में ढील नही आने देंगे और तब तक लड़ते रहेगे, जब तक चीनी हमलावरों को भारत-भूमि से पूरी तरह खदेड़ नही दिया जाता। हम राष्ट्र के सम्मान और मातृभूमि की मर्यादा-रक्षा के सवाल पर कभी किसी प्रकार का समझौता करने को तय्यार नहीं।

"हमारी जीत निश्चित है।"

—जवाहरलाल नेहरू

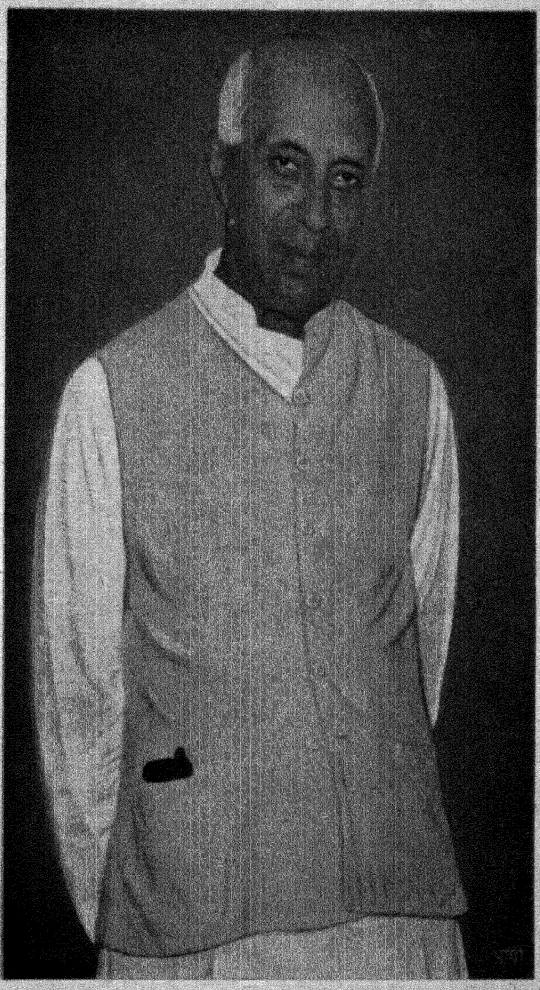

हे राष्ट्र-मुकुट !
हे देश-धर्म के उन्नायक !
हे कठिन-व्रती !
हे आजादी के परवाने !
तुम ने व्रत लिया
तो आजादी को ले आए
तुमने गणतन्त्र
समाजवाद के लक्ष्य लिए
तुमने ही वामन
को विराट के अर्थ दिए
जब इन्द्रकोप से
लोकतन्त्र-शिशु अकुलाया
तुम अडिग रहे
सिर पर गोवर्धन डाल लिए
अब एक 'मित्र' ने
छुरा पीठ में मारा है
पर अच्छा ही है
मोह भंग हो गया सभी
अब महासमर के
लड़ने की तय्यारी है
तुम ने बतलाया
"रक्त मांगती आजादी"
श्री' एक-एक वर-
वीर देश का मचल उठा
जब तुम जैसा—
रथवाह सभी अर्जुन निर्भय
जैसा तुमने है कहा स्वयं
यह ध्रुव निश्चित
इस धर्म-युद्ध में
"अंतिम विजय हमारी है।"

—पुरुषोत्तम

नर-नाहर नेहरू

हम प्रहरी यमराज समान

अहमस्मि सपत्नहेन्द्र इवारिष्टो अक्षतः । अधः सपत्ना मे पदोरिमे सर्वे अभिष्ठिताः ॥

—ऋग्वेद

मैं शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला हूँ । इन्द्र के समान पराक्रमी हूँ । मुझे न तो कोई मार सकता है, न पराजित कर सकता है । मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है, मानो मेरे सभी शत्रु मेरे पैरों तले रौंद पड़े हुए हैं ।

पृथिवि स्थिरा भव भुजङ्गम धारयैनां, त्वं कूर्मराज तदिदं द्वितयं दधीथाः ।
दिक्कुञ्जराः कुरुत तत्त्रितये दिधीर्षाम्, आर्यः करोति हरकार्मुकमाततज्यम् ॥

—महर्षि वाल्मीकि

अरी पृथ्वी ! सम्हल जा । अरे शेषनाग ! पृथ्वी को सम्भालो । अरे कमठराज ! तुम पृथ्वी और शेष दोनों को सम्भालो । अरे दिग्गजो ! तुम इन तीनों को सम्भालो । देखो ! आर्य राम शिव के धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ा रहे हैं ।

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्,
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ।

—भगवान् कृष्ण

यदि मर गए तो स्वर्ग मिलेगा, यदि जीत गए तो पृथ्वी का शासन करोगे । इस लिए हे अर्जुन ! उठो और युद्ध के लिए तैयार हो जाओ ।

जातोऽसि भारते वंशे सर्व पार्थिव पूजिते गच्छ युध्यस्व धर्मेण क्षात्रेण पुरुषर्षभ ।

—भगवान् वेद-व्यास

समस्त विश्व द्वारा पूजित–अभिनन्दित भारत में जिसने जन्म लिया है, वह वीर आगे बढ़े और शत्रुओं पर टूट पड़े, न केवल शस्त्र से बल्कि शास्त्र से भी शत्रुओं को रौंद दे ।

खग खंड विहंड खल दल खंड, अतिरण मंड बर बंड ।
भुज दण्ड अखंड तेज प्रचंड, जोति अमंड भानु प्रभ ।
सुख संता करण दुर्मति दरण, किल्बिख हरण असि शरण ।
जै जै जग कारण सृष्टि उबारण, मम प्रतिपारण जै तेग ॥

—गुरु गोविन्द सिंह

"स्वाधीनता का पाणि-ग्रहण धारा-सभाओं में, अदालतों में या स्कूलों-कालेजों के कमरों में नहीं, कैदखानों की दीवारों में और कभी कभी फांसी के फंदों को चूम कर ही किया जा सकता है ।"

—महात्मा गांधी

जियो, जियो अय हिन्दुस्तान

गायंति देवाः किल गीतकानि धन्याःस्तु ते भारत-भूमि भागे ।
स्वर्गापवर्गास्पद मार्ग-भूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ।।

—विष्णु पुराण

देवता भी भारत-भूमि का यह कहकर स्तवन किया करते हैं कि जिन व्यक्तियों ने स्वर्ग व मोक्ष की मार्गभूत भारत-भूमि मे जन्म लिया है, वे हम देवताओं की तुलना मे कही अधिक सौभाग्यशाली हैं ।

"धन्य है वह भारत-भूमि, जहां न्यायालय तो हैं किन्तु कोई अपराधी नहीं, कारावास हैं कोई बंदी नही, घर हर तरह की श्री-सम्पदा से सम्पन्न और समृद्ध हैं, पर ताले नहीं ।"

—ह्यून सांग

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमां हमारा ।

—इकबाल

भारति, जय, विजय-करे ! कनक-शस्य कमल-धरे ।
लंका पदतल-शतदल, गर्जितोर्मि सागर-जल
धोता शुचि चरण-युगल, स्तव कर बहु अर्थ-भरे !
तरु-तृण-वन-लता वसन, अंचल में खचित सुमन,
गंगा ज्योतिर्जल-कण, धवलधार-हार गले,
मुकुट शुभ्र हिम-तुषार, प्राण प्रणव ओंकार,
ध्वनित दिशाएं उदार, शतमुख-शतरव-मुखरे ।

—सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

जय जन भारत, जन-मन अभिमत, जन गण तंत्र विधाता !
गौरव भाल हिमालय उज्ज्वल, हृदय हार गंगा जल,
कटि विन्ध्याचल, सिन्धु चरण तल, महिमा शाश्वत गाता !
हरे खेत लहरे नद-निर्झर जीवन शोभा उर्वर,
विश्व कर्म-रत कोटिबाहु-कर अगणित पद ध्रुवपथ पर !
प्रथम सभ्यता ज्ञाता, साम ध्वनित गुण गाथा,
जय नव मानवता निर्माता, सत्य अहिंसा दाता !
जय हे, जय हे, जय हे, शांति अधिष्ठाता !

—सुमित्रानन्दन पंत

हम प्रहरी यमराज समान

अहमस्मि सपत्नहेन्द्र इवारिष्टो अक्षतः । अधः सपत्ना मे पदोरिमे सर्व अभिष्ठिताः ॥

—ऋग्वेद

मैं शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला हूँ । इन्द्र के समान पराक्रमी हूँ । मुझे न तो कोई मार सकता है न पराजित कर सकता है । मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है, मानो मेरे सभी शत्रु मेरे पैरों तले पड़े हुए हैं ।

पृथिवि स्थिरा भव भुजङ्गम धारयैनां, त्वं कूर्मराज तदिदं द्वितयं दधीथाः ।
दिक्कुञ्जराः कुरुत तत्त्रितये दिधीर्षाम् आर्यः करोति हरकार्मुकमाततज्यम् ॥

—महर्षि वाल्मीकि

अरी पृथ्वी ! सम्हल जा । हे शेषनाग ! तू धरती को सम्भालना । हे कच्छपराज ! तुम पृथ्वी और शेष दोनों को सम्भालना । हे दिग्गजो ! तुम इन तीनों को सम्भालना । क्योंकि श्रीराम शिवजी के धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ा रहे हैं ।

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ।

—भगवान कृष्ण

यदि मर गए तो स्वर्ग मिलेगा, यदि जीत गए तो पृथ्वी का शासन करोगे । इसलिए हे अर्जुन ! उठो और युद्ध के लिए तैयार हो जाओ ।

जातोऽस्मि भारते वंशे सर्व पार्थिव पूजिते गर्हितं य यस्य धर्मेण क्षात्रेण पुरुषर्षभ ।

—भगवान वेद-व्यास

समस्त विश्व द्वारा … जिसने जन्म लिया है वह वीर आगे बढ़ और शत्रुओं पर टूट पड़े … न रखता शत्रु से कहीं … शास्त्र में भी शत्रुओं का … है ।

खग खण्ड विहण्ड खल दल खण्ड अति रण मण्ड बर बण्ड ।
भुज दण्ड अखण्ड तेज प्रचण्ड जोति अमण्ड भानु प्रभं ।
सुख सन्ता करणं दुर्मति दरणं किल्बिख हरणं असि सरणं ।
जै जै जग कारण सृष्टि उबारण मम प्रतिपारण जै तेगं ॥

—गुरु गोविन्द सिंह

स्वाधीनता का पाणि-ग्रहण धारा-सभाओं में, अदालतों में या स्कूलों-कालेजों के कमरों में नहीं, कचहरियों की दीवारों में और कभी-कभी फांसी के फन्दों को चूम कर ही किया जा सकता है ।

—महात्मा गांधी

जियो, जियो अय हिन्दुस्तान

गायंति देवाः किल गीतकानि धन्याःस्तु ते भारत-भूमि भागे ।
स्वर्गापवर्गास्पद मार्ग-भूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ।।

—विष्णु पुराण

देवता भी भारत-भूमि का यह कहकर स्तवन किया करते हैं कि जिन व्यक्तियों ने स्वर्ग व मोक्ष की मार्गभूत भारत-भूमि में जन्म लिया है, वे हम देवताओं की तुलना मे कहीं अधिक सौभाग्यशाली हैं ।

"धन्य है वह भारत-भूमि, जहां न्यायालय तो हैं किन्तु कोई अपराधी नहीं, कारावास हैं कोई बंदी नहीं, घर हर तरह की श्री-सम्पदा से सम्पन्न और समृद्ध हैं, पर ताले नहीं ।"

—ह्यून सांग

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमां हमारा ।

—इक़

भारति, जय, विजय-करे ! कनक-शस्य कमल-धरे ।
लंका पदतल-शतदल, गर्जितोर्मि सागर-जल
धोता शुचि चरण-युगल, स्तव कर बहु अर्थ-भरे !
तरु-तृण-वन-लता वसन, अंचल में खचित सुमन,
गंगा ज्योतिर्जल-कण, धवलधार-हार गले,
मुकुट शुभ्र हिम-तुषार, प्राण प्रणव ओंकार,
ध्वनित दिशाएं उदार, शतमुख-शतरव-मुखरे ।

—सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

जय जन भारत, जन-मन अभिमत, जन गण तंत्र विधाता !
गौरव भाल हिमालय उज्ज्वल, हृदय हार गंगा जल,
कटि विन्ध्याचल, सिन्धु चरण तल, महिमा शाश्वत गाता !
हरे खेत लहरे नद-निर्झर जीवन शोभा उर्वर,
विश्व कर्म-रत कोटिबाहु-कर अगणित पद ध्रुवपथ पर !
प्रथम सभ्यता ज्ञाता, साम ध्वनित गुण गाथा,
जय नव मानवता निर्माता, सत्य अहिंसा दाता !
जय हे, जय हे, जय हे, शांति अधिष्ठाता !

—सुमित्रानन्दन पंत

यह गिरिवर बन गया युगों से, विजय निशान हमारा है

जय देश हिन्द, देशेश हिन्द, जय सुखमा-सुख-निःशेष हिन्द,
जय धन-वैभव-गुण-खान हिन्द, विद्या-बल-बुद्धि-निधान हिन्द।
जय उज्ज्वल कीर्ति-विशाल हिन्द, जय करुणा-सिन्धु कृपाल हिन्द,
जय जयति सदा स्वाधीन हिन्द, जय जयति जयति प्राचीन हिन्द।

—श्रीधर पाठक

जय-जय भारतवर्ष हमारे, जय-जय हिन्द, हमारे हिन्द,
विश्व-सरोवर के सौरभमय प्रिय अरविन्द, हमारे हिन्द!

तेरे स्रोतों में अक्षय जल, खेतों में है अक्षय धान,
तन से, मन से, श्रम-विक्रम से, है समर्थ तेरी सन्तान!
सब के लिए अभय है जग में, जन-जन में तेरा उत्थान,
वैर किसी के लिए नहीं है, प्रीति सभी के लिए समान।

गंगा यमुना के प्रवाह हैं, अमल अनिन्द्य हमारे हिन्द,
जय-जय भारतवर्ष हमारे, जय-जय हिन्द, हमारे हिन्द!

तेरी चक्र पताका नभ में, ऊँची उड़े सदा स्वाधीन,
परम्परा अपने वीरों की शक्ति हमें दे नित्य नवीन।
सब का सुहित हमारा हित है, सार्वभौम हम सार्वजनीन,
अपनी इस आसिन्धु धरा में, नहीं रहेंगे होकर हीन।

ऊँचे और विनम्र सदा के हिमगिरि, विन्ध्य, हमारे हिन्द,
जय-जय भारतवर्ष हमारे, जय-जय हिन्द, हमारे हिन्द।

—सियाराम शरण गुप्त

गरज उठे चालीस कोटि जन सुन ये वचन उछाह भरे,
काँप उठे प्रतिपक्षी जन-गण, उन के अन्तस्तल सिहरे,
आज नये युग के नयनों से ज्वलित अग्नि के पुंज झरे।
कौन सामने आएगा? यह देश महान हमारा है।
भारत वर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है।

—बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

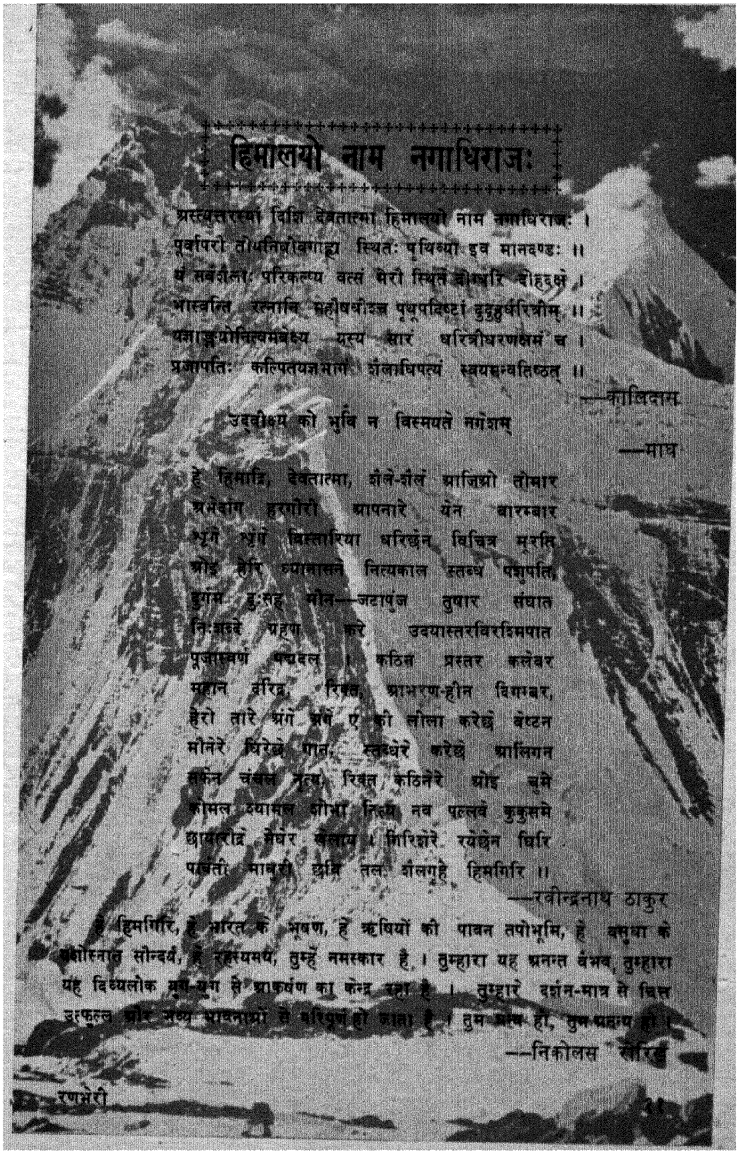

हिमालयो नाम नगाधिराजः

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः ।
पूर्वापरौ तोयनिधीवगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः ।।
यं सर्वशैलाः परिकल्प्य वत्सं मेरौ स्थिते दोग्धरि दोहदक्षे ।
भास्वन्ति रत्नानि महौषधींश्च पृथूपदिष्टां दुदुहुर्धरित्रीम् ।।
यज्ञाङ्गयोनित्वमवेक्ष्य यस्य सारं धरित्रीधरणक्षमं च ।
प्रजापतिः कल्पितयज्ञभागं शैलाधिपत्यं स्वयमन्वतिष्ठत् ।।

—कालिदास

उद्वीक्ष्य को भुवि न विस्मयते नगेशम्

—माघ

हे हिमाद्रि, देवतात्मा, शैले-शैले आजिओ तोमार
अभेदांग हरगौरी आपनारे येन बारम्बार
शृंगे शृंगे विस्तारिया धरिछेन विचित्र मूरति
ओइ हेरि ध्यानासने नित्यकाल स्तब्ध पशुपति,
दुर्गम दुःसह मौन—जटापुंज तुषार संघात
निःशब्दे ग्रहण करे उदयास्तरविरश्मिपात
पूजास्वर्ण पद्मदल । कठिन प्रस्तर कलेवर
महान दरिद्र, रिक्त, आभरण-हीन दिगम्बर,
हेरो तारे अंगे अंगे ए की लीला करेछे वेष्टन
मौनेरे घिरेछे गान, स्तब्धेरे करेछे आलिंगन
सफेन चंचल नृत्य, रिक्त कठिनेरे ओइ चुमे
कोमल श्यामल शोभा नित्य नव पल्लवे कुसुमे
छायारौद्रे मेघेर खेलाय । गिरिशेरे रयेछेन घिरि
पार्वती माधुरी छवि तव शैलगृहे हिमगिरि ।।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

हे हिमगिरि, हे भारत के भूषण, हे ऋषियों की पावन तपोभूमि, हे वसुधा के अलौकिक सौन्दर्य, हे रहस्यमय, तुम्हें नमस्कार है । तुम्हारा यह अनन्त वैभव, तुम्हारा यह दिव्यलोक युग-युग से आकर्षण का केन्द्र रहा है । तुम्हारे दर्शन-मात्र से चित्त उत्फुल्ल और भव्य भावनाओं से परिपूर्ण हो जाता है । तुम अद्भुत हो, तुम महान् हो ।

—निकोलस रोरिख

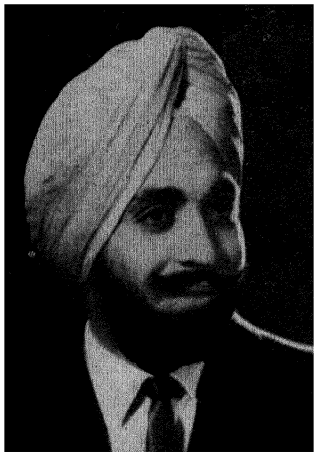

कैप्टन दयाल सिंह

सिंह शावक केवल सिंह

ब्रिगेडियर होशियार सिंह

ऐ मेरे वतन के लोगो, ज़रा आंख में भर लो पानी
जो शहीद हुए हैं उन की ज़रा याद करो कुर्बानी

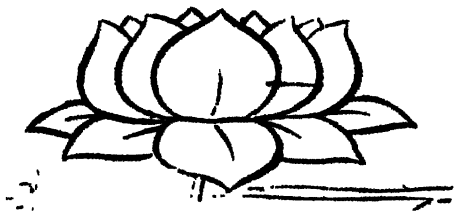

चाह नही, मैं सुर-बाला के गहनो मे गूथा जाऊ ।
चाह नही, प्रेमी-माला मे बिध प्यारी को ललचाऊ ।।

चाह नही, सम्राटो के शव पर हे हरि डाला जाऊ ।
चाह नही, देवो के सिर पर चढू, भाग्य पर इठलाऊ ।।

मुझे तोड लेना वनमाली, उस पथ मे तुम देना फेक ।
मातृ-भूमि पर शीश चढाने जिस पथ जाए वीर अनेक ।।

—माखनलाल चतुर्वेदी

नेफा और लद्दाख में रचे पौरुष-स्वयंवर में
मृत्यु-वरमाला जीतने वाले भारतीय
जवानों को समर्पित

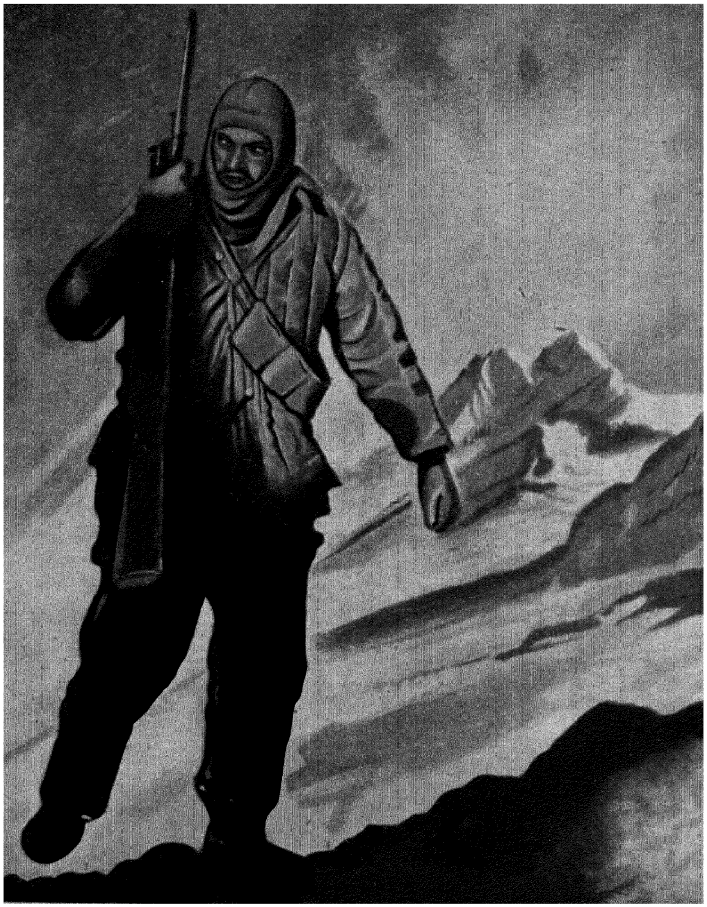

[कलाकार चमनलाल]

अहमिन्द्रो न पराजिग्ये [ऋग्वेद १० ४८]

मैं अमृतपुत्र हूं, मुझे कोई पराजित नहीं कर सकता

भूमिका

परमाणु की शक्ति की थाह ली जा सकती है, परन्तु वाणी की शक्ति का कोई पारावार नहीं । इसकी शक्ति अनन्त है, कल्पनातीत है । इतिहास साक्षी है कि वाणी के स्रष्टा—कवियों ने समय समय पर अपनी उद्‌बोधक एवं ओजस्वी वाणी द्वारा निष्प्राण राष्ट्र में नव-जीवन और नव-चेतना का संचार किया, पराजय को विजय में बदला और असंभव को संभव कर दिखाया ।

कहीं किसी की आंख से आंसू बहा, कभी कोई चीत्कार कर उठा, कहीं किसी निरीह की पुकार सुनाई दी तो कवि मूक नहीं रहे । उन की वाणी मुखर हो उठी । उन के उद्‌घोष से आकाश का वक्षस्थल विदीर्ण हो गया । सागर में ज्वारभाटा आया और भूधर तक विचलित हो उठे ।

एक बार नहीं, अनेकों बार कवियों ने यह सब कुछ कर दिखाया । असंख्य अवसरो पर उन्होंने आततायियों से लोहा लिया और सर्व-साधारण को स्वाधीनता और सम्मान की रक्षा के लिए सर्वस्व न्योछावर करने की प्रेरणा दी ।

कुरुक्षेत्र में जब कौरवों और पांडवो की सेनाएं आमने-सामने डट गईं तो महारथी अर्जुन डोल गया और मोह ने उसे किंकर्त्तव्य-विमूढ़ बना दिया । उस समय जिस शक्ति ने उस के मोह को दूर किया और उसे अन्याय और अत्याचार के उन्मूलन के लिए गांडीव उठाने की प्रेरणा दी, वह भगवान की अमर वाणी ही थी ।

राजपूतों के शौर्य और बलिदान का स्रोत राजस्थान के चारण कवि एवं चंद बरदाई जैसे वीर रस के सुकवि ही थे । समर्थ गुरु राम दास और महाकवि भूषण की वाणी से ही प्रेरणा ले कर मरहठे वीर आंधी की तरह उठे और उन्होंने मुगल राज के वट-वृक्ष को धराशायी कर दिया ।

गुरुओं की अमर वाणी ने पंजाब-वासियों में एक ऐसी चेतना पैदा की, जिस ने इतिहास की दिशा ही बदल डाली । यदि सिख सूरमे सिर हथेली पर रख कर दो-धारी

तलवारें चमका सके या आरों से चीरे जाने पर या फांसी के फंदों को चूमते समय भी सत्य-निष्ठा से मुस्कराते रहे, तो इस का एकमात्र कारण यह था कि उन्हें राष्ट्र-हित सर्वस्व न्योछावर करने वाले गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज की यह शिक्षा मिली थी कि

देहि शिवा वर मोहि इहै शुभ करमन ते कबहूँ न टरों,
न डरों अरि सो जब जाय लरों निश्चय कर अपनी जीत करों ।
अरु सिख हों अपने मन को इह लालच हउ गुण तव नित उचरों,
जब आव की आउध निदान बनै अति ही रण में तब जूझ मरों ।

कौन नहीं जानता कि आज भी उत्तर प्रदेश के वीर सैनिक जब जगनिक की अमर कृति आल्हा के बोल सुनते हैं तो उनकी आंखों से अंगारे बरसने लगते हैं ।

अंग्रेजी राज के दिनों स्व० बांकेदयाल, श्री मैथिलीशरण गुप्त, पं० माखन लाल चतुर्वेदी, स्व० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', श्री हरिकृष्ण प्रेमी, स्व० सुब्रह्मण्यम् भारती, नजरुल इस्लाम, मौ० हसरत मुहानी, पं० मेला राम 'वफा', स० हीरा सिंह 'दर्द', ज्ञानी गुरमुख सिंह 'मुसाफिर', उस्ताद चिरागदीन 'दामन', हजारा सिंह गुरदासपुरी आदि राष्ट्रीय कवियों ने गुलामी का जुआ उतार फेंकने के लिए जो योगदान दिया है, वह भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा रहेगा ।

स्वाधीनता संग्राम के हजारों सैनिक जेलों में अमर शहीद रामप्रसाद 'बिस्मिल' का यह तराना गुन-गुनाते रहते थे

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है ।

आज जब चीनियों ने विश्वासघात कर के हम पर हमला किया तो हमारे कवियों का परम्परागत स्वाभिमान जागृत हुआ, उन की धमनियां फड़क उठीं और उन के आग उगलने वाले काव्य ने देश में स्वाधीनता की रक्षा के लिए तन-मन-धन बलिदान करने का वातावरण तैयार कर दिया । उन की लेखनी बर्बर चीनियों के लिए खड्ग का रूप सिद्ध हुई । इन के गीतों की ताल पर हमारी सेनाएं आगे बढ़ने लगीं । करोड़ों कामगरों और किसानों के कर्मठ हाथ गतिशील हो उठे और सारा राष्ट्र चीनी आक्रान्ताओं के सामने एक अभेद्य प्राचीर के रूप में उठ खड़ा हुआ ।

यह हर्ष का विषय है कि पंजाब के लोक-सम्पर्क विभाग ने हिन्दी एवं पंजाबी की ऐसी कविताओं के दो संग्रह —"रणभेरी" और "जंगी ललकार"—प्रकाशित किए हैं। मुझे आशा है कि ये दोनों कविता-संग्रह लोगों में राष्ट्र-भक्ति की भावना को और भी प्रबल बनाएंगे, उन्हें भारत मां की मान-मर्यादा की रक्षा के लिए सर्वस्व त्याग करने की प्रेरणा देंगे और उन के इस विश्वास को और भी दृढ़ बनाएंगे कि 'भारत का पक्ष सत्य और औचित्य पर आधारित है तथा इस से जो टकराएगा चूर चूर हो जाएगा।'

प्रताप सिंह

मुख्य मंत्री, पंजाब

सीमा पर जो गए बांकुरे दूध चुकाने भारत मां का

[सामने पृष्ठ के चित्रों का परिचय]

— ० —

विशिष्ट सेवा पदक (प्रथम श्रेणी) **विजेता**

प्रथम पंक्ति

मेजर जनरल के० पी० कैंडथ

मेजर जनरल आर० एम० ग्रेवाल, एम० सी०

मेजर जनरल एम० एम० पठानिया

ब्रिगेडियर कल्याणसिंह

ब्रिगेडियर के० ए० एम० राजा

महावीर चक्र विजेता

दूसरी पंक्ति

ब्रिगेडियर टी० एन० रैना

मेजर सरदूलसिंह रधावा

मेजर अजीतसिंह

मेजर शेर प्रतापसिंह श्रीकान्त

नायक रबि लाल थापा

तीसरी पंक्ति

मैकण्ड लैफ्टिनैण्ट श्यामल देव गोस्वामी

विशिष्ट सेवा पदक (द्वितीय श्रेणी) **विजेता**

कैप्टन नरेन्द्र कुमार

वीरचक्र विजेता

हवालदार तुलसी राम

नाम नायक ज्ञान सिंह

कैप्टन अश्विनी कुमार दीवान

चौथी पंक्ति

विंग कमाडर टॉम लायनल एण्डर्सन

राइफल मैन तुलसी राम थापा

कैप्टन सुधीर कुमार सोनपर

कैप्टन ओम प्रकाश बगिया

जेम० रिंगजिन फुचोक

पांचवीं पंक्ति

सूबेदार सत्ताजित रुन

स्क्वैड्रन लीडर मनोहर महादेव टकले

कैप्टन सतीश चद्र चड्ढा

मेकण्ड लैफ्टीनैण्ट धर्म दत्त भल्ला

मेजर मल सिंह

The Prime Minister of India,
NEW DELHI.

Brave Leader our victim of love
and hope,

At this crucial moment when our
mother land's integrity and freedom
are challenged we wholeheartedly
rally round you. We with our sig-
natures in our own blood solemnly
declare and avow that we are pre-
pared to shed our blood to the last
drop for the cause of our country.

संकेतिका

पृष्ठ

तुम ने रची मरण से जीवन की हर बार सगाई है
—श्री अंचल ३१

नगपति तुम्हें पुकार रहा है, जागो भारत की तरुणाई
—श्री आनन्दनारायण शर्मा ३३

चीन की दीवार पर सौ सौ तिरंगे तान देंगे
—श्री आनंद मिश्र ३५

झूम झूम कर आई, पावन वेला है बलिदान की
—श्री आरसी प्रसाद सिंह ४१

दांत तोड़ कर अजगर के अब करना बन्द पिटारा
— श्री इन्द्रजीत सिंह 'तुलसी' ४२

चलो चीन पर करें चढ़ाई
—श्री ईश्वर चन्द्र पाण्डेय 'ईश' ४४

भडक उठे हैं, मंदिर, मस्जिद, गरज उठा गुरुद्वारा है
—श्री उदय भानु 'हंस' ४५

शांति में शिव हैं हम, अशांति में प्रचड रुद्र
—श्री उदय शंकर भट्ट ४७

बन-मानस बौनों ने बढ़ कर शेरों को ललकारा है
—श्री ऋषि पटियालवी ४९

बलशाली के लिए जगत में कुछ भी तो प्रतिकूल नहीं
—श्री ओम प्रकाश आनन्द ५०

अभी समय है चेत अरे चाऊ माऊ
—श्री ओम प्रकाश वर्मा ५१

रोप अंगदी चरण युद्ध में, प्रभु को भी ललकार लगाएं
—डा० कन्हैया लाल सहल ५३

आन हिमालय की है तुम को, शपथ तुम्हें गंगा की
—श्री कमलाकर ५४

ओ भारत मा के लाल उठो
—श्री कुलदीप 'सिन्धु' ५६

शिव को बुलाओ रे ! तांडव रचाओ रे !!
—श्री कृष्ण कुमार शर्मा ५८

वतन पर अब तो नकदे जां लुटा देने का वक्त आया
—बाबा कृष्ण गोपाल 'मासूम' ५९

मा, मेरे पूर्वजो की सनातन मां
—श्री कृष्णनन्दन 'पीयूष' ६०

बलि के पथ पर चलने वालो, मेघो सा हुकार करो !
—श्री केदार नाथ मिश्र 'प्रभात' ६१

मुझे नींद नही आती
—श्री कैलाश बाजपेयी ६२

जगो, उठो, चलो, बढो, लिए कलम कराल सी
—श्री सोमचन्द्र 'सुमन' ६६

हिन्द का जवान लाख लाख के समान है
—श्री गिरिधर गोपाल ६७

युद्ध की चुनौती स्वीकार है
—श्री गिरिजा कुमार माथुर ६८

शीश चढा दे जो चरणों पर वही उतारे आरती
—श्री गुलाब ७१

चालीस करोडो को हिमालय ने पुकारा
—स्वर्गीय गोपाल सिंह 'नेपाली' ७४

गुमान मा के दुश्मनो का धूल में मिलाए जा
—श्री गोपाल प्रसाद व्यास ७६

आज न हम मे से कोई भी मां का दूध लजाए रे !
—श्री जयकुमार 'सुकुमार' ७७

तोड दो वह हाथ जो लांछित करे इतिहास को
—श्री चंद्रदेव सिंह ८०

देव कुसुम शर त्याग, धनुष पर अग्निज बाण चढाओ !
—श्री चिरजीत ८१

रणभेरी बज उठी
—श्री चिरंजी लाल 'भावुक' ८२

भारत का हर वीर सजग है, नेहरू पहरेदार खड़ा है
—श्री जगदीश 'विद्रोही' ८४

पृष्ठ

हम सैनिक है वीर, देश के हम सैनिक है वीर

—श्री जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिन्द' ८५

चलो जवानो ! हिमगिरि के शिखरों ने तुम्हें पुकारा है

—श्री त्रिलोकी नाथ 'रंजन' ८६

राष्ट्र को आज चाहिए दान, दान मे नवयुवकों के प्राण

—श्री देवराज 'दिनेश' ८७

भारत-भू के वीर सिपाही रिपु के खट्टे दांत करेंगे

—श्री देवी दयाल चतुर्वेदी 'मस्त' ९०

मौत भी आए तो सीने से लगा सकते है हम

—श्री नज़ीर बनारसी ९१

बढ़े चलो, बढ़े चलो

—श्री नरेन्द्र चंचल ९३

हर व्यक्ति हिमालय बन जाए

—श्री नरेन्द्र शर्मा ९४

बढ़े चलो, बढ़े चलो, सदर्प वीर भारती

—श्री नलिन ९५

अरिदल की तोपें ठण्डी कर दो अपने बलिदानों से

—श्री नन्द किशोर 'रजनीश' ९६

तप्त लहू की धार बह चली

—श्री नागार्जुन ९८

आज चुकाना है ऋण तुम को, अपनी मां के प्यार का

—श्री निरंकारदेव 'सेवक' ९९

भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है

—श्री नीरज १००

बस तुम नर्तन करती जाओ

—कुमारी नीरजा १०३

विजय या कि बस मौत, यही अब एक हमारा नारा है

—श्री पद्मकांत मालवीय १०४

ओ हिमालय के सपूतो !

—श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' १०९

उठो, विजय-अभियान करो तुम

—सुश्री पद्मा सुधि ११२

पृष्ठ

जितना रक्त हिमालय मांगे उस को देंगे

—श्री पुरुषोत्तम कुमार निमावन १११३

तुम पासबा वतन के तुम कौम के सहारे !

—श्री प्रकाश अम्बालवी ११५

मुझे मृत्यु से प्यार है

—श्री प्रदीप पन्त ११६

रक्खेगे बदूक भरी तय्यार

—डा० प्रभाकर माचवे ११८

राम कृष्ण की धरती से पीछे हट जाओ

—श्री प्रेम प्रकाश १२०

वीरो का पालना रहा है सदियो से पजाब

—श्री बदरी नारायण दास १२१

कर दो पल मे अब चूर-चूर चीनी सपना

—डा० बलदेव प्रसाद मिश्र १२३

हमलावरो सावधान !

—श्री बलवन्त मनराल १२५

कवि कुछ ऐसी तान सुना दे गूज उठे रणभेरी घर घर

—श्री बशीर अहमद 'मयूख' १२९

राष्ट्र-यज्ञ हो रहा आज, बेला आई बलिदान की

—श्री बाबूलाल शर्मा 'प्रेम' १३२

माथो की भेट चढाएगे, फिर मा ने हमें पुकारा है !

—श्री बालस्वरूप 'राही' १३४

वतन पर कटने मरने के लिए तैयार हो जाओ !

—श्री बिस्मिल इलाहाबादी १३६

सिरो को बैरियो के तुम पिरोने के लिए आओ !

—श्री बेढब बनारसी १३७

नया राग छेड दो, चीन को खदेड दो

—श्री बेधड़क बनारसी १३८

हिमगिरि के कण कण बदल रहे अगारो में

—श्री ब्रजेन्द्र अवस्थी १३९

अर्जुन का गाडीव अभी तो जगा हुआ है

—श्री भगवतशरण चतुर्वेदी १४३

पृष्ठ

तुम हो चीन तो हम प्राचीन

—श्री भरत व्यास १४७

अभय गान

—श्री भवानी प्रसाद मिश्र १४६

मांग रहा है देश जवानो तुम से फिर कुर्बानियां

—श्री भाग सिंह १५०

राजपूत, बुंदेला जागा, सिक्ख, गोरखा जागा

—श्री भारतभूषण अग्रवाल १५१

राष्ट्र-सुरक्षा के हित सोया देश जगाते बढ़े चलो

—श्री मदन गोपाल सिंहल १५३

ओ देश के मेरे जवान !

—श्री मधुर शास्त्री १५७

जागो हे सांगा के वंशज, वीर शिवा जी की संतान

—श्री मनोहर प्रभाकर १५६

माओ और चाऊ के नाम

—डा० महेन्द्र भटनागर १६०

बहने दो बलि पंथी धारा

—श्री माखन लाल चतुर्वेदी १६२

बढ़ते हुए हमारे सैनिक, पिछड़ा हमें न पावेंगे

—श्री मैथिलीशरण गुप्त १६३

मैं हूं सेनानी नए भारत का

—श्री मोहन चोपड़ा १६६

अबै बेदुला ना बूढ़ा भा, ना बल खाय गई तरवारि

—श्री रमई काका १६७

जागो हे समाधिस्थ, जागो हे कामदहन

—डा० रमा सिंह १७०

हिमालय के प्रति

—श्री रमेश चन्द्र शाह १७१

चीन तेरे भी जमाने लद गए

—श्री रमेश नारायण तिवारी १७४

दुश्मन के लोहू की प्यासी भारत की तलवार है

—श्री रवि दिवाकर १७६

पृष्ठ

पंजाब के सैनिक के प्रति

—श्री रसिक बिहारी १७८

स्यार सिंह के घर आया है, निश्चय विजय हमारी है

—श्री राजनारायण बिसारिया १७९

हम अपने युग के निर्माता, हर पग में अभियान हमारे

—श्री राजेन्द्र शर्मा १८०

गर्व से ऊंचा उठा इस देश का सिर झुक न जाए

—श्री राजेश दीक्षित १८१

जाग भारत वर्ष के सोए हुए अभिमान

—श्री रामकुमार चतुर्वेदी १८४

जाग रहे हम वीर जवान

—श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' १८६

आज हिमालय ने मांगी है भारत से कुर्बानी

—श्री राम मनोहर त्रिपाठी १८८

हमारे दृढ़ चरण ने बांध डाले हैं महासागर

—श्री रामविलास शर्मा १९०

चीन देश हत्यारा है

—श्री रामस्वरूप 'सिन्दूर' १९२

डोल उठी है धरा !

—श्री रामानन्द दोषी १९३

थाम लो सभाल कर देश की मशाल को

—श्री रामावतार त्यागी १९५

आज तुम्हें तो बलि शीशों की अपनी यहां चढ़ानी होगी

—श्रीमती विद्यावती 'कोकिल' १९६

लाज मां की बचाना तुम्हें है कसम

—श्रीमती विद्यावती मिश्र १९७

हमारा ऊंचा रहे निशान

—श्री विनोद रस्तोगी १९८

हटो चीनियो दूर, हिमालय तुम को खा जाएगा

—श्री विमल चन्द्र 'विमलेश' १९९

पूतन को टेर मातु भारती लगाई है

—श्री विष्णुदत्त मिश्र 'तरंगी' २०१

पृष्ठ

शंकर का यह नेत्र खुला

—श्री विश्वदेव शर्मा २०५

भारत देश हमारा है

—श्री विश्वप्रकाश दीक्षित 'बटुक' २०७

सिपाही देश के ! हिमालय छीन ले !

—श्री वीरेन्द्र मिश्र २०८

बता दे आज चीन को कि जंग है तो जंग है

—श्री शहाब लखनवी २१२

बादलों के पार से हिम पर्वतो ने फिर पुकारा

—डा० शंभुनाथ सिंह २१४

फिर नए राष्ट्र ने भैरव राग गुजाया है

—डा० शिव मंगल सिंह 'सुमन' २१५

करना है या मरना है

—श्री शिव शास्त्री कानोडिया २१७

छोड़ दो और बातें

—कुमारी शेफाली २१९

हम भस्म तुम्हें कर डालेंगे, शोलों के पास नहीं आओ

—श्री शेरजंग गर्ग २२०

हमें नेफा बचाना है, हमे पीकिंग मिटाना है

—श्री शैलेन्द्र कुमार पाठक २२२

स्वतंत्र देश यह, सदा स्वतंत्र ही रहेगा

—श्री शैलेश मटियानी २२५

यह नेफा की भूमि हमारी, यह लद्दाख हमारा है

—श्री श्यामबहादुर सिंह 'नम्र' २२७

मेरे हर बांके जवान की तनी हुई संगीन है

—श्री श्रीनिवास 'श्रीकांत' २२९

मैं सैनिक बन जाऊंगा

—श्रीमती सत्यवती शर्मा २३१

भारत से टकराने वाला मिट्टी में मिल जाएगा

—श्री सरस्वती कुमार 'दीपक' २३२

वतन की आबरू खतरे में है, होशियार हो जाओ !

—श्री साहिर लुधियानवी २३४

पृष्ठ

लुटेरो और चोरो को सजा देने का वक्त आया
—श्री साहिर होशियारपुरी २३५

सीमा के सिपाही के नाम
—श्री सुमनेश जोशी २३६

यहा हर जन बलिदानी है
—श्रीमती सुमित्रा कुमारी सिनहा २३८

नाग के फन को कुचल कर ही दम लेना है
—डा० सुरेशचन्द्र गुप्त २४०

हिमालय मे आ रही पुकार, रहो तैयार, रहो तैयार
—श्री सोहनलाल द्विवेदी २४१

धवल हिमालय म्लान कर रहा तप्त रक्त की धारो से
—श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी' २४३

चल मर्दाने सीना तानें
—डा० हरिवंश राय 'बच्चन' २४६

आज रक्त दान दो ! आज प्राण दान दो !
—डा० हरीश २४७

तूफानो मे जन्म है हम
—श्री हरीश हिमानी २५२

शत्रु को हम नष्ट कर के देश को विकसित करेगे
—श्रीमती हीरा देवी चतुर्वेदी 'मस्त २५४

आभार प्रदर्शन

हम उन सभी कवियो के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रगट करते है, जिन की ओजस्वी रचनाए 'रणभेरी' मे सम्मिलित की गई है ।

हमने श्री गुलाब की कविता "शीश चढ़ादे जो चरणों पर वही उतारे आरती", स्व० गोपाल सिह नेपाली की कविता "चालीस करोडो को हिमालय ने पुकारा", श्री बशीर अहमद 'मयूख' की कविता "कवि कुछ ऐसी तान सुना दे, गूज उठे रणभेरी घर घर", श्री बालस्वरूप 'राही' की कविता "माथो की भेण्ट चढाएगे, फिर मा ने हमे पुकारा है" तथा श्री रवि दिवाकर की कविता "दुश्मन के लोहू की प्यासी भारत की तलवार है" सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश के प्रकाशनों से; श्री प्रकाश अम्बालवी की कविता "तुम पास्बा वतन के, तुम कौम के सहारे", तथा श्री शहाब लखनवी की कविता "बतादे आज चीन को कि जग है, तो जग है" हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी द्वारा प्रकाशित "चीन को चेतावनी" से; श्री कमलाकर की कविता "आन हिमालय की है तुमको शपथ तुम्हे गगा की" तथा श्री सुमनेश जोशी की कविता "सीमा के सिपाही के नाम" प्रभात प्रकाशन मदिर, जयपुर द्वारा प्रकाशित "विजय घोष" से ; श्री बिस्मिल इलाहाबादी की कविता "वतन पर कटने मरने के लिए तय्यार हो जाओ" "प्रसाद", काशी से; श्री चद्रकुमार की कविता "आज न हम मे से कोई भी मा का दूध लजाए रे" "वेकटेश्वर समाचार", बम्बई से; और श्री ओम प्रकाश की कविता "अभी समय है चेत अरे चाऊ माऊ" "जन साहित्य", पटियाला से उद्धृत की है । इस सम्बन्ध मे हम श्री काशीनाथ उपाध्याय 'भ्रमर', सम्पादक "त्रिपथगा", उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ, श्री कृष्ण चन्द्र बेरी, स्वत्वाधिकारी हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, श्री भगवतशरण चतुर्वेदी, सम्पादक "विजय घोष", श्री देवेन्द्र शर्मा शास्त्री, सम्पादक "वेकटेश्वर समाचार", बम्बई, श्री कृष्ण देव प्रसाद गौड, सम्पादक "प्रसाद", वाराणसी, तथा डा० परमानन्द, सम्पादक "जन साहित्य" के प्रति आभार प्रदर्शित करते है, जिन्होने कृपा कर अपने प्रकाशनों से उक्त कविताए उद्धृत करने की अनुमति हमे प्रदान की । स्व० सियाराम शरण जी गुप्त की कविता "जय जय हिन्द, हमारे हिन्द" हम ने राष्ट्र-कवि मैथिली शरण जी गुप्त की अनुमति से इस सग्रह में सम्मिलित की है । उन की इस कृपा के लिए हम आभारी है ।

हम भारत सरकार के पत्र सूचना विभाग के; तथा विकास-विभाग, पजाब के छविकार श्री एस० बी० दुर्गा के प्रति भी आभार प्रकट करना आवश्यक समझते है, जिन्हो ने इस सग्रह की सज्जा के लिए हमें आवश्यक चित्र भिजवाए ।

हरिश्चन्द्र शर्मा,
निदेशक, लोक-सम्पर्क, पजाब ।

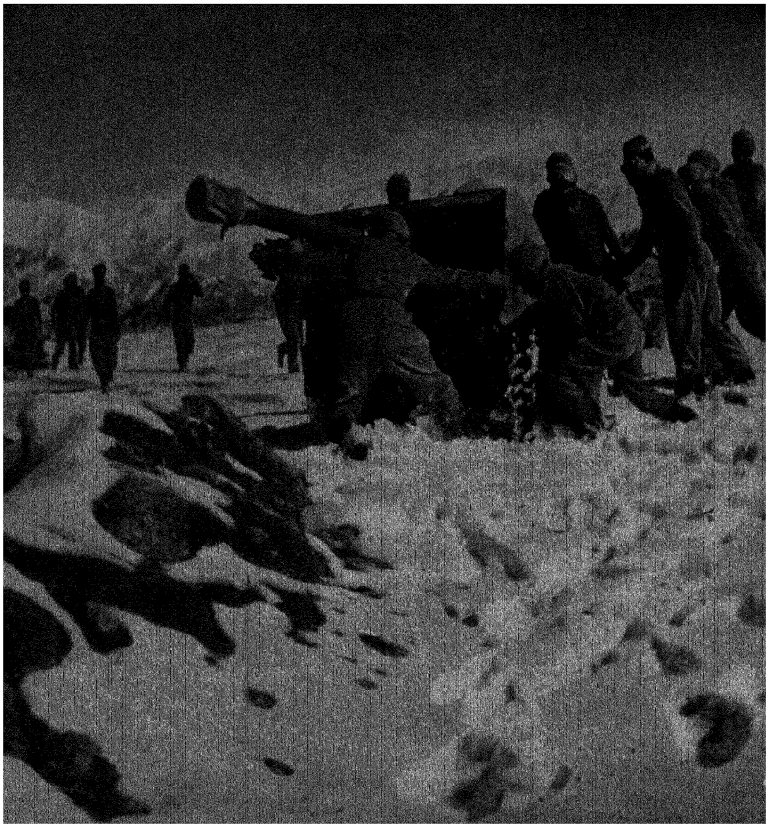

सावधान ! हम समरांगण में आते हैं

तुमने रची मरण से जीवन की हर बार सगाई है !

श्री अंचल

एक बार फिर अन्यायी पर तुमने भुजा उठायी है !

सीमाओं पर घिरे शत्रु को फिर तुमने ललकारा है,
आज तुम्हारे कंठ-कंठ में बलिदानों का नारा है,
ऐसा है इतिहास हमारा, ऐसा देश हमारा है,
यहां न जीता पापी अब तक, धर्मी कभी न हारा है,
फिर दुनियां को यही दिखा देने की बारी आयी है ।
एक बार फिर अन्यायी पर तुम ने भुजा उठाई है !

जब-जब बजा युद्ध का डंका तुमने रक्त बहाया है,
रचे अजेय व्यूह ऐसे, बैरी भय से थर्राया है,
तुमने बारूदों के महलों में अंगार लगाया है,
बिछा फड़कती लाशें तुमने आगे कदम बढ़ाया है,
तुमने रची मरण से जीवन की हर बार सगाई है ।
एक बार फिर अन्यायी पर तुम ने भुजा उठाई है !

ओ वीरों के महाद्वीप, ओ महाशौर्य की संतानो,
विश्व-शांति के ओ विश्वासी, मानवता के जयगानो,
आक्रान्ता अत्याचारी के सर्वनाश के अभियानो,
जननी के हिमवन्त माल की महिमा के ओ आह्वानो,
नरभक्षी हूणों ने बर्बरता की आग लगायी है ।
एक बार फिर अन्यायी पर तुम ने भुजा उठाई है !

खून हमारा ले-लेकर तुम बनो अजय ओ अभयंकर,
हमे यहा से ज्योति तुम्हारी प्रतिक्षण दिखती दीपकर,
आतताइयो को दहलाता रहे तुम्हारा तेज प्रखर,
यह सत्ता का नही, स्वत्व की रक्षा का जयनाद अमर,
आज तुम्ही मे जन-जन के जीवन की ज्योति समायी है।
एक बार फिर अन्यायी पर तुम ने भुजा उठाई है!

तुम सगीनो की नोको पर उगी अमरता के भागी,
महावीर्य के मोये सागर मे बाडव ज्वाला जागी,
मा के चरणो पर अर्पित तुमने जीवन-तृष्णा त्यागी,
कब आजादी के बन्दो ने शोलो मे पनाह माँगी ?
फिर अन्यायी ने स्वदेश सीमा पर घात लगायी है।
एक बार फिर अन्यायी पर तुम ने भुजा उठाई है!

बढो हथेली पर सिर लेकर हम भी पीछे आते है,
विजय-पताका नही झुकेगी यह विश्वास दिलाते है,
घर-घर मे उभरे साहस के ज्वालागिरि अकुलाते है,
क्षुब्ध, छिन्न-मस्तक मा की सौगन्ध तुम्हे पहुँचाते है,
अपनी मुडमाल तुमने जय-श्री पर सदा चढाई है।
एक बार फिर अन्यायी पर तुम ने भुजा उठाई है!

नगपति तुम्हें पुकार रहा है, जागो भारत की तरुणाई

श्री आनन्दनारायण शर्मा

शब्ददान दे चुके बहुत अब रक्तदान की बेला आई !
नगपति तुम्हें पुकार रहा है, जागो भारत की तरुणाई !

आततायियों के दल ने फिर
सीमाओं पर कदम बढ़ाया,
गर्वीले मस्तक को मर्दित
करने का साहस दिखलाया,
हिमशिखरों पर आग लगी है
धधक उठी है सघन बनानी,
लिए रक्त का खप्पर कर में
नाच रही उन्मत्त भवानी;
संगीनें ले खड़ा शत्रु जो करनी है उस की पहुनाई
नगपति तुम्हें पुकार रहा है, जागो भारत की तरुणाई !

यह सीमा-संघर्ष नहीं है,
प्रश्न आज सारे भारत का,
पली सदा जो बलिदानों में
उस आज़ादी की अस्मत का,
आज़ादी पाने से मुश्किल
लू-लपटों से उसे बचाना,
लिए हथेली पर सिर अपना
बढ़कर उसका मोल चुकाना;

आंख निकालो उस दुश्मन की, जिस ने तुम को आंख दिखाई।
नगपति तुम्हें पुकार रहा है, जागो भारत की तरुणाई।

भारत पर आक्रमण न केवल
पावन संस्कृति पर हमला है,
समता, सत्य, न्याय, करुणा को
शत्रु आज रौंदने चला है,
उपकारों का तलवारों की
भाषा में प्रतिदान मिला है,
दुनिया देखे दिया मित्र ने
मैत्री का कैसा बदला है!
मानवता के शांति सदन पर, दानवता की हुई चढ़ाई।
नगपति तुम्हें पुकार रहा है, जागो भारत की तरुणाई।

जागो राम-कृष्ण के वंशज
चन्द्रगुप्त के अमिव्रतधारी,
जागो ओ अशोक के अविजित
प्रबल पराक्रम के अधिकारी,
राणा की दुर्धर्ष वीरता—
और शिवा के कौशल जागो,
शेरशाह अकबर के तेवर,
कुंवर सिंह के भुजबल जागो,
हो प्रतिकार अनय का ऐसा, पांव न फटके फिर अन्यायी।
नगपति तुम्हें पुकार रहा है, जागो भारत की तरुणाई।

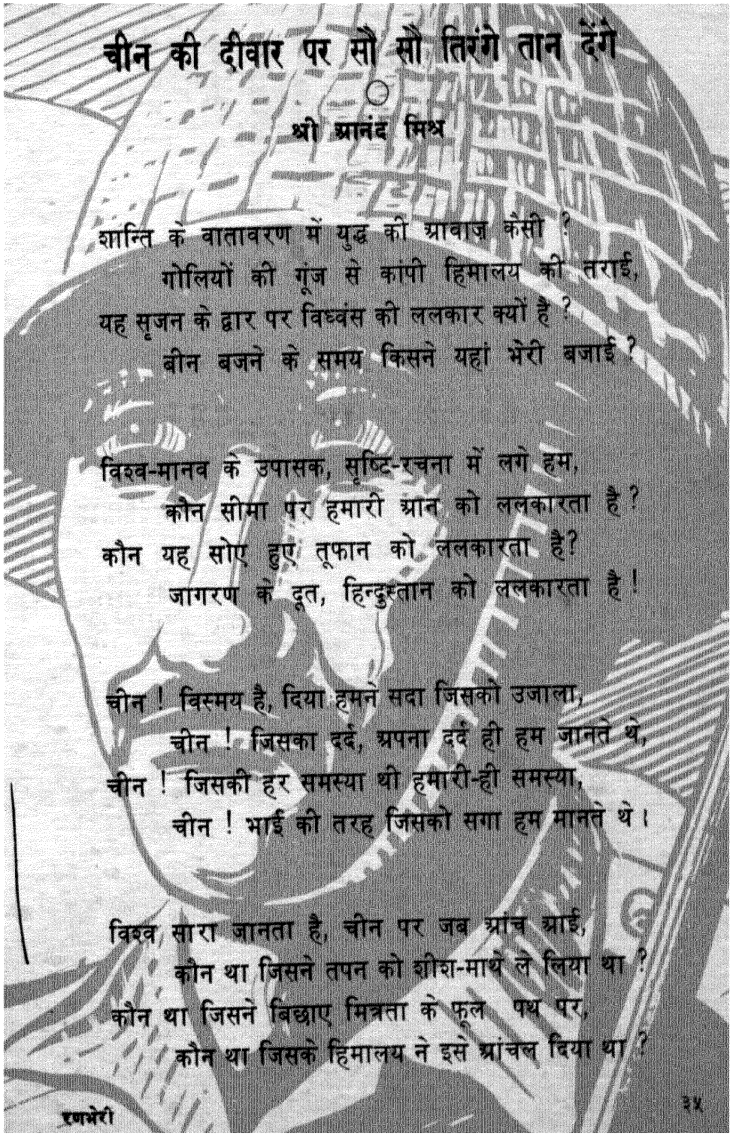

चीन की दीवार पर सौ सौ तिरंगे तान देंगे

श्री आनंद मिश्र

शान्ति के वातावरण में युद्ध की आवाज़ कैसी ?
गोलियों की गूंज से कांपी हिमालय की तराई,
यह सृजन के द्वार पर विध्वंस की ललकार क्यों है ?
बीन बजने के समय किसने यहां भेरी बजाई ?

विश्व-मानव के उपासक, सृष्टि-रचना में लगे हम,
कौन सीमा पर हमारी आन को ललकारता है ?
कौन यह सोए हुए तूफान को ललकारता है?
जागरण के दूत, हिन्दुस्तान को ललकारता है !

चीन ! विस्मय है, दिया हमने सदा जिसको उजाला,
चीन ! जिसका दर्द, अपना दर्द ही हम जानते थे,
चीन ! जिसकी हर समस्या थी हमारी-ही समस्या,
चीन ! भाई की तरह जिसको सगा हम मानते थे।

विश्व सारा जानता है, चीन पर जब आंच आई,
कौन था जिसने तपन को शीश-माथे ले लिया था ?
कौन था जिसने बिछाए मित्रता के फूल पथ पर,
कौन था जिसके हिमालय ने इसे आंचल दिया था ?

और केवल चीन क्या ! इस सृष्टि के पहले चरण-से,
चाहते है हम, सदा फूले-फले ससार सारा,
चाहते है हम कि हर क्यारी बने जग का बगीचा,
मानते है हम कि यह सारी धरा है घर हमारा ।

मानवी-समवेदना के देश भारत के हृदय ने,
एक अपने घर नही, हर द्वार पर दीपक जलाया,
आग चाहे जिस कुटी के जीर्ण-छप्पर मे लगी हो,
आसुओ की धार मे हमने उसे बढकर बुझाया ।

मानवी-समवेदना के देश भारत ने अभी तक,
क्या दिया ससार को ? यह बात कहने की नही है,
धर्म, दर्शन, कर्म, समता, ज्ञान की गगा सनातन,
इस घटा के प्यार की बरसात कहने की नही है ।

स्वार्थ, लिप्सा, भूमि का विस्तार, सत्ता की पिपासा,
कौन-सी यह भूख, भारत की तरफ उगली उठाओ !
कौन-सा यह दम्भ तुमको आज अन्धा कर गया है ?
और हम चुप है कि शायद भोर तक घर लौट जाओ ।

युद्ध मे उतनी घृणा हमको, अमन से प्यार जितना,
हम सृजन की बासुरी की तान को पहचानते है,
किन्तु इतनी बात सुन लेना सजग होकर जमाने !
हम किसी अन्याय के आगे न झुकना जानते है ।

बुद्ध-गांधी-से अहिंसा के व्रती जन्मे यहां, तो--
वीर-नेहरू-सा सिपाही शेर बनकर जागता है,
गर्जना जिसकी उभरते एशिया की गर्जना है,
आज यह संसार सारा धाक जिसकी मानता है।

बूंद-से जापान ने आधी-सदी जिसको डुबाया,
आज भारत का महासागर उसे खलने लगा है ?
तो उठाकर आंख देखो, एक दिल्ली की कहें क्या,
आज सारा देश यह बारूद बन जलने लगा है।

तुम समझते हो कला रण की तुम्हीं बस जानते हो ?
युद्ध का सन्देश भारत के लिए कोई नया है ?
तो बतायें हम तुम्हें, यह भ्रान्ति का परदा उतारो,
व्यूह का भेदन यहां पर गर्भ में सीखा गया है।

खून की होली जिन्हें दिन, रात रागों की दिवाली,
व्योम से पूछो कि जिनकी गर्जनायें सुन चुका है,
आग से खेली जवानी, मौत से जूझा बुढ़ापा,
दांत शेरों के यहां सौ-बार बचपन गिन चुका है।

इस तरह सपना न देखो, पार करना है असम्भव,
तुम बहुत बौने, हिमालय का बहुत ऊंचा शिखर है,
आज भी गाण्डीव की टंकार में उतना वज़न है,
आज भी इस देश की तलवार में उतना ज़हर है।

वे हठी, मानी मरहठे वीरवर उठकर खड़े हैं,
शूर-बलिदानी शिवा-का खड्ग पजों मे दबाए,
और ये रजपूत जिनकी आन दुनिया जानती है,
बिजलिया जिनकी कटारें, वज्र-सा भाला उठाए।

पिल पड़े है तो, न मरकर भी कि जो पीछे हटे हैं,
लाडले 'गोविन्द' के दौड़े कही लेकर दुधारे,
एक चीनी तक न दर्शन को मिलेगा भूमि-भर मे,
कौन-से नक्षत्र जाने पड गए पीछे तुम्हारे ?

खुखरियां लेकर चले ललकारते गुरखे दिवाने,
आयतें पढ़ने लगे है, ये मुहम्मद के बली है,
हम तुम्हें समझा रहे है, आज भी घर लौट जाओ,
रोष की चिनगारियां, देखो ! मशाले बन चलीं है।

दुधमुंहे बच्चे जहां के चुन गए दीवार तक मे,
मुस्कराहट भी न जिनकी छीन पाया था ज़माना,
लाल ऐसे ही हमारी वीर-मिट्टी ने जने हैं,
सिर कटाना ठीक है जिनको, गलत गर्दन झुकाना।

और मा-बहनें हमारी, शक्ति का अवतार जैसे,
देश के सम्मान पर निर्भीक मिटना जानती है,
मुण्डमाला से किए शृंगार दुर्गा बन गईं तो,
खून मेंहदी सिर्फ, ज्वाला सिर्फ उबटन मानती है।

मत समझ लेना कि गंगा में भंवर आते नहीं हैं,
यह जगी है तो समन्दर की तरह लहरा गई है,
मत समझ लेना हिमालय के पहरुए सो रहे हैं,
आज 'भूषण' की कलम मेरे करों में आ गई है।

ये गरजना ही नहीं केवल, बरसना जानते हैं,
ये बढ़े तो मूढ़! 'पीकिंग' को प्रलय का गान देंगे,
ये बढे तो शान्तसागर को तली तक छान देंगे,
चीन की दीवार पर सौ-सौ तिरंगे तान देंगे।

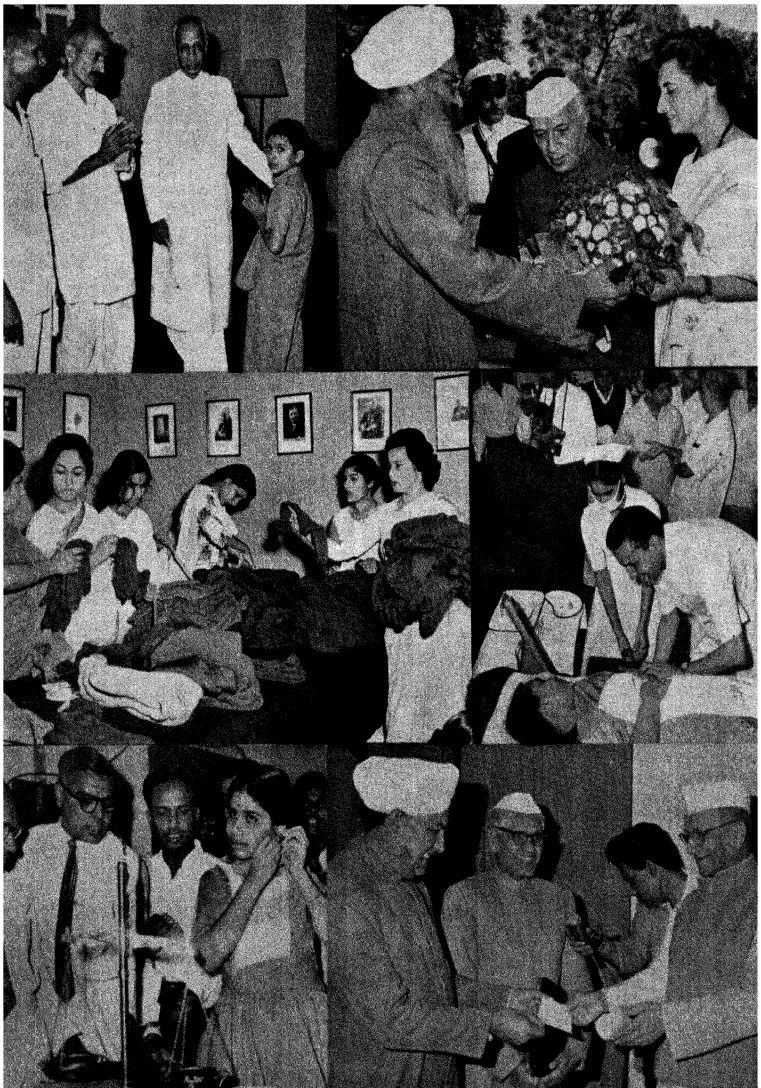

राष्ट्र की पुकार पर देशवासियों में सर्वस्व न्योछावर करने की होड़ लग गई । पंजाब ने रक्षा कोष के लिए ५ करोड़ ७३ लाख रुपए तथा १ लाख ७६ हजार ग्राम स्वर्ण भेण्ट किया ।

झूम-झूम कर आयी पावन वेला है बलिदान की

श्री आरसी प्रसाद सिंह

झूम-झूम कर आयी पावन
वेला है बलिदान की ।
ओ भारत के वीर, लगा दो !
बाजी अपने प्राण की। वेला है बलिदान की ।।

सीमा से ललकार उठी है,
घाटी आज पुकार उठी है।
टकराने दो तुम तलवारें !
शपथ तुम्हे भगवान की ! वेला है बलिदान की ।।

मातृ-भूमि की आन बचाओ !
रणचण्डी की प्यास बुझाओ !
मर-मिट जाओ, अगर जरा भी,
लाज तुम्हे अपमान की ! वेला है बलिदान की ।।

वीर जवाहर है रखवाला,
नटवर राधाकृष्ण निराला ।
राणा और शिवा को सुमरो,
याद करो चौहान की ! वेला है बलिदान की ।।

ओ भारत के वीर! लगा दो बाजी अपने प्राण की ।
वेला है बलिदान की, वेला है बलिदान की ।।

दान्त तोड़ कर अजगर के अब करना बंद पिटारा

श्री इंद्रजीत सिंह 'तुलसी'

पहरेदार हिमालय जख्मी होकर आज पुकारा,
होशियार हो ! वीर सिपाही तू ही एक सहारा !

जोर लगा दे सारा,
जागे देश दुलारा ।
जीते देश हमारा ।।

तेग बहादुर की गरदन से फूटे रक्त फुआरे ह,
चौक चादनी की चौखट तक आ पहुचे अधियारे है,
हिमगिरियो के अग-अग मे धधक रहे अगारे ह,
शिवशकर की जटा-जटा से बहे रुधिर की धारा ।

शीश हथेली रख के निकलो आखिर जीत हमारी है,
हमे कूद जाना होगा यदि आग का दरिया जारी है,
कितनी बार बियाहा इसको फिर भी मौत कुआरी है,
चला ब्याहने आज दुलहनियाँ अपना इश्क कुवारा ।

मरहट्ठे, रजपूत, पजाबी लडना अपनी आदत है,
नरमुडो की माला से ही करनी आज इबादत है,
गुरु गोविन्द के बेटो ने फिर पानी आज शहादत है,
शीश कटा कर नाच भागडा बाके सिख सरदारा ।

तेरे ऊंचे मन्दिर के यह किसने कलश उतारे हैं,
गिरजा के गिरवाने को यह किसने हाथ पसारे हैं,
मस्जिद के हैं गुम्बद घायल, जख्मी गुरु के द्वारे हैं,
खबरदार ! न बचने पाए गौतम का हत्यारा ।

दुनिया के कुल पर्वत लेकर वजन करें कुर्बानी का,
फिर भी पलडा भारी होगा, अपनी जोश-जवानी का,
अक्षर-अक्षर बोल रहा है अपनी अमर कहानी का,
युग-युग के इतिहासो का है हमने रूप निखारा ।

हमने आज बुजुर्गो की रूहो को पास बुलाया है,
वह राणा प्रताप चला, झडा उस ने लहराया है,
हल्दीघाटी के चेहरे पर सुर्खी मलकर आया है,
हैदर, टीपू-सुल्तान के निकले 'अल्ला-हू' का नारा ।

वह कवियो की कलम चली है रूप धार तलवारो का,
तूफानो मे नौका डाली किसको फिक्र किनारो का,
शीश कटाने की वेला मे किसको होश नजारो का,
फूलो के होठो से निकला शबनम और शरारा ।

साम्राज्य का हर-इक हल्ला पहले हाथ पछाडेगे,
हमलाआवर की लाशो पर नरसिंघे चिंघाडेगे,
दुश्मन के सीने मे करके छेद तिरगा गाडेगे,
दात तोडकर अजगर के अब करना बन्द पिटारा ।।

जोर लगा दे सारा, जागे देश दुलारा । जीते देश हमारा ।।

चलो चीन पर करें चढ़ाई

श्री ईश्वर चन्द्र पाण्डेय 'ईश'

चलो चीन पर करें चढ़ाई !
कोटि कोटि बेटो की मा ने, सुनो सुनो आवाज लगाई ।

दुश्मन को हम मजा चखा दे, दूध छठी का याद दिला दे
आज अहिंसा को हिंसा ने
खून-रंगी चूनर पहनाई ।

हुई अशान्त शाँति की देवी, क्लान्त हुआ मानवता सेवी
दुष्ट दुष्टता बिना न माने
नीति यही हमने अपनाई ।

आज प्रेम भी मर्माहत हो, व्याकुल हो अति ही विचलित हो
पी कर विष विश्वासघात का
आखो मे भर रहा ललाई ।

हम सब है जलते अगारे, चीनी है कागजी गुबारे
उन्हे जला कर फूक-फाक कर
लौटेगे यह कसम उठाई ।

विजय सत्यता की होती है, हार कुटिलता की होती है
'ईश' कहे यह रामादल की
रावण से ठन गई लड़ाई ।

भड़क उठे हैं, मंदिर, मस्जिद, गरज उठा गुरुद्वारा है

श्री उदय भानु 'हंस'

दिन आया बलिदान का,
लोभ न करना प्राण का,
उठो जवानो कूच करो रण का बज रहा नगारा है,
दुष्ट चीनियों ने भारत के पौरुष को ललकारा है ।

तुम को अपने उपवन की रक्षा करनी है आग से,
सावधान रहना है हर क्षण उस ज़हरीले नाग से ।
तीखी छुरी बगल में उसके, मुंह में रहता राम है,
सारी दुनिया में कड़वा है फिर भी 'चीनी' नाम है ।
पड़ो न उस की चाल में,
कुछ काला है दाल में,
'हिंदी-चीनी भाई-भाई', उस का झूठा नारा है,
वह बौद्धों का वंशज है, पर गौतम का हत्यारा है ।

याद करो तुम वीर शिवा, राणा प्रताप की आन को,
तांत्या टोपे, लक्ष्मी बाई और टीपू सुलतान को ।
तुम सुभाष तुम भगत सिंह के सपनों की तसवीर हो,
सवा लाख के साथ अकेले लड़ने वाले वीर हो ।
हिंदू सिख ईसाइयो,
जागो मुस्लिम भाइयो,
आज तुम्हारे नील गगन पर छाया 'लाल सितारा' है,
भड़क उठे हैं मन्दिर मस्जिद, गरज उठा गुरुद्वारा है ।

पालन आज जरूरी है नेताओ के आदेश का,
जो अनुशासन नही मानता, वह दुश्मन है देश का।
तुम स्वार्थी भ्रष्टाचारी घरफोडो को फटकार दो,
दुशमन से पहले उन गद्दारो को गोली मार दो।
सुनो क्राति के राहियो,
बाके वीर सिपाहियो,
शक्ति एकता की सकट मे सब से बडा सहारा है,
भीषण तूफानो मे भी मिल जाना स्वय किनारा है।

आज समय है माग कर रहा हर मजदूर किसान से,
अधिक अनाज उगाना है अब तुम्हे खेत-खलिहान से।
कवियो ! नभ से उतर पडो, लो धरती का आधार भी,
सिर्फ लेखनी नही चलानी है तुम को तलवार भी।
तन मन धन सब वार दो,
मा का कर्ज उतार दो,
तुम्हे देख मा की छाती से बही दूध की धारा है,
तुम हो भारतवर्ष देश के, भारतवर्ष तुम्हारा है।

आज देश के सकट मे सब भारतवासी एक है,
क्या पजाबी, क्या बगाली, क्या मदरासी एक है।
काले बादल बिखर रहे है निकल रही फिर धूप है,
ककर ककर भी अब शकर प्रलयकर का रूप है।
कह दो उस नादान से,
रहे दूर हिमवान से,
सीमा के उन अमर शहीदो से मिल चुका इशारा है,
पाव बढा कर देख लिया, यह बर्फ नही, अगारा है। ○

शांति में शिव हैं हम, अशांति में प्रचण्ड रुद्र

श्री उदयशंकर भट्ट

यद्यपि हम सत्य के, अहिंसा के,
उदारता के, दया और क्षमा के,
सच्चे ज्ञान-साधक हैं, किसी को नही बाधक हैं ।
यद्यपि हम जीने के,
जीवनीय तत्वों के,
सत्य के महत्वों के नायक, अनुगायक हैं,
यद्यपि हम वंशज हैं निज अस्थि-दाता के
दधीचि के, दिलीप के, शिवि से महीप के,
किन्तु हैं अकारण दुष्ट खल-दल के त्रासक हम
वैरी के विनाशक हम ।
काल है क्रूर के, मौत के विधाता हम,
मौत लिए फिरते हैं मुट्ठी में खिलौने सी,
हम से बैर ठानना,
हमारी भूमि छीनना,
हम को दबाना, गुर्राना, दिखलाना बल,
सुप्त सिह को जगाना है,
मौत को बुलाना है ।
हम अपरिहार्य है
हम हैं अजय अरि,
मृत्यु है हमारे लिए
'मात्र वस्त्र-परिवर्तन'
परिवर्तन 'बचपन का जवानी में'

हम नही डरते है
हम नही मरते है,
मृत्यु नही हम को है,
आत्मा अमर है, अमर के गीत गायक हम,
जीवन के धाता हम
विधाता निज भाग्य के है,
मृत्यु सग खेलते, किसी से नही हारते,
हम अनादि और हम अनन्त अविनाशी है,
आत्म-विश्वासी,
कर्म-ज्ञान के विलासी,
पतझड मे बसन्त प्राणवन्त कुसुमाकर है,
तम मे दिवाकर,
धूप अधेरी के निशाकर है,
मेघो मे गर्जन है,
बडवा है सागर के,
आँधी मे उपजे हम--
वज्र प्राण-वाहक है,
क्रोध है हमारा, काल--
शम्भु-व्याल फूत्कार,
हाड मास वाले पर, वज्रदेह वाले हम,
सोतो को जगाया है, देखो परिणाम अब
देखो, नि शेष नाम,
शाति मे शिव है हम,
अशान्ति मे प्रचण्ड रुद्र,
क्रुद्ध विषपायी,
मृत्यु-भक्षी हम भारतीय ।○

बन-मानस बौनों ने बढ़कर शेरों को ललकारा है

श्री ऋषि पटियालवी

मानसरोवर और हिमालय पर संकट के साये हैं,
उठ कर पीली धरती से कुछ काले बादल छाए हैं।

बन-मानस बौनों ने बढ़कर शेरों को ललकारा है,
धोके से विश्वासघात का छुरा पीठ में मारा है।

आग उगल देंगे हम उन पर भारत की सीमाओं से,
ज्वालाएं उट्ठेंगी शीतल गंगा की धाराओं से।

क्यों साहस करते हैं दानव ज्वाला में जल जाने का,
काल बुलावा बन जाएगा साधन पांव बढ़ाने का।

जाग उठी है राष्ट्र-चेतना रणबांके मरदानों में,
विजय भावना बिजली बन कर दौड़ गई है प्राणों में।

पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण कोना कोना जाग उठा,
भारत का हर बच्चा मानो बन कर बन की आग उठा।

वहीं बनेगी चिता चीन की जहां जताया है अधिकार,
गूंज उठी है सीमाओं पर भारती वीरों की ललकार।

बलशाली के लिए जगत में कुछ भी तो प्रतिकूल नहीं

श्री ओम प्रकाश आनंद

पतझर की घबराहट मे ही झर जाए वह फूल नही ।

चचल नदिया नही पूछती, अपना राह किनारो से,
झझा का झोका कब रुकता पर्वत की मनुहारो से ।
ताडव को गति मे जो बाधे ऐसा कोई दाव कहो,
जो बहाव के उलट चले उसको ही सच्ची नाव कहो ।
जो साधारण झोको मे ही टूट रहे मस्तूल नही,
लहरो की टकराहट से ही गिर जाए वह कूल नही ।

कोमल किरण सवेरे की जब आ जाती है तीर पर,
अपना राह बना लेती गहरा अन्धेरा चीर कर ।
नन्हा अकुर उग आता धरती की छाती फाड कर,
नन्हे-नन्हे डग भरना सैलानी चढे पहाड पर ।
बलशाली के लिए जगत मे कुछ भी तो प्रतिकूल नही,
पतझर की घबराहट से ही झर जाए वह फूल नही ।

सध्या के सुन्दर रगो पर रजनी को अभिमान कहा,
अनखीले रेतीले स्थल को बादल का सम्मान कहा ।
मत्तशलभ के जल जाने की दीपक को परवाह नही,
मजिल तक बढने वाले की रुकती कोई राह नही ।
ठोकर खाकर भी सिर पर जो चढ न सके वह धूल नही,
पतझर की घबराहट से ही झर जाए वह फूल नही ।

अभी समय है चेत अरे चाऊ-माऊ

श्री ओम प्रकाश वर्मा

अभी समय है चेत अरे चाऊ-माऊ, फिर ऐसा मौका शायद हाथ न आयेगा।

जिनका सर रहता है हर वक्त हथेली पर,
ये राजस्थानी शेर बांके मर्दाने हैं।
जिनमें टकरा कर गोली टुकड़े हो जाती,
पंजाबी छाती फौलादी चट्टानें हैं।
फिर प्रताप, गोविन्द, भगतसिंह जाग गये,
तो दुनिया भर में महा प्रलय मच जायेगा॥

अभी राम के वंशज खड़े अयोध्या में,
धरती को निशिचर दल से मुक्त कराने को।
मथुरा का चक्र सुदर्शन फिर चल सकता है,
दुःशासन, दुर्योधन का दर्प मिटाने को।
सेल्युकस की हरकत का मजा चखाने को,
हर पटना वासी चंद्रगुप्त बन जायेगा॥

है असम, असम के लोग नहीं रखते सानी,
नागाओं को है नाज निशंक जवानी पर।
कितने सुभाष बंगाल अभी, दे सकता है,
गर्वित दक्षिण टीपू की अमर कहानी पर।
फिर कहीं भड़क उट्ठा मरहट्ठी खून अगर,
'चव्हाण' शिवा का रूप स्वयं बन जायेगा॥

फिर आज फतेहगढ की दीवारे बोल उठी,
लाखो अजीत जोरावर बलि हो जायेगे ।
फिर तोड चीन के चक्रव्यूह के दरवाजे,
लाखो अभिमन्यु पेकिग तक घुस जायेगे ।
भारत के बच्चे बडे हठी यदि बिगड गये,
किसकी हिम्मत जो इनसे आख मिलायेगा ।।

जा लौट ! अगर भारत की नारी जाग उठी,
लक्ष्मीबाई का क्रोध न रुकने पायेगा ।
जब कदम कदम पर दुर्गा गर्दन मागेगी,
छोटे-छोटे पावो मे भाग न पायेगा ।
जब गगाजल की तरफ बढाया कदम अगर,
तो चीन तुम्हारा चीनी सा गल जायेगा ।।

सिर चढा-चढा आजादी के दीवानो ने,
जो उजड गया था फिर से बाग लगाया है ।
इस शान्त तपोवन मे उत्पात मचाने को,
रावण साधू का वेश बनाकर आया है ।
मत पचवटी मे घुसने की कर नादानी,
यह लक्ष्मण-रेखा पार न कर, पछतायेगा ।।

अभी समय है चेत अरे चाऊ-माऊ,
फिर ऐसा मौका शायद हाथ न आएगा ।

रोप अंगदी चरण युद्ध में, प्रभु को भी ललकार लगाएं

डा० कन्हैयालाल सहल

कभी-कभी उसका यौवन-शिशु
मचल-मचल उठता था चंचल
"मरण-महोत्सव व्यर्थ तुम्हारा जीवन का सुख भोगो अविचल।"

कुल की मर्यादा तब आकर
उस को निज कर्तव्य बताती
भांवर लेते वेदी से भी अश्व-पीठ का पथ दिखलाती।

चलता-फिरता स्तम्भ विजय का
अगणित प्राणों का जीवन-धन
कभी धराशायी होता था रो उठते तब कोटि-कोटि मन!

जो मृत्यु-मुकुट सिर पर रख कर
भुज-पाश काल से भरता था
गिरिराज-सरिस जिस की गरिमा धरती का कण-कण धरता था।

जब था यह नभ गिरने लगता
वह अपना स्कन्ध लगा देता
उसका यह अनुपम शौर्य सैन्य में जीवन-ज्योति जगा देता।

रोप अंगदी चरण युद्ध में प्रभु को भी ललकार लगाता—
"अगर भगाना हाथ ईश के देखूं कैसे मुझे भगाता!"

आन हिमालय की है तुमको, शपथ तुम्हें गंगा की

श्री कमलाकर

आज शत्रु की रक्तधार से हिमगिरि को नहलाओ,
महाकाल की मुण्डमाल में चीनी मुण्ड चढाओ ।

पचशील की और शाति की बाते बहुत भली है,
पर वे क्या समझे जो बिल्कुल जाहिल है, जगली है,
भाषा नही अहिसा की समझे खूखार दरिदे—
प्रलयकरी भवानी का कुछ चमत्कार दिखलाओ ।

हिन्द सपूतो उठो दृष्टि डालो निज गौरव-धन पर,
अगुलि पर गिरिराज उठाया नचे नाग के फन पर,
अरे तुम्ही हो वे कि जिन्होने अनगिन दैत्य पछाडे,
नये नये रावण कसो को फिर यमपुर पहुचाओ ।

कितनी बार मुहम्मद गौरी तुम से ही हारा था,
और सिकन्दर को तुम ने ही पुरु बन ललकारा था,
अस्सी घावो के गहनो मे सज कर तुम्ही लडे थे,
बलि की बेला आई फिर मे जूझो कीर्ति कमाओ ।

बापू की आत्मा पुकारती आजादी मत खोना,
भामाशाह स्वर्ग से कहते दे-दो सारा सोना,
बढकर मारो दुश्मन को कहती झासी की रानी,
कहते शिवा, प्रताप बैरियो पर बिजलिया गिराओ ।

भगत सिंह कह रहा वतन पर मर जाओ हँस हँस कर,
"युद्ध करो" गीता कहती "तुम आत्मा हो अजरामर,"
आन हिमालय की है तुम को शपथ तुम्हें गगा की,
वीर जवानो उठो शत्रु पर प्रलय मेघ बन छाओ।

आज चीन ने फौजी ठोकर दी है वेद-ऋचा पर,
रे अधर्म ने हमला बोला है गंगा-यमुना पर,
संकट आया पुरी, अवध पर, वृन्दावन, काशी पर,
फिर गांडीव उठाओ अरि पर अंगारे बरसाओ।

क्या लद्दाख और नेफा क्या, बढ़कर शौर्य दिखाओ,
चीन-भीत तक दुष्ट चीनियों को तुम मार भगाओ,
सिंहनाद कर उठो वज्र बन कर टूटो दुश्मन पर,
अरिदल हाहाकार कर उठे, वह संग्राम मचाओ।

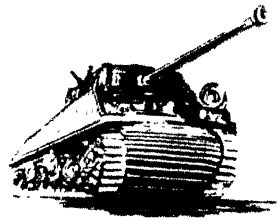

ओ भारत मां के लाल उठो !

श्री कुलदीप 'सिन्धु'

यह न्याय नही, ले चला हमारा गेद छीन कलिकाल ! ——उठो !
घनश्याम उठो ! गोपाल उठो ! ओ भारत मा के लाल, उठो !
कर मे ले भाले-ढाल, उठो ! अन्यायी का बन काल, उठो !
भारत के उन्नत भाल, उठो ! ओ भारत मा के लाल, उठो !

हमको मुस्काता हृष्ट-पुष्ट लख,
और जान बेखबर, चीन,
इस क्रीडा मे बन कर बाधा,
ले चला हमारा गेद छीन,
पर तुम भी फेको बासुरिया,
ले चलो तमचे तोप बीन,
दिखला दो सुत नर्रासहो के,
हे नही अबल, हे नही दीन !
अपनी धरती को छीन, चीन
को देगे तुरत निकाल, उठो !
मत देना अवसर टाल, उठो !
ओ भारत मा क लाल, उठो !

यह भोला भूल किधर आया
क्या धोखा वशी के स्वर मे ?
वह समझ रहा गोपाल-बालको
को नट और कलदर से

तुम खेल दिखा दो नए, किन्तु,
उसको निज धनुष और शर से
मरघट की राह दिखावो गर्दन
थाम सबल अपने कर से !
ओ मधुसूदन ! ओ कंस-दमन ! !
दुश्मन की खींचो खाल, उठो !
फिर चलो शूर की चाल, उठो !
ओ भारत मां के लाल, उठो !

परिवार ताड़का का उद्धत
चीनी दानव का धार वेश
उत्पात मचाता बढ़ आया
दूषित करने फिर आर्य देश
मुनि विश्वामित्र पुकार रहे,
ओ राम-लखन के वंश शेष !
बन वज्र दानवों पर टूटो
चल सके न उनकी तनिक पेश !
करने को यज्ञ सफल मुनि का,
दशरथ के बांके बाल, उठो !
लेकर जंगी स्वर ताल, उठो !
ओ भारत मां के लाल, उठो !
माता पर छाया कष्ट-क्लेश
ओ माता के प्रतिपाल, उठो !
शोणित का लिए गुलाल, उठो !
जननी के काटो जाल, उठो !
ओ भारत मां के लाल, उठो ! ○

शिव को बुलाओ रे ! ताण्डव रचाओ रे !!

श्री कृष्ण कुमार शर्मा

सीमा की ओर चलो,
सीमा पे शोर है,
उमडा घन-घोर है,
आधी चलाओ रे,
तूफान लाओ रे !
बिजली गिराओ रे !
सीमा की ओर चलो !
माऊ की ताकत का
भालू नकेल दो,
नेफा क्या तिब्बत मे
बाहर धकेल दो ।
शिव को बुलाओ रे,
ताडव रचाओ रे !
सीमा की ओर चलो !
देश का सवाल यह,
आप का सवाल है,
आन का सवाल है,
मान का सवाल है ।
अपने जवानो की
रग-रग में खून है,
उमड़ा जनून है,
ऊची ललकार कर,
दुश्मन को मार कर,
मिल-जुल के खून की
होली मनाओ रे !
सीमा की ओर चलो !
राघव का देश यह
अर्जुन का देश यह,
चन्द्रगुप्त मौर्य चाणक्य
का देश यह ।
वीरो के देश की
सीमा के शत्रु को
गोली से दाग दो,
गोलो की आग दो !
सीमा की ओर चलो !
जीतेगे हम ही कि
हम है सचाई पे,
हर इक लड़ाई मे
जीती सचाई है ।
दुश्मन की चाल को,
ताकत से मोड़ दो,
रुख है जो इस तरफ
उस रुख को तोड़ दो !
सीमा की ओर चलो !

वतन पर अब तो नकदे जां लुटा देने का वक्त आया

○

बाबा कृष्ण गोपाल 'मग़मूम'

वतन की हद से दुश्मन को भगा देने का वक्त आया,
जवानो ! कुव्वते-बाज़ू दिखा देने का वक्त आया ।

अगर दुश्मन हमें कमज़ोर समझा तो ग़लत समझा,
रफ़ीको ! अब ग़रूर इसका मिटा देने का वक्त आया ।

सरे-मैदां सफ़े-दुश्मन पे जो बिजली गिराती थी,
उसी तलवार के जौहर दिखा देने का वक्त आया ।

हमारा दोस्त बन कर खुद हमीं से की दग़ा इसने,
इसे इस जुर्म की आखिर सज़ा देने का वक्त आया ।

जहां में इत्तेहादे बाहमीं ताकत सी ताकत है,
हमाँ-हँगी-ओ-यक-जहती दिखा देने का वक्त आया ।

ज़रो-सीमो-गोहर तो हैं बहुत अदना से नज़राने,
वतन पर अब तो नकदे-जां लुटा देने का वक्त आया ।

बहर कीमत बचाना है हमें अकदारे इंसानी,
हिमाला की बलन्दी से सदा देने का वक्त आया ।

वतन के ज़र्रे ज़र्रे की हिफ़ाज़त के लिये यारो !
लहू का कतरा-कतरा अब बहा देने का वक्त आया !

वतन की आन पर कुर्बान हो जाना है हँस-हँस कर,
वतन को आज यह कौले-वफ़ा देने का वक्त आया ।

न छोड़े थे, न छोड़े हैं, न छोड़ेगें उसूल अपने,
इन्हीं पर जान की बाज़ी लगा देने का वक्त आया ।

अमल की दौड़ में 'मग़मूम' ! अब साबित कदम रह कर,
जो हम कहते हैं वो कर के दिखा देने का वक्त आया । ○

मां, मेरे पूर्वजों की सनातन मां

श्री कृष्ण नन्दन 'पीयूष'

ओ मेरी मा,
मेरी ही मा नही
मेरे बाप-दादो की,
उन के भी पुरखो की सनातन मा !
मै निर्धन हू ।
मेरे पास सोना नही ,
मेरे घर का भरा अन्न मे कोई कोना नही
पत्नी के तन पर पैबन्द लगी साडी है,
गले मे न लाकेट है,
कान मे बाली नही, नाक मे नगीना नही,
बैंक मे बैलेन्स नही है मेरा,
मै ममिजीवी सिपाही जो ठहरा,
लिख कर ही पेट भरना हू !
दूध के लिए जब बच्चे रोते है,
पूस मे भी फूस के घर मे आकाश ओढ सोता हू !
सोच रहा हू
आज देश पर जब कल के अफीमची चीनियो ने--
आक्रमण कर दिया है,
मेरा नेहरू देशवासियो को आवाज लगा रहा है,
मै अपनी एक मात्र पूजी,
अपनी कलम तुम्हे अर्पित कर रहा हू ।

बलि के पथ पर चलने वालो ! मेघों सा हुँकार करो !

श्री केदार नाथ मिश्र 'प्रभात'

बिगुल बजा, जल उठे दीप, तूफानों में पलनेवाले,
बलि का पथ पहचाना था, चल पड़े चमक चलने वाले:
भ्रम था, विभ्रम था यहां शांति बसती है हरे दुकूलों में,
वह संकेत उधर करती शोणित-सरिता के कूलों में;
शांति चाहते तो शोणित-सरिता की लहरें पार करो।
फूलों के बदले शूलों से जीवन का शृंगार करो ।।

बिगुल बजा, जल उठे दीप, बलि की तैयारी रुके नहीं,
झुकनेवाले झुकें, तुम्हारा मस्तक किंचित् झुके नहीं;
इस बलिदानी बेला में लुकना कैसा, झुकना कैसा,
झूठा मोह मिटा तो फिर जय-यात्रा में रुकना कैसा ?
सत्य सामने खड़ा बिखेरे ज्वाला-कण स्वीकार करो।
अंगारों को चुनो, उन्हीं से जीवन का शृंगार करो ।।

इस अभियानी वेला में व्यवधान न कोई आने दो,
लक्ष-लक्ष बढ़ रहे वीर प्राणों की भेंट चढ़ाने दो;
यह पवित्र बलिदान, रक्त से फूटेगी जो चिनगारी,
पीकर उसका तेज खिल उठेगी भविष्य की फुलवारी;
बलि के पथ पर चलने वालो ! मेघों-सा हुंकार करो।
आज शक्ति की वह्नि-शिखा से जीवन का शृंगार करो ।।

अंधकार मानव-मूल्यो का किस युग मे उपमान हुआ,
किस युग मे अभिशाप मनुज के लिए मधुर वरदान हुआ,
विष विष ही है, अमृत नही , वह मधुका भी पर्याय नही,
अधकार की पुस्तक मे आलोक-लिखित अध्याय नही,
अनल-कणो से, ज्वलन-कणो मे दीप्त मरण-त्योहार करो।
ओ सकल्पी ! अगुजाल्गे जीवन का शृगार करो ।।

अणु-परमाणु मागते तुम मे , शीश दान देना होगा,
जलावर्त्त मे निर्भय अपना पोत तुम्हे खेना होगा,
नियति तुम्हारे लिए चिह्न लेकर विराम का जहा मिले,
वही तुम्हारी गति का गौरव गरज उठे, ससार हिले,
परिवर्तित आलात-चक्र मे शैल-शृग दुष्पार करो ।
ज्वालामुखियो की ज्वाला मे जीवन का शृगार करो ।।

त्विषा तुम्हारी ही तारो मे उन्हे निहार रहे हो क्यो ?
तुम्ही मरुत्पथ के निनाद, फिर उसे पुकार रहे हो क्यो ?
झझा तुम्ही झकोरो की फिर क्यो कर आज प्रतीक्षा है ?
तुम्ही तेज वह जिमने रवि को दी जलनेकी दीक्षा है,
बडवानल के फणपर बैठो मथित सिधु अपार करो ।
आज प्रलयकी मुस्काहट से जीवन का शृगार करो ।।

महाज्वार जब बन जाती शोणित की लहरे मतवाली,
रक्त, रक्त, सब ओर रक्त, सब ओर रक्त की ही लाली,
सधिकाल तब भीख मागने हाथ पसारे आता है,
महाशक्ति के चरणो मे श्रद्धासे शीश झुकाता है,
बलिके पथ पर बढो और बलकी दिनरात पुकार करो !
बलसे, बलि की चिनगारी से जीवन का शृगार करो ! ! ○

मुझे नींद नहीं आती !

श्री कैलाश बाजपेयी

मेरा आकाश छोटा हो गया है
मुझे नींद नहीं आती !
कहां हो तुम ?
इस विस्तृत परिवार के धड़कते सदस्यो !
मैं तुम्हें आवाज़ देता हूं,
मेरा आकाश छोटा हो गया है
मुझे नींद नहीं आती !

यह मेरे माथे पर जो
चोट का निशान है
यह मेरी मां के घायल मन की पहचान है
बर्फ का कम्बल लपेटे
इस पेंचदार खाई में
मैं टूटे पंख सा भटकता हूं
मेरे नीचे अनय की कीचड़ है
और शीश पर
बर्बर इतिहास की ओछी चट्टान है !
कहां हो तुम ?
इस भरे-पूर उद्यान के महकते वृक्षो !
क्या सचमुच मेरा स्वर
तुम तक पहुँचता है

मैं तुम्हे आवाज देता हू--
मेरा आकाश छोटा हो गया है
मुझे नीद नही आती !

तुम , जिनकी आखो मे शक्वाकार रोशनी निकलती है ।
तुम , हवा जिन मे दो कदम पीछे चलती है ।
तुम , जो धरती मे ऊपर कुछ ऊपर रहते हो ।
तुम , जो तरुणाई के चौडे राजमार्ग पर चक्राकार बहते हो ।
तुम , जिन मे पूर्व कभी सूर्य नही डूबता ।
तुम, जिन मे जीवन कभी नही ऊबता ।
पार्क की बेंचो, सडको, फुटपाथो पर--
क्लबो, नृत्यघरो या
समुद्री तटो पर--
जहा कही हो तुम
मैं तुम्हे आवाज देता हू
मेरा आकाश छोटा हो गया है
मुझे नीद नही आती !

सुनो, सुनो !
मृत्यु मे भी सौन्दर्य होता है
लाशे भी आकर्षित करती ह ।
एक प्यास रक्त मे भी बुझती है
गनो मे भी सगीत होता है ।
कालिदास के श्लोक और
नानक की वाणी
गालिब की गजले--

सोहनी महिवाल की कहानी
सूर के पद और शंकर के दर्शन
ढोला-मारू और
रवीन्द्र के गुंजन ---
इन सब की रक्षा के लिए
मैं तुम्हें आवाज़ देता हूं !

अविवाहित रह जाने दो बहनों को
अन्धी हो जाने दो राधा को
सुनो, सुनो !
यह सब कल के लिए छोड़ दो--
नीचे से ऊपर तक युद्ध को
नहीं, नहीं--आवश्यक बुराई को ओढ़ लो !

कहां हो तुम ?
इस विस्तृत परिवार के धड़कते युवको !

कहां हो तुम ?
इस भरे पूरे उद्यान के महकते वृक्षो !

क्या सचमुच मेरा स्वर तुम तक पहुंचता है
मैं तुम्हें दो बार आवाज़ नहीं दूंगा---
सुनो,
मेरा आकाश छोटा हो गया है
मुझे नींद नहीं आती !

○

जगो, उठो, चलो, बढ़ो, लिए कलम कराल सी

श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन'

उठो स्वदेश के लिए, बने कराल काल तुम,
उठो स्वदेश के लिए, बने विशाल ढाल तुम !

उठो हिमाद्रि शृग से, तुम्हे प्रजा पुकारती,
उठो प्रशस्त पन्थ पर, बढो सुबुद्ध भारती !

जगो विराट देश के, तरुण तुम्हे निहारते,
जगो अचल मचल विकल करुण तुम्हे दुलारते ।

बढो नई जवानिया, सजी कि शीश झुक गए,
बढो मिली कहानिया, कि प्रेम गीत रुक गए ।

चलो कि आज स्वत्व का, समर तुम्हे पुकारता,
चलो कि देश का तुम्हे, सुमन सुमन निहारता ।

जगो, उठो, चलो , बढो, लिए कलम कराल सी,
अरे जो शत्रु-सैन्य को, डसे तुरन्त व्याल सी !

उठो स्वदेश के लिए, बने कराल काल तुम ।
उठो स्वदेश के लिए, बने विशाल ढाल तुम ।

हिन्द का जवान, लाख लाख के समान है

श्री गिरिधर गोपाल

हिंद का जवान, लाख लाख के समान है ।

आंधियों से, बिजलियों-बवंडरों से यह बना,
बाढ़ से अंगार से समंदरों से यह बना,
देश की कमान से
चला अमोघ बाण है ।

यह चला कि ज़लज़लों का एक काफिला चला,
शक्ति-शौर्य जय-विजय का एक सिलसिला चला
यह हमारे रक्त का
प्रलयभरा उफान है ।

यह हँसा बहार मुस्करा उठी, सहर हुई,
कि भौं तनी गई सो मौत दुश्मनों के सर हुई,
हिंद का झुके न जो
बलंद वह निशान है ।

हमको इस पै नाज़ है, सपूत यह महान है,
इसकी गोद में खिला गुलाब सा जहान है,
यह हमारी आन-बान-
शान-स्वाभिमान है ।

युद्ध की चुनौती स्वीकार है

श्री गिरिजा कुमार माथुर

युद्ध की चुनौती स्वीकार है--
हम, जोकि हजारो वर्ष पूर्व
सोन विद्युत का वलय पहिन
चमकते तेज धार वाले चक्र मे घूमे थे
अश्वमेधो, दिग्विजयो मे--

हम, जिनके शखो के बजते ही
गरुडधारी शिरस्त्राण पहिने हुए सेनाए
ठिठक कर
विपाशा के किनारे से लौट जाती थी--

हम, जिनका नये आधे सूर्य सा ललाट देख
शत्रु सिमिटार का सिरोपा चरणो मे धर
एफ्रोडाइट ललनाओ की
किशमिशी गाठे विभोर डाल जाते थे

हम, जिनकी अनझुकी तलवारो के सामने
मिहिरगुलो की आधिया
काई-सी फट जाती थी

वह वलय, वह सोनचक्र
वह शख, खग हमने

झाऊ नारिकेल-वाले पूरब के सागर में
दो हज़ार वर्ष बाद
अनासक्त फेंक दिया था
विजय पराजय को स्वयं व्यर्थ जान कर
तब से अब
दो हज़ार वर्ष फिर बीते है
सदियों से भूली हुई
शस्त्र की झनकार फिर से उठ आई है
शस्त्र की चुनौती स्वीकार है
युद्ध की चुनौती स्वीकार है--

हम, जो इतिहासों के अज्ञातवास में
याद ही न रख पाए
संकल्प शमी में छिपे रखे इस्पात को
--वह भूल थी हमारी

हम, जोकि आत्मलीन
भागते रहे सदा अतीत के कुहासे में
वर्तमान को नगण्य मान कर
भूल कर कि हर अनीत औ' भविष्य
वर्तमान होता है
--वह भूल थी हमारी

हम, जोकि उदासीन
काया से भाग कर
आत्मा भी खो बैठे

भूल कर काया के अनन्त दायित्वो को
—वह भूल थी हमारी

भूल थी हमारी
कि दुनिया है सभ्य हुई
बर्बरता शेष हुई
बीत चुकी नरबलिया
अन्धे इन्क्वीजीशनो की लपटो मे
जिन्दा जलती सदिया
भूल थी कि
फिर से अनोखी धर्मान्धता न फैलेगी

ज्ञान की जघन्य वाम विकृति न पनपेगी
भावनामयी मनुज सतति न फिर से कभी
ढोर, लोथ, रोबोट, सामग्री बनी जन्मेगी
कल्पो के बाद फिर
छल के मारीचि ओट
अविचल सौमित्र रेख
सहसा ही हुई भग
कल्पो की धूप पकी
पद्धति पर उठा खग
अग्नि की परीक्षा यदि होनी है और शेष
तो फिर तथास्तु है
अग्नि की चुनौती स्वीकार है
युद्ध की चुनौती स्वीकार है !

○

शीश चढ़ा दे जो चरणों पर वही उतारे आरती

श्री गुलाब

आयी हिमगिरि लांघ लुटेरों की टोली फुफकारती,
चालिस कोटि सुतों की जननी, खड़ी अधीर पुकारती।
आज हिमालय के शिखरों से आज़ादी ललकारती,
शीश चढ़ा दे जो चरणों पर, वही उतारे आरती।

सोये अर्जुन भीम जगे क्या अब पांचाली जायेगी ?
जिसने आंख निकाली उसकी आंख निकाली जायेगी,
छयासठ कोटि बढ़ी तो क्या, यह चीनी चाली जायेगी,
बना चासनी, हिन्द महासागर में डाली जायेगी।

भारत भाग्य-भवानी जागी आज असुर संहारती।
आज हिमालय के शिखरों से आज़ादी ललकारती।।

अंगद-पग धर हुए हमारे सैनिक खड़े पहाड़ पर,
पार हिमालय के कूदे जो पल में अभी दहाड़ कर,
बढ़ते बिना विराम तिरंगे ध्वज पेकिंग तक गाड़ कर,
इस चीनी अजगर के रख दें सारे दांत उखाड़ कर।

जिन के साहस, शक्ति, शौर्य पर जननी तन-मन वारती।
आज हिमालय के शिखरों से आज़ादी ललकारती।।

अत्याचारी से दुर्बल को, शरणागत को ओट दी,
साक्षी है इतिहास न हमने कभी किसी पर चोट की,
ध्वस्त हुआ निब्बत जो देखा मन मे बडी कचोट थी,
आज पाप का घट आ पहुचा, सीमा पर विस्फोट की।

वही रक्त की बूद बूद बन अब हनुमान हुकारती।
आज हिमालय के शिखरो मे आजादी ललकारती॥

○

साठ हजार सगर-पुत्रो की सैन्य जुटी तो क्या हुआ?
भूल गये जब खुली कपिल मुनि की भृकुटी तो क्या हुआ?
रेखा-रक्षित, लुटी राम की पर्णकुटी तो क्या हुआ?
पूछो स्मर मे, खुला तीसरा नेत्र भला तो क्या हुआ?

बस मुट्ठी भर राख दिखी थी दक्षिण पवन बुहारती।
आज हिमालय के शिखरो मे आजादी ललकारती॥

○

आज बधी मुट्ठी सा कस कर सारा भारत एक है,
एक हमारी भारतीयता, एक हमारी टेक है,
धर्म धुरी, रथ अभय, सारथी साहस, सखा विवेक है,
गनि गगा की धार हमारी छेक सकेगा भेद है?

यह पीली आधी निष्फल चट्टानो पर सिर मारती।
आज हिमालय के शिखरो मे आजादी ललकारती॥

○

हम अगस्त्य सुत सप्त-सिधुओ को पी जाते घोल कर,
भौह हमारी लीक खीच देती भूगोल, खगोल पर,

बढ़ जाते हम तोपों के मुंह पर निज सीना खोल कर,
दे सकते हैं रक्त हिमालय के बदले में तोल कर।

हम उन की संतान, वीरता जिन के चरण पखारती।
आज हिमालय के शिखरों से आज़ादी ललकारती ।।

सुर मुनि पूजित भूमि अमर यह, हिमगिरि जिस का भाल है,
विंध्याचल मेखला, चरण तल धोता जलधि विशाल है,
शांत, सौम्य चिर तपस्विनी यह, क्रुद्ध हुई तो काल है,
ढाल शांति की, स्वतंत्रता की चिर प्रज्वलित मशाल है।

जय जग जननी, असुर निकंदिनी, जय भारत, जय भारती।
आज हिमालय के शिखरों से आज़ादी ललकारती ।।

चालीस करोड़ों को हिमालय ने पुकारा

स्वर्गीय गोपाल सिंह 'नेपाली'

गगा के किनारो को शिवालय ने पुकारा ।
चालीस करोडो को हिमालय ने पुकारा ।
तलवार उठा लो तो बदल जाए नजारा ।

अंबर के तले हिद की दीवार हिमालय,
सदियो से रहा शाति की मीनार हिमालय,
अब माग रहा हिद से तलवार हिमालय,
भारत की तरफ चीन ने है पाव पसारा ।
चालीस करोडो को हिमालय ने पुकारा ।।

हम भाई समझते जिसे दुनिया से उलझ के,
वह घेर रहा आज हमे बैरी समझ के,
चोरी भी करे और करे बात गरज के,
बर्फों मे पिघलने को चला लाल सितारा ।
चालीस करोडो को हिमालय ने पुकारा ।।

धरती का मुकुट आज खडा डोल रहा है,
इतिहास मे अध्याय नया खोल रहा है,
घायल है अहिसा का वजन तोल रहा है,
धोखे से गया लूट भाई-भाई का नारा ।
चालीस करोडो को हिमालय ने पुकारा ।।

जागो कि बचाना है तुम्हें मानसरोवर,
रख ले न कोई छीन के कैलाश मनोहर,
ले ले न हमारी यह अमरनाथ धरोहर,
उजड़े न हिमालय तो अचल भाग्य तुम्हारा।
चालीस करोड़ों को हिमालय ने पुकारा ।।

आज़ाद रहा देश तो फिर उम्र बड़ी है,
मंदिर भी है, गिरजा भी है, मस्जिद भी खड़ी है,
संग्राम बिना ज़िन्दगी आंसू की लड़ी है,
तलवार उठा लो तो बदल जाय नज़ारा।
चालीस करोड़ों को हिमालय ने पुकारा ।।

गुमान मां के दुश्मनों का धूल में मिलाए जा

श्री गोपाल प्रसाद व्यास

प्रयाण गीत गाए जा ! स्वर मे स्वर मिलाए जा !
यह जिन्दगी का राग है—जवान जोश खाए जा !
प्रयाण गीत गाए जा !

तू कौम का सपूत है, स्वतत्रता का दूत है,
निशान अपने देश का उठाए जा, उठाए जा !
प्रयाण गीत गाए जा !

ये आधिया पहाड क्या ? ये मुश्किलो की बाढ क्या ?
दहाड शेरे हिन्द आसमान को हिलाए जा !
प्रयाण गीत गाए जा !

तू मातृभूमि के लिए, जला के प्राण के दिए,
नई किरण प्रकाश की जगाए जा, जगाए जा !
प्रयाण गीत गाए जा !

तू बाहुओ मे आन भर, सगर्व वक्ष तान कर,
गुमान मा के दुश्मनो का धूल मे मिलाए जा !
प्रयाण गीत गाए जा !

प्रयाण गीत गाए जा ! तू स्वर मे स्वर मिलाए जा !
यह जिन्दगी का राग है, जवान गुनगुनाए जा !

आज न हममें से कोई भी मां का दूध लजाए रे !

श्री चन्द्र कुमार 'सुकुमार'

भारत के रखवालो जागो !
योद्धाओ दिक्-पालो जागो !
फिर हथियार संभालो रे !
सीमा में घुस आया दुश्मन, बाहर उसे निकालो रे !!

आज वक्त आ गया जवानो, अपनी ताकत दिखलाओ,
भारत मां के उठो सपूतो ! उत्तर सीमा पर जाओ।
कफन बांधकर उठो चीन के सपने सभी मिटाने हैं,
दिखला दो भारत के बेटे शेरों की संतानें हैं।
एक नहीं, लाखों प्रताप हैं, अभी देश के लालों में,
वीर शिवाजी हैं लाखों ही धरती के रखवालो में।
लाखों पृथ्वीराज अभी तो ज़िन्दा हैं चौहानों में,
एक इशारे पर मरने की इच्छा सबके प्राणों में।
घर-घर में आज़ाद हिन्द के वीर सिपाही ज़िन्दा हैं,
लक्ष्मी-रानी, मंगल पाण्डे, तांत्या टोपे ज़िन्दा हैं।
ज़र्रा ज़र्रा अंगारा है, बच्चा-बच्चा सूरज है,
ललकारा है हमें तिमिर ने बस इतना ही अचरज है।

तम से लड़ने वालो जागो !
हिमगिरि चढ़ने वालो जागो !
फिर हथियार सम्भालो रे !
सीमा में घुस आया दुश्मन बाहर उसे निकालो रे !!

अभी दूसरे विश्व-युद्ध को दुनिया भूल न पाई है,
भूखा रहकर भी लडने का आदी अभी सिपाही है।
एक सिपाही भारत मा का सौ चीनी को काफी है,
कितने योद्धाओं ने मागी, इस मिट्टी मे माफी है।
दुश्मन की सगीनो आगे यह फौलादी सीने है,
अगर मरे भी तो इज्जत मे, इज्जत मे ही जीने है।
पाव बढा कर पीछे हटना भारत ने कब सीखा है,
जहा उठा हथियार, वही पर दुश्मन मरना दीखा है।
एक गिरेगा, वहा हजारो उठकर लडने वाले है,
चीनी छल-कपटो के देखो पाव उखडने वाले है।
शखनाद के साथ करोडो भैरव आगे आयेगे,
शोणित पीयेगे दुश्मन का नामो-निशा मिटायेगे।

शत्रु कुचलने वालो जागो!
रण-कौशल मतवालो जागो!
फिर हथियार सभालो रे!
सीमा मे घुस आया दुश्मन, बाहर उसे निकालो रे!!

क्या खाकर यह चीन चला है टकराने चट्टानो से,
परशुराम के वशधरो से औ' दधीचि सतानो से।
नष्ट नही हो पाया है इतिहास देश के वीरो का,
जाट, खालसा और गोरखा रजपूती रणधीरो का।
अभी मराठो की रग-रग मे गर्म खून की गर्मी है,
बगाली, उडिया, मदरासी, उत्तर मे काश्मीरी है।
अभी चन्दवरदाई भी है अभी हजारो भूषण है,
है नवीन, है उग्र, निराला जाग रहे जिनके प्रण है।

युगों बाद फिर आज देश के आगे यह दिन आया है,
मां दुर्गा को लोहू पोना आज अचानक भाया है।
आज न हम में से कोई भी मां का दूध लजाये रे,
देखो कोई दुश्मन ज़िन्दा घर को लौट न जाये रे !

मृत्युंजय प्रलयंकर जागो !
काल कराल भयंकर जागो !
फिर हथियार संभालो रे !
सीमा में घुस आया दुश्मन, बाहर उसे निकालो रे !!

तोड़ दो वह हाथ जो लांछित करे इतिहास को

श्री चन्द्रदेव सिंह

तोड़ दो वह हाथ, जो लांछित करे इतिहास को

यह चुनौती युद्ध की केवल नहीं, व्यक्तित्व की है,
पूज्य भारतवर्ष के पुंसत्व के अस्तित्व की है ।
यह चुनौती है हमारे पूर्वजों के मान को,
राम-अर्जुन-भीष्म-राणा-शिवा के अभिमान को ।
देश की गौरवमयी गाथा हमें आयी जगाने,
बांध लो सिर से कफन, हों होंठ पर जयके तराने ।
आज फिर बलिदान के क्षण, यह परीक्षा की घड़ी है,
दुश्मनों की पंक्ति, जैसे लाश मुर्दों की खड़ी है ।
हमें फलते देख जिनके प्राण ईर्ष्या से झुलसते,
काट लो वह जीभ जिससे वंचना के शब्द झरते ।
इन विकल-विक्षिप्त औ' उन्माद-ग्रस्त प्रवंचकों से,
स्नेह-सह-अस्तित्व-शान्ति-समानता के भक्षकों से ।
आज बतला दो कि गंगा में नहीं जल-मात्र, शोणित,
इंच भर भू के लिए उत्सर्ग को हैं शीश अगणित ।
हम जिया करते जगत के स्वप्न में, विश्वास में,
राष्ट्र का गौरव जिया करता हमारी सांस में ।
दम्भियों का दर्प चाहे शब्द में जितना बड़ा हो,
कौन हैं जो समर में सुरराज के सम्मुख अड़ा हो ?
कुचल दो वह शीश जो आता हमारे नाश को,
तोड़ दो वह हाथ जो लांछित करे इतिहास को ।

देव कुसुम शर त्याग, धनुष पर अग्निज बाण चढ़ाओ !

श्री चिरंजीत

श्वेत कमल-मंडित मानस में
रक्तिम कमल खिलाओ !
हरित-श्याम-सैवाल-जाल पर
अंगारे फैलाओ

इन कमलों का प्रहरी हिमगिरि
खंडित आज हुआ है,
बनें कमल खुद अपने प्रहरी,
दल-दल, खड्ग उगाओ !

आज बरफ में भी ज्वाला
की लपटें फूट रही हैं
देव ! कुसुम शर त्याग धनुष पर
अग्निज बाण चढ़ाओ !

भौंरों की चिर मधुर
प्रभाती, मारू राग बनी है,
कली-कली की चितवन में
रणचंडी-जोत जगाओ !

उचित नहीं आराध्य देव का
श्वेत कमल से पूजन,
अरे बनी अरि-मुंड-सुमन की
जय माला पहनाओ !

रणभेरी बज उठी

श्री चिरंजी लाल 'भावुक'

रणभेरी बज उठी युद्ध की, युवको शस्त्र सभालो,
दुश्मन सीमा मे घुस आया, उसको जूझ निकालो।

घर-घर करो शक्ति की पूजा, रण के साज सजाओ,
सिह नाद करके प्रयाण के, सौ-सो बिगुल बजाओ।
बडे दिनो के बाद आज, आई है मगल बेला,
मातृभूमि के लिए प्राण का, छोडो मोह अकेला।

रक्त-स्नान करने को आतुर, बैठी है तलवारे,
उठो देश के पौरुष जागो, आओ मिल हुकारे।
किसने आज रक्त मे रग दी मेरी पावन वसुधा,
कौन अचानक चला आ रहा, लेकर अपनी विपदा।

रक्तपिपासु दुष्ट चीन का, हम जबडा तोडेगे,
जो भी लोलुप दृष्टि उठेगी, वह आखे फोडेगे।

यह अर्जुन, राणा प्रताप का सुन्दर देश अनोखा,
अरे चीनियो दे न सकोगे, बार-बार अब धोखा।
वीर शिवाजी जैसे योद्धा, गुरुनानक से ज्ञानी,
इसी देश मे जन्मे तपसी, बाल्मीकि से ध्यानी।

झांसी वाली रानी की यह, ऐसी समर-स्थली है,
जिस के फूल-पात अंगारे, ऐसी भुवनस्थली है।

जाग उठे हैं वीर पंजाबी, जाग उठे गढ़वाली,
जिनका लोहा दुनियां माने, जिनकी शान निराली।
अभी नहीं देखे हैं तुमने जौहर राजस्थानी,
जिनकी खड्गों ने मुग़लों को, खूब पिलाया पानी।

मरते दम तक हटें न पीछे, ऐसे वीर मराठे,
याद करोगे जब चमकेंगे उन के भीषण खाण्डे।

अभी तुम्हें मालूम पड़ेगा, हम कितने फौलादी,
नर हत्यारो! तुम क्या जानो क्या होती आज़ादी?
यहां विदेशी सत्ता को था, गांधी ने ललकारा,
नेताजी ने दिया हमें था, जय हिंद का नारा।

शान्ति-दूत नेहरू का लोहा, दुनियां भर ने माना,
नहीं भूल से राख समझ कर, अंगारे चुग जाना।

आज उसी पर धावा बोला, जिसने मित्र बनाया?
पंचशील-सा पावन जिसने, तुम को मंत्र सिखाया?
दंभी मान करेंगे मर्दन, भारत के सेनानी,
अब कदमों में झुकना होगा, ओ "चाऊ" अभिमानी।

नहीं कोरिया समझो इसको, नहीं द्वीप फार्मोसा,
फूंक मारते उड़ जाओगे, जैसे उड़ता भूसा।

भारत का हर वीर सजग है, नेहरू पहरेदार खड़ा है

श्री जगदीश 'विद्रोही'

चीनी हमलावरो, तुम्हारा पागल दर्प तोड़ देने को,
भारत वासी जाग गए हैं, हर सैनिक तैयार खड़ा है।

हम है सहनशील सहने की,
पर कोई सीमा होती है।
यह वीरों की भूमि, यहां का हर कंकड़ हीरा-मोती है;

माओ के अनुचरो ! तुम्हारा खूनी हाथ तोड़ देने को,
भारत का हर वीर सजग है, नेहरू पहरेदार खड़ा है।

तुम 'चंगेज़खान' के वंशज,
बर्बर हो, यह बात सही है।
पर भारत शेरों का गढ़ है लामाओ का देश नही है,

रण-लोलुप-पामरो ! तुम्हारा बढ़ता पाव रोक देने को,
यह 'गौतम' का देश 'शिवाजी' की थामे तलवार खड़ा है।

तुमने नेहरू की करुणा को,
कायरता समझा हत्यारो !
लेकिन यह सब खेल नही, तुम जितने चाहो पांव पसारो;

चाऊ के भेड़ियो ! तुम्हारे खूनी दांत तोड़ देने को,
भारत का हर कण-कण बन कर लोहे की दीवार खड़ा है।

हम सैनिक हैं वीर, देश के हम सैनिक हैं वीर

श्री जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिन्द'

हम सैनिक हैं वीर, देशके हम सैनिक हैं वीर !

पर्वतसे ऊंचे गौरवमें, सागरसे गम्भीर,
हम अजेय हैं, सुदृढ़, साहसी, हम निर्भय, रणधीर।
प्राण हमारे ज्योति-पुंज हैं, शक्ति-समृद्ध शरीर,
हम सैनिक हैं वीर, देशके हम सैनिक हैं वीर !

जय-पथपर हम चरण बढ़ाते, बाधाएं कर पार,
घन-गर्जन लज्जित होता, जब हम करते हुंकार।
कभी न पीछे हटे समर में, कभी न सीखी हार,
करता है सम्मान हमारे, पौरुष का संसार।
हमसे रक्षित संस्कृति, भू, गिरि, सिंधु, अन्न, नभ, नीर,
हम सैनिक हैं वीर, देशके हम सैनिक हैं वीर !

कष्ट-सहन में भी रखते हम अधरों पर मुसकान,
उरमें दृढ़ संकल्प, स्फूर्ति-प्रद कंठोंमें जय-गान।
लक्ष्य-सिद्धिके लिए किए जो प्राणोंके बलिदान,
उनसे हमने सदा बढ़ाया भारतका सम्मान।
अनुशासन-रत रहे निरन्तर, हुए न कभी अधीर,
हम सैनिक हैं वीर, देशके हम सैनिक हैं वीर !

चलो जवानो! हिमगिरि के शिखरों ने तुम्हें पुकारा है

श्री त्रिलोकी नाथ 'रजन'

सीमा पर है शोर, द्वार खटखटा रहा दोधारा है।
चलो जवानो! हिमगिरि के शिखरों ने तुम्हें पुकारा है।
आज देश के गौरव को हमलावर ने ललकारा है।
बढ़ो जवानो! हिमगिरि के शिखरों ने तुम्हें पुकारा है।

मानसरोवर पर मोती चुगने कुछ बगले मँडराए।
सावधान ओ राजहंस! तन जाए——मान नहीं जाए।
धौलागिरि की हर चोटी पर अंकित नाम तुम्हारा है।
बढ़ो जवानो! हिमगिरि के शिखरों ने तुम्हें पुकारा है।

उठो राम के वीर वंशजो! तुम्हें बुलाती रामायण।
अर्जुन की सन्तान! उठो, करके गीता का पारायण।
पृष्ठ पलटने चला महाभारत कोई दोबारा है।
बढ़ो जवानो! हिमगिरि के शिखरों ने तुम्हें पुकारा है।

उठो प्रताप शिवा के बेटो! वीर सैनिको धनुर्धरो!
गुरु गोविन्द सिंह के सिक्खो! धर्मयुद्ध में जूझ मरो।
जाट-अहीरो! वीर गूजरो! अब इतिहास तुम्हारा है।
चलो जवानो! हिमगिरि के शिखरों ने तुम्हें पुकारा है।

बचकर निकल न जाए हिमगिरि को घायल करने वाले।
खूनी चंगेजो के वंशज, युद्धों के जो मतवाले।
गीता का संदेश यही है, यह नेहरू का नारा है।
चलो जवानो! हिमगिरि के शिखरों ने तुम्हें पुकारा है।

राष्ट्र को आज चाहिए दान, दान में नवयुवकों के प्राण

श्री देवराज 'दिनेश'

ध्यान से सुने राष्ट्र-संतान,
राष्ट्र का मंगलमय आह्वान ।
राष्ट्र को आज चाहिए दान,
दान में नवयुवकों के प्राण ।।

राष्ट्र पर घिरी आपदा देख, सजग हो युग के भामाशाह,
दान में दे अपना सर्वस्व और पूरी कर मन की चाह ।
राष्ट्र की रक्षा के हित आज, खोल दो अपना कोष कुबेर,
नहीं तो पछताओगे मीत, हो गई अगर तनिक भी देर ।
समझकर हमें निहत्था, प्रबल शत्रु ने हम पर किया प्रहार,
किन्तु अपना तो यह आदर्श, किसी का रखते नहीं उधार ।
हमें भी ब्याज-सहित प्रत्युत्तर उनको देना है तत्काल,
शीघ्र पहननी होगी शिव को रिपु के नर-मुण्डों की माल ।
राष्ट्र को आज चाहिएं वीर, वीर भी हठी 'हमीर' समान,
राष्ट्र को आज चाहिए दान, दान में नवयुवकों के प्राण ।।

राष्ट्र के कण-कण में से आज उठ रही गर्वीली आवाज़,
वक्ष पर झेल प्रबल तूफान शत्रु पर हमें गिरानी गाज ।
देश की सीमाओं पर पागल कौए मचा रहे हैं शोर,
अभी देगा उनको झकझोर, बली गोबिन्दसिंह का बाज़ ।
किया था हमने जिससे नेह, दिया था जिसको अपना प्यार,
बना वह आस्तीन का सांप, हमीं पर आज कर रहा वार ।

समझ हमको उन्मत्त मयूर, मगन मन देख नृत्य में लीन,
किया आघात, न उसको ज्ञात, सांप हैं मोरों के आहार।
राष्ट्र चाहेगा जैसा, वैसा ही हम अब देंगे बलिदान।
राष्ट्र को आज चाहिए दान, दान में नवयुवकों के प्राण।।

राष्ट्र को आज चाहिए देवि कैकयी का अदम्य उत्साह,
धुरी टूटे रथ की दे बांह, पराजय को दे जय की राह।
राष्ट्र को आज चाहिए गीता के गायक का वह उद्घोष,
मोह तज हर अर्जुन में मानस-तट पर लहराए आक्रोश।
आधुनिक इन्द्र कर रहा आज राष्ट्र-हित इंद्रधनुष निर्माण,
यही है धर्म, बनें हम इंद्रधनुष की प्रत्यंचा के वाण।
इंद्र-धनुष रूपी प्रबल एकता की सतरंगी छवि को देख,
शत्रु के माथे पर भी आज खिंच रही है चिन्ता की रेख।
राष्ट्र को आज चाहिए एकलव्य-से साधक निष्ठावान।
राष्ट्र को आज चाहिए दान, दान में नवयुवकों के प्राण।।

राष्ट्र को आज चाहिए चन्द्रगुप्त की प्रबल संगठन-शक्ति,
राष्ट्र को आज चाहिए अपने प्रति राणा प्रताप की भक्ति।
राष्ट्र को आज चाहिए रक्त, शत्रु का हो या अपना रक्त,
राष्ट्र को आज चाहिए भक्त, भक्त भी भगतसिंह-से भगत।
राष्ट्र को आज चाहिए फिर बादल-जैसे बालक रणधीर,
राष्ट्र की सुख-समृद्धि ले आयें, तोड़ रिपु-कारा की प्राचीर।
और बूढ़े सेनानी गोरा की वह गर्वभरी हुंकार,
शत्रु के भूल जाएं औसान, अगर दे मस्ती से ललकार।
राष्ट्र को आज चाहिए फिर अपना अल्हड़ टीपू सुल्तान।
राष्ट्र को आज चाहिए दान, दान में नवयुवकों के प्राण।।

आज अनजाने में ही प्रबल शत्रु ने करके वज्र प्रहार,
हमारे जन-मानस की चेतनता के खोल दिए हैं द्वार।
राष्ट्र-हित इससे पहले, कभी न जागी थी ऐसी अनुरक्ति,
संगठित होकर रिपु से आज, बात कर रही हमारी शक्ति।
प्रतापी शक्तिसिंह भी देश-द्रोह का जामा आज उतार,
राष्ट्र की तूफानी लहरों में करता है गति का संचार।
आज फिर नूतन हिन्दुस्तान, लिख रहा है अपना इतिहास,
राष्ट्र के पन्ने-पन्ने पर अंकित अपना अदम्य विश्वास।
चन्दबरदाई के अन्तर से फूट रहे ज्योतिर्मय गान,
राष्ट्र को आज चाहिए दान, दान में नवयुवकों के प्राण॥

भारत-भू के वीर सिपाही रिपु के खट्टे दांत करेंगे

श्री देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

मशीनों की नोकों से हम या तोपों से नहीं डरेंगे,
युद्धक्षेत्र में कुचल शत्रु को, निश्चित जय का वरण करेंगे !

आज चीन है झपटा हम पर, आगे पर भी कल टूटेगा,
सारे जग की शांति-मुक्ति पर, राहु-केतु-सा ग्रहण लगेगा
सदियों तक जो दोस्त रहा वह, बर्बर दुश्मन बना हमारा,
निम्न स्वार्थ में बहा रहा है, लाल रक्त का अब फव्वारा
दानवता को किन्तु रोंद कर, हम दुश्मन को ध्वस्त करेंगे !

यह गांधी का देश यहां का शांति-अहिंसा रहना नारा,
नहीं कभी हम बर्बर बनते, मानवता से प्यार हमारा,
पर दधीचि भी हुए यहीं पर, जिन की अस्थि वज्र बन जाती,
जिस के सम्मुख नहीं स्वप्न में, शत्रु-सैन्य फिर टिकने पाती,
उस भारत के वीर सिपाही, रिपु के खट्टे दांत करेंगे !

मुनियों की यह तपोभूमि भी, लाल रक्त से भरती जाती,
रणचण्डी भी खप्पर अपना, भरती और किलकती जाती ;
मानव ने ही दानव बनकर, मानवता को अब ललकारा,
एक अजब सन्नाटा जग में, छाया आज कुहू अंधियारा,
तब हम लिए अहिंसा अपनी, कब तक बैठे भला रहेंगे ?

मशीनों की नोकों से हम या तोपों से नहीं डरेंगे !

मौत भी आए तो सीने से लगा सकते हैं हम

श्री नजीर बनारसी

नातवानी को तवानाई बना सकते हैं हम,
चीनके हर ज़ुल्मकी धज्जी उड़ा सकते हैं हम ।

दोस्ती में घात करने वाले ! तेरा शुक्रिया,
दोस्त अब सारे ज़माने को बना सकते हैं हम ।

साथ है कुदरत हमारे और हम कुदरत के साथ,
हद से जो आगे बढ़े पीछे हटा सकते हैं हम ।

मुश्किलें आया करें मुश्किल से घबराता है कौन,
मौत भी आये तो सीने से लगा सकते हैं हम ।

अपने आंसू पोंछ ले ऐ मादरे हिन्दोस्तां,
इस लुटी हालत में भी सब कुछ लुटा सकते हैं हम ।

ऐ दग़ाबाज़ो, फकत तुमको डुबोनेके लिए,
खूनकी नद्दी तो क्या दरिया बहा सकते हैं हम ।

दूसरे दरियाओं के मांझी को क्यों आवाज़ दें,
जब लहूमें डूबकर बेड़ा बचा सकते हैं हम ।

सास लेनेकी न मोहलत मिल सकेगी मौत को,
आबरू पर इतनी कुर्बानी चढा सकते है हम ।

गोलियो की सनसनाहट हो कि तोपो की गरज,
गीत आजादी का सब साजो पे गा सकते है हम ।

फिर कफन की क्या जरूरत हमको ऐ खाके वतन,
जब तेरी चादरमे अपने को छुपा सकते है हम ।

ठोकरे क्यो खाने जाये दुश्मनो के पावकी,
गोलिया हँस-हँसके जब सीने पे खा सकते है हम ।

अपना मजहब है मोहब्बत अपना ममलक इत्तेहाद,
चीनियो को छोडदो दुनिया पे छा सकते है हम ।

वह कोई पर्बत हो या फासी का तख्ता ऐ नजीर,
नज्म अपनी हर बुलन्दीमे सुना सकते है हम ।।

बढ़े चलो, बढ़े चलो

श्री नरेन्द्र चंचल

बढ़े चलो, बढ़े चलो, यहीं जनम, यहीं मरण !

चलें हज़ार आंधियां
न पांव डगमगा सके,
दुश्मनी – प्रहार से
न आंख डबडबा सके !
शक्ति का पहाड़ हो, नहीं रुके बढ़ा चरण !

शपथ तुम्हें गरीब की
शपथ तुम्हें समाज की,
तुम 'भरत' के देश के—
शपथ तुम्हें रिवाज की !
लड़ो-भिड़ो, कटो-मरो, अगर बचा सको चमन !

बिजलियां हज़ार बार
गिर चुकी हैं नीड़ पर,
किन्तु दुश्मनों ने आज
वार किया रीढ़ पर !
युद्ध वीर के लिए, कायरों को है शरण !
बढ़े चलो, बढ़े चलो, यहीं जनम, यहीं मरण !

हर व्यक्ति हिमालय बन जाए !

श्री नरेन्द्र शर्मा

हर शक्ति हिमालय बन जाये !

हर व्यक्ति हिमालय बन जाये !
किस-किस को लाघेगा दुश्मन ?
हम खड़े हुए दुश्मन आये,
हर व्यक्ति हिमालय बन जाये ।

भारत पर रिपु की लगी दीठ,
जब हर घर होगा शक्ति पीठ
हर नर का सीना तन जाये,
हर व्यक्ति हिमालय बन जाये ।

कैसी क्षण दो क्षण की देरी ?
हर सास बने अब रणभेरी ।
सैनिक को रण कंकड़ भाये,
हर व्यक्ति हिमालय बन जाये ।

कस कमर करे अभिमान देश,
हम सब का तन-मन-प्राण देश ।
यह देश रहे, जीवन जाये,
हर व्यक्ति हिमालय बन जाये ।

बढ़े चलो, बढ़े चलो, सदर्प वीर भारती

श्री नलिन

बढ़े चलो ! बढ़े चलो !! सदर्प वीर भारती ।

तुम बढ़ो परम प्रलय-पवन प्रबल प्रचण्ड हो,
तुम तपो महामरण निदाघ-मार्तण्ड हो ।
वज्र चरण चाप से पिसें पहाड़ पंथ के,
शीघ्र शत्रु-वाहिनी विखण्ड खण्ड-खण्ड हो ।
मान् भूमि हो प्रसन्न आरती उतारती ।
बढ़े चलो, बढ़े चलो, सदर्प वीर भारती ।।

सर्वनाश-नृत्य-मग्न कालिका करालिका,
कर उठी निनाद अट्टहास मुण्ड मालिका ।
तुम करो प्रसन्न शीशदान रक्तदान दे,
सद्यरक्त-तृषित दनुज-दुष्ट-गर्व-घालिका ।
भयंकरा खड़ी विनाश-पंथ पर पुकारती ।
बढ़े चलो, बढ़े चलो, सदर्प वीर भारती ।।

युद्धनाद से गगन, दिशा, धरा प्रकम्पिता,
शत्रु-सैन्य-ध्वस्त-ग्रस्त-व्यस्त प्राण-शंकिता ।
विदीर्ण तीव्र वार से सगर्व शत्रु-वक्ष हो,
दिगन्त पर विजय रहे अराति-रक्त-अंकिता ।
देव बालिकाएं विजयमाल ले निहारतीं ।
बढ़े चलो, बढ़े चलो, सदर्प वीर भारती ।।

अरिदल की तोपें ठंडी कर दो अपने बलिदानों से

श्री नन्दकिशोर 'रजनीश'

कह दो बहके चीन देश से भिडे नही चट्टानो से!

यह शेरो का देश यहा का हर जर्रा तूफानी है,
इसकी सीमा पर अर्जुन के बेटो की निगरानी है ।
इस धरती के लाल चिन गये हँस-हँस कर दीवारो मे,
धरती को दहलाने वाला बल इनकी ललकारो मे ।
लोहा मोल न ले कोई इन अलबेले मस्तानो से,
कह दो बहके चीन देश से भिड़े नही चट्टानो से ।

कौन निकाल रहा है हीरे, मुकुट हिमालय के सिर से ?
किसने अपना हाथ दिया है शेरो के मुह मे फिर से ?
किसका हाथ बढा दूषित करने को गगा की धारा ?
थके हुए शेरो को किसने आज अचानक ललकारा ?
हम बचपन से खेल खेलने आये है तूफानो से,
कह दो बहके चीन देश से भिडे नही चट्टानो से ।

सोमनाथ का धाम पुरातन, हरिमन्दिर का झिलमिल तन,
कुतुब लाट का ऊचा मस्तक, ताजमहल का निर्मल मन ।
इन सब की सौगन्ध देश के बालक, वृद्ध, जवानो को,
एक मरे तो मरे मार कर सौ चीनी हैवानो को ।
निकल पडे वीरो की टोली मस्जिद से, बुतखानो से,
कह दो बहके चीन देश से भिड़े नही चट्टानो से ।

शरणागत की रक्षा करना, भाई को भाई कहना,
अब तक यही चला आया है भारत का अनुपम गहना।
पर जो भाई बन कर तन में छुरी हमारे मारेगा,
जी चाहे सौ बार लड़े पर वही युद्ध में हारेगा।
बस इतना कहना है हमने जंगबाज़ हैवानों से,
कहदो बहके चीन देश से भिड़े नहीं चट्टानों से।

विजय दुन्दुभि गूंज उठे मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारों से,
हर गिरजा का आंगन भर दो गोलों से हथियारों से।
बहनो! आज मांग लो राखी की कीमत निज वीरों से,
आज दूध की लाज रखा लो माताओ! रणधीरों से।
अनगिन बैरी मरें हमारे सबल अचूक निशानों से,
कहदो बहके चीन देश से भिड़े नहीं चट्टानों से।

आज अगर जय चन्द कोई भी घर में आग लगायेगा,
इतना रक्खे याद कि उस में स्वयं वही जल जायेगा।
इतिहासों की ग़लती आज न फिर दुहराई जायेगी,
कौन मित्र है, कौन शत्रु है, परख आज हो जायेगी।
सावधान हो कर चलना है अपनों से, बेगानों से,
कहदो बहके चीन देश से भिड़े नहीं चट्टानों से।

तप्त लहू की धार बह चली

○

श्री नागार्जुन

वो निकले जहरीले कीड़े लाल कमल में,
तप्त लहू की धार बह चली तुहिनाचल में।
हमने देखा रंग बर्फ का बदल रहा है
शांति सुन्दरी का तो दम ही निकल रहा है।
जी करता है, सीखूं मैं बन्दूक चलाना,
जी करता है सीखूं, मैं फौलाद गलाना।
जी करता है, जन-मन में भड़काऊं शोले,
जी करता है, नेफा पहुंचूं, दागूं गोले।
विश्व शांति की घायल देवी चीख रही है,
सर्वनाश की डायन हंसती दीख रही है।
दुनिया की छत पर टपकी है लार दनुज की,
पंचशील में बिदक गई चेतना मनुज की।
सीमाओं पर लहरगया भारत का यौवन,
छलक गया है लहू, शर्म से पिघला कंचन।
दीप शिखा सी कोटि-कोटि मन की इच्छाएं,
मचल उठी हैं, सेनापति का इंगित पाएं।
वह निकले जहरीले कीड़े लाल कमल में,
तप्त लहू की धार बह चली तुहिनाचल में।

* *

आज चुकाना है ऋण तुमको अपनी मां के प्यार का !

श्री निरंकारदेव सेवक

उठो, साथियो ! समय नहीं है यह शोभा-शृंगार का ।
आज चुकाना है ऋण तुमको अपनी मां के प्यार का ।

प्राण हथेली पर रख-रखकर, चलना है मैदान में ।
फर्क नहीं आने देना है देश, जाति की शान में ।

सबके आगे एक प्रश्न है सीमा के अधिकार का ।
उठो, साथियो ! समय नहीं है यह शोभा-शृंगार का ।

बच्चे-बच्चे के हाथों में हिम्मत का हथियार दो ।
जो दुश्मन चढ़कर आया है उसको बढ़कर मार दो ।

समय नहीं है यह फूलों का, अंगारों के हार का ।
आज चुकाना है ऋण तुमको अपनी मां के प्यार का ।

सबसे बढ़कर शक्ति समय की आज तुम्हारे पास है ।
तुम्हें खून से अपने लिखना आज नया इतिहास है ।

दुश्मन घुस आया भीतर, तो क्या होगा घर-बार का !
उठो, साथियो ! समय नहीं है यह शोभा-शृंगार का ।

आज चुकाना है ऋण तुमको अपनी मां के प्यार का ।

भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है

○

श्री नीरज

छिपते जाते है सूरज, चांद, सितारे सब,
आधी बिजली के साथ गरजती आती है,
हो सावधान! सभलो! अब ओ पेकिंग वालो,
भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है।

है काप रही चोटिया पहाडो की थर-थर,
ओले बन कर के शोले जलते जाते है,
कटते जाते है दुर्ग-दहाने तोपो के,
टको पर इस्पाती बादल मडराते है।

अगडाई लेकर जाग रहा हिन्दोस्तान,
सगीनो पर जिन्दगी भैरवी गाती है।
भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है।।

सन-सन सनसना उठा है चक्र-सुदर्शन फिर,
भर-भर खप्पर चामुडा जीभ पसार रही,
डम-डम-डम डिमिक रहा डमरू प्रलयकर का,
हर-हर-हर-हर-हर दिशा-दिशा हुकार रही।

ऐसी चट्टान बना है अपना हर जवान,
जो गोली लगती फूलो-सी झर जाती है।
भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है।।

है खौल उठा जट्टों-मरहट्ठों का लोहू,
पंजाबी शेर दहाड़ रहे मैदानों में,
हैं तड़प उठे जांबाज़ गोरखे गढ़वाली,
हैं धधक उठे अंगार राजपूताने में।

ऐसा जादू कर दिया तिरंगे झण्डे ने,
मन्दिर के बढ़कर मस्जिद तिलक लगाती है।
भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है।।

रह-रह कर गंगा-जमुना में आ रही बाढ़,
नादिरशाही सिंहासन डूबा जाता है,
हो रहे खून मनसूबे चोर-लुटेरों के,
विध्याचल सोये ज्वालामुखी जगाता है।

डाकुओ, हटो तिब्बत, लद्दाख, उपूसी म,
वरना दिल्ली की सेना पेकिंग आती है।
भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है।।

पड़ रहीं काल की भौंहों में सलवटें शिकन,
हैं खड़े हो गए तन कर लन्दन, अमरीकन,
एशिया, अरब, योरोप अफरीका सब मिलकर,
हैं लगा रहे नेहरू के माथे पर चंदन।

अब भी चेतो, अब भी चेतो, चाऊ-माओ,
फिर-फिर हिटलर की मौत तुम्हें समझाती है।
भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है।।

वैसे तो भारत की धरती है प्रेम-भूमि,
बिन मागे इसने सबको प्यार लुटाया है,
पर चबा गयी भी है यह चगेजो को जब,
इसके घर कोई तोपे लेकर आया है।

ओ खबरदार ! इस ओर घुमाना नजर नही,
उठती जो इस पर आख फोड दी जाती है।
भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है ।।

गद्दारी की तुमने तिब्बत की जनता से,
कर दिये अमन के कत्ल तरुण सपने सारे,
कोरिया चीर डाला तुमने दो टुकडो मे,
धर दिये जला कर वियतनाम मे अंगारे।

मानवता के कातिलो मगर यह याद रहे,
कातिल की ही तलवार उसे खा जाती है।
भारत की धरती रण का बिगुल बजाती है ।।

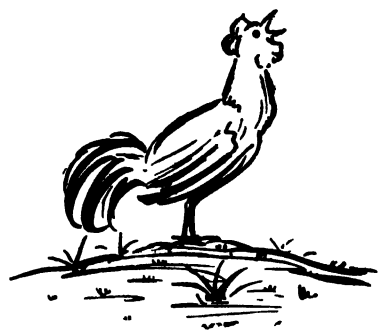

बस तुम नर्त्तन करती जाओ

कुमारी नीरजा

मत रम्भा का रूप सजाओ, मत नयनों में काजर डालो,
एक रूप बस एक रूप ही तेरा मुझ को भाता सजनी,
बन श्यामा मेरी राहों में
बस तुम नर्त्तन करती जाओ।

सीमाओं का प्रहरी हूं मैं, मां ने आज पुकारा मुझ को,
संकट घिर आया उत्तर में, हिमगिरि ने ललकारा मुझको,
पूरब भी अब लगा डोलने, अब मत करो इशारा मुझको।

भेंट अगर कुछ देना चाहो, तो माथे का कुंकुम दे दो,
मां याचक बन द्वार खड़ी है, पुत्र कोख का, उसको दे दो,
अपने मस्तक की लाली से मां का मस्तक उज्ज्वल कर दो।

शपथ तुम्हें उन बलिदानों की, मत नयनों से नीर बहाना,
कहीं बहे नयनों से काजर, और नयी बन जाये यमुना,
वीर-सिपाही की पत्नी हो जौहर की ज्वाला भड़काना।

मत अधरों को आज हिलाओ, रुकने का मत नाम सुनाओ,
एक बार शिव-शक्ति रूप धर, ताण्डव की गति आज सिखाओ,
बन श्यामा मेरी राहों में,
बस तुम नर्त्तन करती जाओ।

विजय या कि बस मौत, यही अब एक हमारा नारा है

श्री पद्मकान्त मालवीय

आज चीनियों ने मद में अपने हम को ललकारा है,
ऋषि-मुनियों की तपोभूमि, कुटियों ने हमें पुकारा है।

बौने घुस आए हैं मानसरोवर और हिमालय में,
हम सब के मस्जिद, गुरद्वारे, गिरजा और शिवालय में।
जीवित कौन रहेगा यदि भारत ही मिट जाएगा तो ?
कौन मरेगा यदि भारत दुनिया में जी पाएगा तो ?

विजय या कि बस मौत, यही अब एक हमारा नारा है,
आज चीनियों ने मद में अपने हम को ललकारा है।

धोखा देकर बढ़ आए हैं वे पर डर की बात नहीं,
जिसका हो न सवेरा ऐसी होती कोई रात नहीं।
पहली जीत हराने वाली, अन्तिम जीत-जीत होती,
भारत जननी नहीं धैर्य अपना विपत्ति में भी खोती।

जो अधीरता में आगे बढ़ता सदैव वह हारा है,
विजय या कि बस मौत, यही अब एक हमारा नारा है।

जाग गए हैं सिंह खैर मांगे दुश्मन अब जानों की,
लहराती टुकड़ियां चल पड़ीं बूढ़ों और जवानों की।
एक-एक चीनी को जब तक बाहर हम न फेंक देंगे,
भारत मां की कसम, चैन हम तनिक नहीं तब तक लेंगे।

या तो विजय प्राप्त होगी या फिर गंगा की धारा है
आज चीनियों ने मद में अपने हमको ललकारा है।

चीनी चोरों को पीकिंग तक अब हम को पहुंचाना है,
अपनी तलवारों का जौहर इनको कुछ दिखलाना है।
विजय प्राप्त होगी ही, लाशों पर हम लाश बिछा देंगे,
पीछे आने वाले पीकिंग तक जिस पर चढ़ जाएंगे।
चप्पा-चप्पा मातृभूमि का प्यारा हमें हमारा है,
विजय या कि बस मौत, यही अब एक हमारा नारा है।

प्रायश्चित किया है तिब्बत में हमसे जो भूल हुई,
करके स्नान रक्त-गंगा में मिली ज़िन्दगी हमें नई।
ज़ोरावर कनिष्क को भूले चीनी यह नादानी है,
आज खून से ताज़ा करनी उनकी याद पुरानी है।
गंगोत्री का खौल रहा जल, हिम जलता अंगारा है,
विजय या कि बस मौत, यही अब एक हमारा नारा है।

भूमि-सुता सीता-सीमा चीनी-रावण ने हर ली है,
राम-प्रतिज्ञा हमने भी रावण-विनाश की कर ली है।
रावण का कर अन्त, हमें सीता को वापस लाना है,
राम राज्य का झंडा फिरसे दुनियां पर फहराना है।
"लंका दहन, मरण-रावण" बस एक यही अब नारा है,
आज चीनियों ने मद में अपने हम को ललकारा है।

रावण रहा न कंस, न चाओ-माओ ही रह जायेंगे,
काली करतूतों, चालों का, इनको मज़ा चखायेंगे।
इक लख पूत, सवा लख नाती, रावण के न काम आए,
बानर भालू की सेना ले लंका में जब राम आए।
बच्चा-बच्चा मातृ-भूमि का राम बना, असिधारा है,
विजय या कि बस मौत, यही अब एक हमारा नारा है।

प्यारी जान जिन्हे हो, चूडी पहने, लौट जाएं घर को,
आजादी जिनको प्यारी हो, वह सब साथ चले रण को।
आज देश का कोई भी, यदि काम नही उसके आया,
भारत माता का कलक वह व्यर्थ जन्म उस ने पाया।
'वीर-भोग्या वसुन्धरा' ऋषियो ने सदा उचारा है,
आज चीनियो ने मद मे अपने हम को ललकारा है।

चीनी कुम्भकर्ण जागा, आखो का उतरा पानी है,
दुनिया को भक्षण करने की मन मे मनक समानी है।
मचू-साम्राज्य के सपने देख रहा, अभिमानी है,
पीनक मे चगेज हलाकू बनने की जिद ठानी है।
ऐसे मदमातो का मद हमने तो सदा उतारा है,
आज चीनियो ने मद मे अपने हम को ललकारा है।

कपट पूर्ण हिन्दी-चीनी भाई-भाई का नारा है,
रण मे कैसा किसका नाता ? प्रभु ही एक सहारा है।
प्राणिमात्र भाई है सबसे प्रेम हमे है, नाता है,
किन्तु आततायी का सर पैरो से रौदा जाता है।
जीना कब असत्य दुनिया मे, और सत्य कब हारा है ?
ऋषि-मुनियो की तपोभूमि, कुटियो ने हमे पुकारा है।

बसती है स्वतन्त्रता अब अपने प्रत्येक प्रहारो मे,
हमको है घूरती गुलामी छोटी मोटी हारो मे।
हीन चीनियो के मद को मिट्टी मे हमे मिलाना है,
तलवारो के नर्तन तोपो के गर्जन मे गाना है।
'मरना वस्त्र बदलना है' गीता ने सतत पुकारा है,
विजय या कि बस मौत, यही अब एक हमारा नारा है।

देश-वासियों की रक्षा-हित गिरी को आज उठाना है,
चीनी-मेघों की वर्षा से ब्रज को सतत बचाना है।
दुर्योधन, शिशुपालों से पृथ्वी को मुक्त कराना है,
एक बार फिर से दुनिया को गीता-ज्ञान सुनाना है।
हमीं एक अधिकारी इसके, यह अधिकार हमारा है,
ऋषि-मुनियों की तपोभूमि, कुटियों ने हमें पुकारा है।

ऐक्य-संजीवन-बूटी-हित पर्वत को भी ले आना है,
मेघनाद-बध-हित लक्ष्मण को पुनः होश में लाना है।
और विभीषण को उन की गद्दी पर फिर बिठलाना है,
रणचंडी को चीनी मुंडों की माला पहनाना है।
'भारत जुगजुग जिये, मरें हम', एक यही अब नारा है,
आज चीनियों ने मद में अपने हमको ललकारा है।

लरज़ रही है लाश आज अपने मज़ार में अकबर की,
राणा, गोविंदसिंह, शिवाजी, भगतसिंह, चंद्रशेखर की।
तिलक, सुभाष, मालवी, गांधी नभसे हमें पुकार रहे,
रक्त मांगती है मां तो अब, आज रक्त का सिंधु बहे।
आज दूधने भारत मां के बेटों को ललकारा है,
ऋषि-मुनियों की तपोभूमि, कुटियों ने हमें पुकारा है।

शरशैया पर पड़े भीष्म की है सौगंध बढ़े जाओ,
अर्जुन, भीम और अभिमन्यू की है कसम चढ़े जाओ।
वाहगुरु की चिड़ियें चीनी-बाजों से अब आज भिड़ें,
अंगद के से समर-भूमि में पैर जहां भी पड़ें पड़ें।
प्यासे तड़प रहे इमाम ने हमको आज पुकारा है,
विजय या कि बस मौत, यही अब एक हमारा नारा है।

रोयेगा इतिहास तनिक भी चूके अगर प्रमाद किया,
भावी पीढ़ी शर्मायेगी आज व्यर्थ यदि वाद किया।
चिन्तन एक, एक मन, वाणी, एक हृदय हो, बढ़ो, लड़ो,
दुश्मन के शीशों पर बनकर गाज आज तुम टूट पड़ो।
जीवन के सारे मूल्यों का अपने वारा न्यारा है,
ऋषि-मुनियों की तपोभूमि, कुटियों ने हमें पुकारा है ।

सदा अहिंसा उगी पली है साये में तलवारों के,
जीवन-कमल खिला करता है बीच प्रलय की धारों के।
मातृ-शक्ति-पूजा में निर्भय सदा शीश का दान दिया,
जीवन, सुख, ऐश्वर्य और वैभव का तब वरदान लिया।
वीर राज्य करता है या फिर सीधे स्वर्ग सिधारा है,
विजय या कि बस मौत, यही अब एक हमारा नारा है।

ओ हिमालय के सपूतो !

श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'

ओ हिमालय के सपूतो !
शीश पर बांधो कफन
तैयार हो लो, आंख खोलो
एक धोखेबाज़ दुश्मन आ रहा बढ़ता निरन्तर
दे रहा क्षण-क्षण चुनौती
देश की स्वर्णिम धरा को ।

यह वही दुश्मन
जिस ने हमें पुकारा 'मित्र' कह कर
मित्र क्या, जिसको 'सगा भाई' बनाया
हौसला जिसका बढ़ाया
मर रहा था जब, न कोई पूछता था
तब जिसे हमने सदय हो
गर्व के गिरि पर चढ़ाया ।

यह वही दुश्मन
जिसे सर्वस्व देकर
विश्व भर की लांछना-अपमान सहकर
चाहते थे हम कि यह भी
विश्व के सिरमौर देशों में गिना जाए
मिले इसको कि जो है प्राप्य इसका ।

यह वही दुश्मन
नहीं इन्सानियत का नाम जिस में
साम में नफरत भरी है
रक्त में है कुलबुलाते
क्रूरता कीटाणु अनगिन
तन भरा है पीतिमा से
मन भरा है कालिमा से
है नहीं भाती जिसे लाली उषा की
या कि मानव के मधुर कोमल हृदय की
प्यार की सज्जा जिसे दी है मनुज ने ।

यह वही दुश्मन
जिसे अभिमान जन-बल का बहुत है
आदमी जिस के लिए है कोयला बस
झोंक दो बे-खौफ उसको
युद्ध की प्रज्वलित भट्ठी में
करे यदि प्रश्न वह कुछ
'लड़ रहा वह किस लिए !
किससे' सुनो मत
तोप के मुह पर चढा दो !

यह वही दुश्मन
जिसे विस्तारवादी नीति प्रिय है
नाम को है साम्यवादी, किन्तु है साम्राज्यवादी
चाहता नेतृत्व करना विश्व का जो
और जलता है प्रगति से जो हमारी

शान्त अपने देश को इसने दबाया
और सीमा पर सकल जन-बल लगाया,
चाहता है वह हमें अब पंगु करना !
इस बहाने विश्व की सब शांति हरना !
तुम कि जो अन्याय सह सकते नहीं हो,
प्राण भय से मूक रह सकते नहीं हो,
तुम कि जो निर्भीक होकर प्राण देते
पद-दलित को शक्ति देते, त्राण देते,
आज इस विश्वासघाती को न छोड़ो
नारा है, इसके विषैले दांत तोड़ो
याद आ जाए छटी का दूध इसको
ले समझ यह छेड़ बैठा मूर्ख किसको !
सब उठो जागो,
अलख घर घर जगा दो
पुरुष-नारी, वृद्ध-बालक, युवा-युवती
सभी को सैनिक बनाओ
जो जहां भी हो उसे बस एक धुन हो
"शत्रु का संहार करना है
उसे इस भूमि से बाहर भगाकर
मुक्ति का शृंगार करना है।"
याद आए तीर अर्जुन का, गदा उस वायु-सुत की
असि शिवा की, और भाला उस प्रतापी का
सभी की याद होकर सघन
हम में शक्ति भर दे, देश की अनुरक्ति भर दे
और हम इस शत्रु को जीता न छोड़ें
तब सफल है जन्म अपना !

उठो, विजय-अभियान करो तुम !

सुश्री पद्मा सुधि

ओ नदियो की पावन रेता ! पाहन बन, सीमा पर जाओ !
पिता तुम्हारे शैल-राज के, मुकुट-रत्न को हरता रिपु-दल।
धनुषाकार पडी क्यो तट पर ? शालिग्राम-शर, खीच प्रत्यचा,
अन्यायो पर तुम बरसाओ,
न्याय वरो, उत्थान करो तुम,
उठो, विजय-अभियान करो तुम !

बरस-बरस कर बना रहा हिम, पूरब, पच्छिम औ' दक्षिण की–
सीमाओ की रक्षा कर वह– हिन्द-महासागर मे लाया,
देश-भक्ति के श्वेत सुमन सब, हिमक बल मे है वह डरता,
शीत प्रहार तभी तो करता !
शिशिर-शरो का मान करो तुम,
उठो, विजय-अभियान करो तुम !

ओ नदियो की पावन-धारा ! उन्नत हो, मत बनो निम्नगा !
चरण दबाओ मत भारत के, है मस्तक पीडा से पीडित,
मति है अब जडमति से विजडित, छाए है जो भरत भाल पर,
मीठी चीनी मे ये पातक,
प्यासी हो तो पान करो तुम,
उठो, विजय-अभियान करो तुम !

जितना रक्त हिमालय मांगे उसको देंगे

○

श्री पुरुषोत्तम कुमार निश्चावन

कांप उठा ब्रह्मांड और डोले दिगंत सब,
त्राहि त्राहि का शोर मच गया भू-अम्बर में।
कैसा यह विस्फोट ? कौन ज्वाला-गिरि मचला,
यह कैसा भू-कम्प, विकल क्यों शेष नाग है ?
शिव का तीजा नेत्र खुल गया है क्या फिर से ?
आज स्वर्ग में क्यों कोलाहल ही कोलाहल ?
और हिमालय की बर्फों में आग लगी है ?
लगता है रण चंडी फिर से नाच रही है ।
त्रस्त मनुजता पूछ रही है अरे हुआ क्या ?
प्रलय-मेघ क्यों छाए जाते पूर्व दिशा पर ?
वही दिशा कि ज्ञान-सूर्य जिस से उगना था ।

○

ठहरो, तुम्हें बताऊं आज घटा क्या ऐसा !
लख कर जिस को प्रकृति तत्व सब क्रुद्ध हो गए,
और सिंधु भी छोड़ रहा अपनी सीमाएं।
आज शांति का देव खड्ग धारण करता है,
समझो खुद भगवान बुद्ध अर्जुन बनते हैं,
गुरु दशमेश उठाते हैं फिर से निज खंडा,
धारण करते चक्र-सुदर्शन खुद बापू हैं
क्योंकि युद्ध से त्रस्त धरा पर एक यही तो,
शांति बचाने का रास्ता बाकी है भाई !

यह तलवार उठी है तो समझो अब जल्दी,
वह बर्बर, बेशरम देश नत-मस्तक होगा,
जिस की राजनीति उस को यह सिखलाती है--
पहले मित्र बना कर पीछे छुरा घोंप दो।
जिस की नैतिकता में केवल यही एक 'गुण'
जो भी दूध पिलाए उसको ही डसना है।
वह कृतघ्न मानवता का ही शत्रु नहीं है,
निज सतानों के माथे का कलुष दाग है।

चीन, अगर तुम मानो तो इक कुटिल बाज है,
जिस को हर दिन नया मास अच्छा लगता है,
जो समीप के वृक्षों पर बैठी चिड़ियाएं,
देख-देख कर मन में ललचाया करता है,
कल उस ने तिब्बत की चिड़िया को पकड़ा था,
आज गरुड़ पर उस ने मोटे चोंच लगाई।
पर कोई भय नहीं कि अब वह जाग गया है,
और अमन की फाख्ता मुक्त शीघ्र ही होगी।
गगनों में अब रव, कोलाहल युद्ध मचा है,
दोनों अब पर तोल झपटते इक-दूजे पर।
विजय सत्य की होगी खुद भगवान कह गए,
कौन युद्ध में जीतेगा इस में क्या संशय?
आज देश का यौवन मचल रहा है फिर से,
एक-एक वर-वीर युवक हुंकार रहा है,
'जितना रक्त हिमालय मांगे उसको देंगे,
ताकि न कोई दुश्मन बच कर वापिस जाए।'

तुम पासबां वतन के, तुम कौम के सहारे !

श्री प्रकाश अम्बालवी

ऐ मादरे वतन पर तन-मन लुटाने वालो,
सीनों में जिन्दगी की शक्ति जगाने वालो,
जीवन के रास्तों की ज़ुल्मत मिटाने वालो,
आज़ादि-ए-वतन पर सर को कटाने वालो,
मेरा सलाम लेना,
मेरा सलाम लेना !

हर एक ज़र्रा तुम को है देवता वतन का,
नज़रों में है तुम्हारी हर फूल इस चमन का,
आबे-बका से बढ़कर तुम जानते हो इसको,
मिल जाए जो भी तुम को गंगो-जमन का कतरा।
मेरा सलाम लेना,
मेरा सलाम लेना !

जब तक हैं नूर-अफशां ये चांद औ' सितारे,
बरहम रवां रहेंगे ये रोशनी के धारे,
तुम पासबां वतन के, तुम कौम के सहारे,
यह देश है तुम्हारा, तुम देश के हो प्यारे,
मेरा सलाम लेना,
मेरा सलाम लेना!

राम कृष्ण की धरती से पीछे हट जाओ

श्री प्रेम प्रकाश

किसने आज मुकुट खींचा भारत माता का,
किसने आकर आज सिंह से आंख मिलाई!
किसने दिया आज आमन्त्रण महायुद्ध का,
किस पापी के पापों से धरती अकुलाई!

लगता है दानवता का दम भरने वाले,
आज हिमालय से आंधी बन टकराये हैं।
लेकिन यह गिरिराज हमारा शीश मुकुट है,
प्रलयंकर तूफान न जिसे झुका पाये हैं।

यह उस भारत के माथे का उज्ज्वल मोती,
जिसके बच्चों ने शेरों के दांत गिने हैं।
जिसके वीर शहीद झूलते थे फांसी पर,
दीवारों में जिसके बालक चुने गए हैं।

यह पावन धरती है गुरुगोबिन्द सिंह की,
यहां वीर बन्दा वैरागी ललकारा है।
यहां चला है राणा का दोधारा खांडा,
वीर शिवा ने यहां ज़ालिमों को मारा है।

राम कृष्ण की धरती से पीछे हट जाओ,
पागल बन कर चट्टानों से मत टकराओ।
वर्ना आग हिमालय से पीकिंग तक होगी।
प्रलय स्वयं अवतरित धरा पर हो जाएगी।

खड़ा मैं
दुश्मन की सेना से
अन्तिम सांस तक
लड़ूंगा,
क्योंकि
मैं मर नहीं गया हूं।

○

ओ मेरी मां !
ओ मेरी बहन !
ओ मेरे पिता !
यहां चीड़-देवदारों की
शीतल छांह नहीं है,
यहां मृत्यु है.....
देश के लिए समर्पित
एक मृत्यु !

और ऐसी मृत्यु को,
मेरे देशवासियो !
मैं अंगीकार करूंगा,
क्योंकि मुझे
ऐसी मृत्यु से प्यार है
क्योंकि मैं ऐसी मृत्यु के
पूर्व ही मर नहीं गया हूं।

○

मेरी मृत्यु के बाद
ओ मेरी मां !
मेरी बहन !
मेरे पिता !
बर्फ लदी इन खाइयों में,
बन्दूक देकर
मेरे छोटे भाई को
भेज देना
क्योंकि घर से
मेरी विदाई के समय
उसने तुतलाते स्वर में
कहा था—
"मुदे बी
ऐती मित्यु ते प्याल ऐ।"
[मुझे भी
ऐसी मृत्यु से प्यार है।]

रक्खेंगे बन्दूक भरी तय्यार

डा० प्रभाकर माचवे

तिब्बत एक मुसीबत में से
लामाशाही से जा गिरा
साम्यवाद तानाशाही में,
गर्म कडाही में से निकला, पडा आग में।
भारत के सीमा तट पर
यह आग भडकती बढी आ रही
आटोमेटिक बन्दूकों के पीछे
टिड्डी जैसे चीनी
मनुष्य जैसे चींटी कीडे और मकौडे
जख्मी हुआ, उतारी वर्दी
नंगा ही उस बर्फ-खड्ड में
छोड दिया। उस पर से जाते।
कुचलते हुए फौजी बूट।
शस्त्र गाडिया, बर्बर ऐसी नई राक्षसी ये सेनाए,
करेगी विश्व लाल या विश्व 'मुक्त'
क्या इसी लिए कन्फ्यूशस से
लाओत्से और मेन्शीयस से सान-मिन-यू सिद्धान्तों,
सन-यात-सेन आदि के
विश्व शान्ति के नारों तक
इतनी बडी बडी ये बाते
बढ-चढकर लम्बी चौडी थी ?

इसी लिए क्या एक प्रलम्बित
भिक्षु - परिव्राजक - पर्यटकों
हुएन स्वांग या फाहियान की
काश्यप मातंग या
परमार्थों की
एक मालिका
सहस्र वर्षों तक
हिम नग की कठिन घाटियों,
दर्रों में से, घने जंगलों,
खड्डों में से
गुजरी, कितने नष्ट हो गए ?
इसी लिए क्या बुद्ध-वचन वे
महायान बन दूर-दूर तक
पीली नदियां, अनुल्लंघ्य वह
पार बड़ी दीवार चीन की
कर के पहुंचे दूर
कोरिया वा जापान तक ?
आज नहीं शब्दों की कीमत
आज नहीं आश्वासन सार्थक
आज नहीं रह गया भरोसा
अक्षरा बलि जैसी ही
हेत्वाभासमयी वाणी का
तर्क-कुतर्क प्रचार-झूठ से भरा,
भावना का
यह थोथा शून्य प्रदर्शन !
सब कुछ केवल रात महाभय
बर्फीली मौत का हिमानी
सर्वनाशमय पंजा !
पर क्या हम ऐसे दुमुंहे
दोगले, दोहरे मन-वालों की
बात मानकर अपनी भू का
एक इंच भी हिस्सा
यों दबोचने देंगे ?
नहीं असंभव
नए वर्ष की यही प्रतिज्ञा
जब तक
हम न खदेड़ेंगे शत्रु को
अपनी मातृ-भूमि से
जब तक एक-एक
सैनिक परदेशी
इस भू-सीमा पर से न हटेगा
नहीं चैन हम लेंगे
सब विलास, सब सुख-सुविधाएं,
सब यह समय और धन का
अपव्यय हम छोड़ेंगे।
नव युग में
नव-निर्माण सुरक्षित होगा
नहीं अब कभी वैदेशिक
मीठी मुस्कानों, लम्बे-चौड़े
पंचशील के वादे हम मानेंगे।
रक्खेंगे बन्दूक भरी तैयार !
हँसेंगे ! ○

राम कृष्ण की धरती से पीछे हट जाओ

श्री प्रेम प्रकाश

किसने आज मुकुट खीचा भारत माता का,
किसने आकर आज सिह से आख मिलाई!
किसने दिया आज आमन्त्रण महायुद्ध का,
किस पापी के पापो से धरती अकुलाई!

लगता है दानवता का दम भरने वाले,
आज हिमालय से आधी बन टकराये है।
लेकिन यह गिरिराज हमारा शीश मुकुट है,
प्रलयकर तूफान न जिसे झुका पाये है।

यह उस भारत के माथे का उज्ज्वल मोती,
जिसके बच्चों ने शेरो के दात गिने है।
जिसके वीर शहीद झूलने थे फासी पर,
दीवारो मे जिसके बालक चुने गए है।

यह पावन धरती है गुरुगोबिन्द सिह की,
यहा वीर बन्दा वैरागी ललकारा है।
यहा चला है राणा का दोधारा खाडा,
वीर शिवा ने यहा जालिमो को मारा है।

राम कृष्ण की धरती से पीछे हट जाओ,
पागल बन कर चट्टानो से मत टकराओ।
वर्ना आग हिमालय से पीकिंग तक होगी।
प्रलय स्वय अवतरित धरा पर हो जाएगी।

वीरों का पालना रहा है सदियों से पंजाब

○

श्री बदरी नारायण दास

ब्रिगेडियर होशियार सिंह

प्रिय होते हैं फूल, खिलें वे किसी बाग या वनमें,
वीर कहीं ले जन्म सदा पूजे जाते जन-जनमें।
गाती है यह रावी, सतलुज, झेलम, व्यास, चनाब,
वीरों का पालना रहा है सदियों से पंजाब।

वह प्रदेश ही नहीं एक, वह तो उत्तर की ढाल,
अर्पित करता आया है वह नित नूतन जयमाल।
बसा किसी कोनेमें उसके एक गांव संखोल,
बता रहा है जग को भारत की मिट्टी का मोल।

होशियार सिंह जैसे लौह-पुरुषको देकर जन्म,
उसने रख ली परम्परा की लाज, राष्ट्रका धर्म।
उसका उज्ज्वल नाम हो गया अंकित नील गगन में,
भींग गयी तीर्थों की पावनता उसके रजकण में।

उसका लाल बन गया भारत का अनुपम आभूषण,
शूरो का अभिमान और नवयुवकोका आकर्षण।
जब उत्तर-पूरब मे लाल लुटेरे थे बढ आये,
शाति-भूमि पर महायुद्ध के काले बादल छाये।
तब वह खडा हुआ पशुना के आगे सीना तान,
हँस कर रहा जूझता जैसे लहरो मे चट्टान।
हत्यारो ने कर दी उमपर गोली की बौछार,
और देश के हाथो से गिर गयी एक तलवार।
हे सखोल! विवश, आहत मन मे ले जय का स्वप्न,
आज दूर तुमसे सोया है तेरा खोया रत्न।
इतिहासो मे अमर रहेगा वह बन गया शहीद,
विहँसेगे उसकी समाधिपर नित तारोके दीप।
उसके अस्थि-शेप से होगा वीरो का अवतार,
और रक्त-कण उसका चमकेगा बन नव-अगार।
गिरि-वन मे प्रतिध्वनि बन गूजेगा उसका हुकार,
उसकी कथा कहेगी युग-युग तक गगाकी धार।

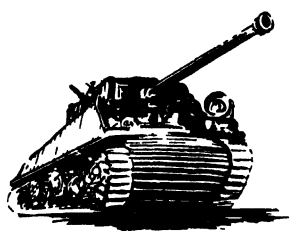

कर दो पल में अब चूर-चूर चीनी सपना

डा० बलदेव प्रसाद मिश्र

मैकमोहन की रेखा आधारित है जिस पर—
खींची निसर्ग ने वह हिमगिरि-लक्ष्मण-रेखा,
राष्ट्रीय संधि-पत्रों ने उस को मान दिया,
इतिहास सनातन ने साक्षी बन कर देखा!

उस सीमा को, उस लक्ष्मण-रेखा को, बल से—
चीनी शासन है आज मिटाने को तत्पर;
जो जग-विद्रावण रावण से हो सका नहीं—
वह कर पाएगा कलियुग का निशिचर क्यों कर!

साम्राज्यवाद का गृद्ध साम्य की खाल ओढ़—
विस्तार-हेतु डैने अपने फड़-फड़ा रहा;
सम्पाती ने रवि तक जा कर पर झुलसाए—
यह गृद्ध गलेगा यदि हिमगिरि पर खड़ा रहा!

दुनिया का जनमत, देखो, साथ हमारे है,
प्रभु का बल अपना, सत्य-न्याय का बल अपना;
चालीस करोड़ जनों की दृढ़ हुंकारों से—
कर दो पल में अब चूर-चूर चीनी सपना!

मरभुक्खों को जब घर में चारा मिला नहीं,
तब चारा बनने चले हमारी तोपों के;

हम निश्चय ही अपनी सच्ची बन्दूकों से—
उत्तर देंगे उन के झूठे आरोपों के !

तन दो, जिस से सेना की दृढ़ दीवार बने,
धन दो, जिस से सीमा पर तोपें छा जाएं,
मन दो, जिस से अपने पंजे घुसा बन कर—
दुश्मन के जबड़े तोड़ चलें दाएं-बाएं !

अपने ही सैनिक वीर जवानों की खातिर
तुम वस्तुदान दो रक्तदान दो, दाताओ !
अपनी ही रक्षा को यह दान तुम्हारा है,
सर्वस्व दान दो पूर्ण शक्ति से भ्राताओ !

हट जाए विपद-घटाएं, स्वच्छ हिमालय हो,
स्वातन्त्र्य-सूर्य अपना फिर से चमके उस पर
हम तब तक चैन न लेंगे जब तक दुश्मन को—
देंगे हम नहीं खदेड़ हिमालय से बाहर !

हमलावरो सावधान !

श्री बलवन्त मनराल

ओ चीनी हमलावरो !
सोच-समझ कदम बढ़ाओ
कण-कण स्वाभिमानी,
अति बलिदानी
यह वीर-प्रसू भारत-भूमि,
मत हम से टकराओ,
पंचशील के पोषक हम,
मानवता के महादूत हम,
विनाश के पोषक तुम
दानवता के द्योतक तुम,
यह युद्ध है
देवों और दानवों का,
और सुनो—
सदा दानवी शक्तियां मिटी हैं,
दैवी ताकतों ने विजय पाई है,
ओ मानवता के हत्यारो !
हम शांति-शांति चिल्लाते थे,
तुम ने हमें ललकारा ?
भूल गये क्या ?—
बुद्ध, अशोक, गांधी ही नहीं
इस धरती में प्रताप,
शिवा और बोस भी जन्मे,
गोरा-बादल औ' रत्नसेन
इस धूलि की महादेन
सांगा, अमर राज से अनेक
सुभट वीर बढ़कर एक से एक
पत्थर-पत्थर में चिनगारी
तृण-तृण में साहस भारी
महामानी-चिर-सम्मानी
वन्दनीय अजित गौरव-दूते,
जयति जय-जय
भारत-भूमि वीर प्रसूते ।
रक्तिम चेहरा, अरुण नेत्र
फटें तत्पर जलते शोले,
तलवार दुधारी
नागिन-सी मतवाली
उस पृथ्वीराज की
हर भारतवासी जय बोले ।
गिरिराज हिमालय !
भारत का उन्नत गौरव
शीश हमारा ऊंचा करता आया,
सदियों से प्रहरी बन
रक्षा करता आया ;
आज उसी पर

दुश्मन का अधिकार,
आततायी का भीषण प्रहार
आज वही गिरिराज
करता पुकार--
जागो ! जागो !
गाडीव की टकार,
भीमसेन की हुकार
जागे फिर अचूक चक्र-सुदर्शन,
पौरुष, प्रताप,
शिवा का प्रचड रण-नर्त्तन ।
शाति की बासुरी बजाता
देश कृष्ण का,
अब चक्र सुदर्शन तोले ।
रक्त को हर बूद,
हर साम देश को समर्पित,
भारत का हर बच्चा-बूढा बोले ।
सावधान !
ओ चीनी हमलावरो सावधान !
ओ, ह्वेनसाग-
फाह्यान की सन्तानो !
किसी जमाने आये थे,
तुम्हे सर-आखो लिया था,
स्वागत-सत्कार किया था ।
फिर आये--
हमने गले लगाया
भाई कहकर
जय-जयकार किया,
अब फिर आये हो--
तो देख लो !
दुश्मन बन कर भी देख लो !
सावधान !
ओ चीनी हमलावरो सावधान !
चाहे लाख करो लीपा-पोती
ओ दगाबाज मुल्क !
आज दुनिया के आगे--
तेरे रग खुल गये है,
तेरे ढग खुल गये है ,
ओ बेशर्म !
तेरी नगी देह पर
थूक रही है दुनिया,
आज तेरे
सारे पैबन्द खुल गये है ।
भारत को देखने आगे बढा था,
तो देख ले--
यह भारत की निर्धन विधवा
जिसने
लुके , छिपे, गढे धन को
मुसीबत के समय
काम आने वाली
खून की कमाई को,
और उस क्लर्क ने--
हड्डिया घिस कर पाये

सारे वेतन को,
देश के नाम खुशी से
अर्पित किया है।
यह मज़दूर--
अनवरत १८ घंटे काम कर रहा
ताकि उसके देश का
उत्पादन बढ़े,
और साथ ही प्राप्त
अतिरिक्त आय
देश की रक्षा में काम आये,
यह जवान--
खून से हस्ताक्षर कर
देश के लिए
मर-मिटने की शपथ लेता
मुझे मोर्चे पर भेजो!
मोर्चे पर भेजो!--
आवाज़ लगाता।
ये नन्हें बच्चे--
दुनियां की नज़रों में अबोध
दीवाली पर इन्होंने
फूलझड़ी-पटाखे-खिलौने
नहीं खरीदे
क्योंकि देश को ज़रूरत है--
करोड़ों की ही नहीं,
इन बच्चों के
आने-दो आनों की भी,

यह सत्तर वर्षीया वृद्धा--
जिसका बड़ा बेटा
देश की रक्षा करता
शहीद हो चुका
पर इस की आंखों में
आंसू नहीं
दहकती हुई चिनगारियां हैं,
वह मुट्ठियां तानकर
शिराएं कसमसाकर
अपने छोटे बेटे के माथे में--
लाल खूनी तिलक
लगाकर कह रही--
जा! जा! तू भी जा!
मेरी आत्मा को कल पड़े,
यदि सौ दुश्मनों को
मारकर मरे।
और पत्नी कह रही--
अपने रिटायर्ड फौजी पति से,
अपने सुहाग से--
तुम सत्रह रुपयों की खातिर
लड़ने काबुल-अफगानिस्तान
गये थे,
आज तो
मातृ-भूमि की पुकार है;
जाओ! शीघ्र जाओ!
घर में मरने से बेहतर--

सौ दुश्मन मिटाकर
चाहे खुद भी मर जाओ।
ओ कपटी!
ऐसे मुल्क पर हमला किया?
तो अब अपनी आखो
अपनी दुर्गति भी देख ले।
सावधान!
ओ चीनी हमलावरो सावधान!
सुई की नोक-भर भूमि के लिए—
हम शोणित की
वह धार बहा देगे,
कि श्वेत हिमालय
लाल हो उठेगा,
हम तेरे खून मे उसे रग देगे,
और लाशो का वह अम्बार
लगा देगे,
कि एक नया हिमालय बना देगे,
जब तक देश मे
जोगिन्दर सिह
और थापा मे वीर—
दुश्मन की
दाल नही गलने पायेगी।
जब तक एक भी जान,
एक भी खून की बूद—
दानवी सेना
आगे नही बढ पायेगी।
शूरवीरो की यह धरती—
पराधीन हो न सकेगी,
इसे बचाने, इसे सजाने—
हर भारतवासी ताडव जगायेगा,
हर बच्चा-बूढा
होगा वीर सिपाही!
सावधान!
ओ चीनी हमलावरो सावधान!

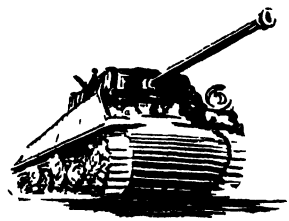

कवि कुछ ऐसी तान सुना दे, गूंज उठे रणभेरी घर-घर

श्री बशीर अहमद 'मयूख'

अर्सा गुजरा जब गुलाब का कफन ओढ़कर भंवरा सोया,
युग बीते जब मनका मजनूं लैला की जुल्फों में खोया,
नहीं नहाएगी चांदनियां निर्वसना नीले अम्बर में,
राह न देखे कोई राधा सांवरिया की किसी डगर में,

मत झनकारे किसी उर्वशी की पायल के घायल-से स्वर,
कवि कुछ ऐसी तान सुना दे, गूंज उठे रणभेरी घर-घर !

कालिय-मर्दन करे कन्हैया मानसरोवर की लहरों पर,
ताल और बेताल बिठाई सीमा-अंचल के पहरों पर,
भंग तपस्या कर न सकेगी आज मेनका पञ्चशील की,
फौलादी गोलियां बनेंगी अब सोने की कील-कील की,

खेतों में बारूद उगाने निकल पड़ा है मेरा हल-धर,
कवि कुछ ऐसी तान सुना दे गूंज उठे रणभेरी घर-घर !

पनघट की राधा के नूपुर रणभेरी में परिवर्तित कर,
वृन्दावन की वंशी के स्वर, शिव शंकर के डमरू में भर,
आज रुद्र के आवाहन का रास रचाते ग्वाल-बाल-जन,
भूगा दे रहे ताल तांडवी प्रलयंकर का खुला त्रिलोचन,

डिम-डिम-डिम-डिम डमरू बाजे नाच रहा रे भारत-शंकर,
कवि कुछ ऐसी तान सुना दे गूंज उठे रणभेरी घर-घर !

पचशील के कबूतरो को दाना चुगकर मत उड़ने दे,
विश्व-शान्ति की परिभाषा मे कायरता को मत जुडने दे,
तेरे स्वर पर समाधियो से निकल पडेगे टीपू, नाना,
निकलेगी झासी की रानी, निकलेगी रज़िया सुलताना,

हूणो के शोणित से भर देगे काली का खाली खप्पर,
कवि, कुछ ऐसी तान सुना दे गूज उठे रणभेरी घर-घर !

पृथ्वीराज लडेगा लेकिन साथ-साथ कवि चन्द लडेगा,
रावण-वध की हर चौपाई, भूषण का हर छन्द लडेगा,
हल्दीघाटी से उड-उड कर इतिहासो की धूल लडेगी,
अर्जुन का हर मोह लडेगा, दुर्योधन की भूल लडेगी,

फिर दे देगी हाडा रानी अमर निशानी शीश काटकर,
कवि, कुछ ऐसी तान सुना दे गूज उठे रणभेरी घर-घर !

कवि, तेरे शब्दो की स्याही से इतिहास लिखे जाते है,
कवि, तेरे स्वर पर मिटने को लाखो शीश चले आते है,
लौह-लेखनी से लिख देना रे कवि, उन वीरो का साका,
जो सीमा पर गए बाकुरे दूध चुकाने भारत मा का,

हूणासुर हत होगा निश्चित, है यह तेरा वरदानी स्वर,
कवि, कुछ ऐसी तान सुना दे गूज उठे रणभेरी घर-घर !

जिस
धरती
की
बेटी
ऐसी
मरदानी
है

उस धरती को है
कौन गुलाम बना सकता
?

राष्ट्र यज्ञ हो रहा आज वेला आई बलिदान की

श्री बाबूलाल शर्मा 'प्रेम'

राष्ट्र-यज्ञ हो रहा आज, वेला आई बलिदान की,
जाग उठी लेकर अगडाई धरती हिन्दुस्तान की !

रणभेरी बज उठी, चल पडी बहादुरो की टोलिया,
गूज उठी है दिशा-दिशा मे जय भारत की बोलिया,
उमड चला पौरुष का पारावार न कोई रोकना,
बढने वाले का उत्साह बढाना है, मत टोकना।
चमक उठी कण-कण चिनगारी आज आत्म-सम्मान की,
जाग उठी लेकर अगडाई धरती हिन्दुस्तान की !

गगा-जमुना की माटी को, माटी कभी न मानना,
ब्रह्मपुत्र की घाटी को तुम, घाटी कभी न जानना,
अमर शहीदो के माथे का चन्दन इसकी धूल है,
मातृ-भूमि पर न्योछावर होते सब इसके फूल हैं।
तृण-तृण से आवाज यहा आती है अब अभियान की,
जाग उठी लेकर अगडाई धरती हिन्दुस्तान की।

उठो हिमालय विन्ध्याचल की गूज रही ललकार है,
भारत माता के गौरव से परिचित सब ससार है,
आज शत्रु के लिए काल है बच्चा-बच्चा देश का,
उत्तर देना है दुश्मन के अहकार, आवेश का।
स्वतत्रता की बलिवेदी पर, बाजी जीवन प्राण की,
जाग उठी लेकर अगडाई धरती हिन्दुस्तान की।

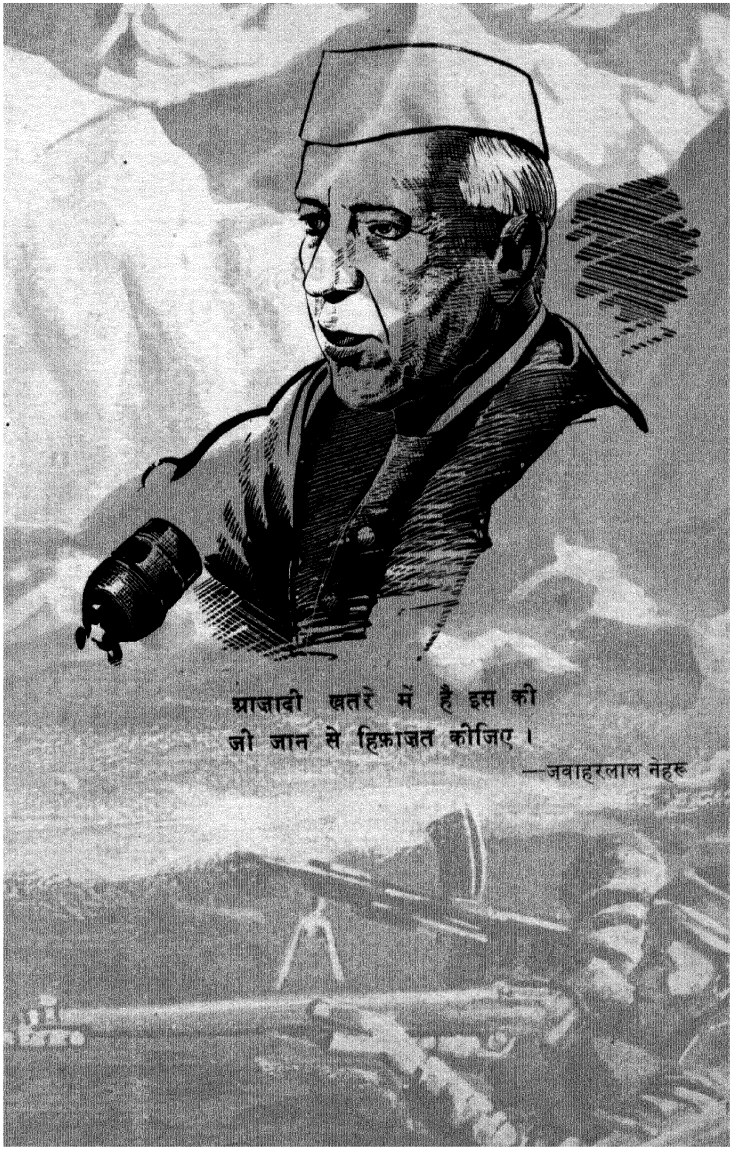
आजादी खतरे में है इस की
जी जान से हिफ़ाजत कीजिए।
—जवाहरलाल नेहरू

माथों की भेंट चढ़ायेंगे, फिर मां ने हमें पुकारा है

श्री बाल स्वरूप 'राही'

'आज़ाद रहो या मर जाओ'
अब यही हमारा नारा है ।

भारत का मुकुट हिमालय है, हम सब के लिए शिवालय है,
चीनियो, न लाघो यह सीमा यह लक्ष्मण-रेख हमारी है ।

है तपोभूमि मुनि-ऋषियों की यह तिब्बत या कोरिया नही,
जिसने भी इसको किया मलिन वह शत्रु आज तक जिया नही।

ले अपने प्राण हथेली पर हम सिर पर बाधे हुए कफन,
स्वागत के लिए उपस्थित हैं, स्वीकार करो यह आमत्रण ।

कुछ सोच-समझ कर चरण धरो, मत आत्मघात का वरण करो,
गल कर लावा बन जायेगी, यह बर्फ नही, चिनगारी है ।

हम जन्म-जात अभिमानी है, मत समझो भाल झुका देगे,
कितनी ही महगी मिले विजय शीशो से मोल चुका देगे ।

'मरना तो वस्त्र बदलना है' यह हमें सिखाती गीता है,
यह देश यहा का हर क्षत्री, बस बरस अठारह जीता है ।

इतिहास हमारा सुनो, पढो फिर तुम हिमगिरि की ओर बढो,
तुम आराधक हो अजगर के तो भारत गरुड-पुजारी है ।

तुम जन-समुद्र का ज्वार लिये अच्छा है, भारत पर उमडे,
प्यासे अगस्त्य जाने कब से चुल्लू फैलाये हुए खडे ।

थक गये लास्य कर महादेव अब ताडव-नृत्य रचायेंगे,
भू—गगन—रसातल—देवलोक हर दिशि मे प्रलय मचायेंगे ।

तब पाओगे तुम त्राण कहा ले जाओगे निज प्राण कहा,
डमरू ही नही मात्र कर मे भाला भी एक दुधारी है ।

पीने को मिल न सकेगा जल खाने को कौर नही देगे,
मर जाओगे तो दफनाने को गज भर ठौर नही देगे ।

मायो की भेट चढायेगे फिर मा ने हमे पुकारा है,
'आजाद रहो या मर जाओ' अब यही हमारा नारा है ।

बच्चा-बच्चा जायेगा मर, देगे न मगर धरती कण भर,
आखिरी हमारी ही होगी यदि पहली जीत तुम्हारी है ।

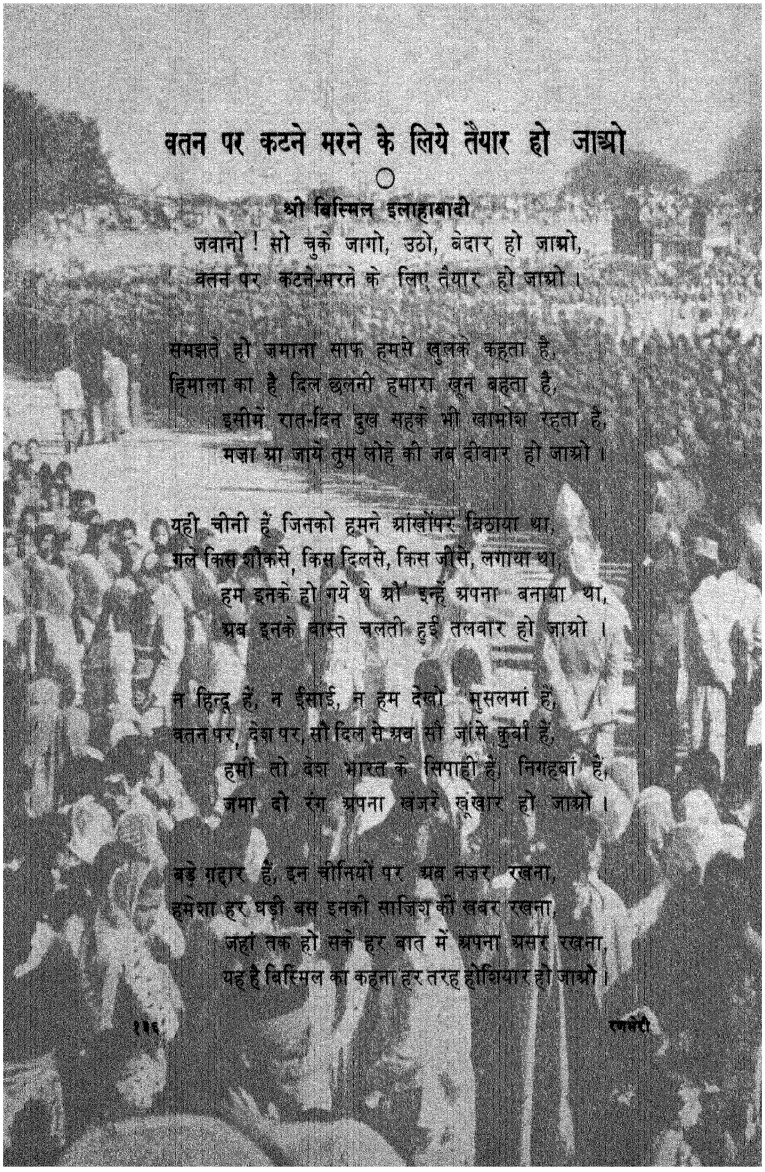

वतन पर कटने मरने के लिये तैयार हो जाओ

श्री बिस्मिल इलाहाबादी

जवानो ! सो चुके जागो, उठो, बेदार हो जाओ,
वतन पर कटने-मरने के लिए तैयार हो जाओ ।

समझते ही जमाना साफ हमसे खुलके कहता है,
हिमाला का है दिल छलनी हमारा खून बहता है,
इसीमें रात-दिन दुख सहके भी खामोश रहता है,
मजा आ जाये तुम लोहे की जब दीवार हो जाओ ।

यही चीनी हैं जिनको हमने आखोंपर बिठाया था,
गले किस शौकसे, किस दिलसे, किस जीसे, लगाया था,
हम इनके हो गये थे औ इन्हें अपना बनाया था,
अब इनके वास्ते चलती हुई तलवार हो जाओ ।

न हिन्दू हैं, न ईसाई, न हम देखो मुसलमां हैं,
वतन पर, देश पर, सौ दिल से अब सौ जांसे कुर्बां हैं,
हमीं तो देश भारत के सिपाही हैं, निगहबां हैं,
जमा दो रंग अपना खंजरे खूखार हो जाओ ।

बड़े गद्दार हैं, इन चीनियों पर अब नजर रखना,
हमेशा हर घड़ी बस इनकी साजिश की खबर रखना,
जहां तक हो सके हर बात में अपना असर रखना,
यह है बिस्मिल का कहना हर तरह होशियार हो जाओ ।

सिरों को बैरियों के तुम पिरोने के लिए आओ !

श्री बेढब बनारसी

बढ़ो वीरों की संतानो तुम्हारी है विजय निश्चित ।

जवानो, देशपर बलिदान होने के लिए आओ,
लहूसे अपनी तलवारों को धोने के लिए आओ !

पड़ी है देशकी स्वाधीनता खतरे के सागर में,
लिये साहस की नौका उसको ढोने के लिए आओ !

करो तर बैरियों के दामनों को रक्त से उनके,
उन्हीं के रक्त से उनको भिगोने के लिए आओ !

बनाओ मुण्डमालाएं, खड़ी सीमा पै है काली,
सिरों को बैरियों के तुम पिरोने के लिए आओ !

जवानो, भीम बन जाओ, जवानो, तुम बनो अर्जुन,
बनो तुम भीष्म, तुम तीरों पै सोने के लिए आओ !

बहुत दिन पर मिला है बल दिखाने का तुम्हें अवसर,
विजय डंका बजाने कोने-कोने, के लिए आओ !

बढ़ो वीरों की सन्तानो, तुम्हारी है विजय निश्चित,
विजय-जयमाल तुम 'बेढब' संजोने के लिए आओ ।

नया राग छेड़ दो, चीन को खदेड़ दो

श्री बेधड़क बनारसी

शत्रु खड़ा द्वार पर, अब न जरा देर कर
तुम जवान बेखबर, तुरत उलट-फेर कर
जाल वह उखेड़ दो, चीन को खदेड़ दो ।

जाग उठी भारती, मा तुम्हें पुकारती
कवच में सँवारती, आरती उतारती
नया राग छेड़ दो, चीन को खदेड़ दो ।

मान-दण्ड आज का, उस नगाधिराज का
घोष पुण्य काज का, नव-युवक समाज का
काम है निबेड़ दो, चीन को खदेड़ दो ।

आज राष्ट्र है जगा, खून खौलने लगा
युद्ध के लिए पगा शक्ति तोलने लगा
शत्रु को उधेड़ दो, चीन को खदेड़ दो ।

दिल टटोलता रहा, झूठ बोलता रहा
द्वार खोलता रहा, जहर घोलता रहा
इसे बना भेड़ दो, चीन को खदेड़ दो ।

क्यों इसे विवेक दो, क्यों सलाह नेक दो
भीम शक्ति टेक दो, तुम उठा के फेंक दो
खाल ही उधेड़ दो, चीन को खदेड़ दो ।

समर जानकर चलो, समर-गान कर चलो
वज्र तान कर चलो, आत्म-दान कर चलो
नया राग छेड़ दो, चीन को खदेड़ दो ।

हिमगिरि के कण-कण बदल रहे अंगारों में

श्री ब्रजेन्द्र अवस्थी

हिमगिरि के कण-कण बदल रहे अंगारों में,
लोहित उफनाता है लोहित की धारों में।
आ रही चुनौती दुश्मन की ललकारों में,
है तीव्र गर्जना मां की व्यग्र पुकारों में!

रण के अभियानों का आह्वान हो रहा है,
प्रणवीर जवानों का आह्वान हो रहा है।
सामरिक किसानों का आह्वान हो रहा है,
रक्तिम बलिदानों का आह्वान हो रहा है!

आया अवसर है मां की लाज बचाने का,
जो दूध पिया है उतना खून बहाने का।
दंभी का उकसा हुआ घमण्ड मिटाने का,
भारत पर तन-मन-धन सर्वस्व चढ़ाने का!

टैंकों की फुफकारों का उत्तर देना है,
घहराते मार्टारों का उत्तर देना है।
बैरी की हुंकारों का उत्तर देना है,
गोली की बौछारों का उत्तर देना है!

हम तो मर-मर कर अमर बने मतवाले हैं,
अविनाशी मृत्युंजय कहलाने वाले हैं।

जब कालकूट के घूँट-घूँट पी डाले हैं
तो चीनी शर्बत पीने में क्या लाल है।

दुर्मद चाऊ ने नीति कपट की पाली है
उस का कोई भी प्रश्न न जाता खाली है।
तुम पर प्रणवीरो, भारत की रखवाली है
नेहरू ने भी कर में तलवार उठा ली है।

कौरव दल ने फिर ताण्डव-शोर मचाया है
दुर्योधन ने दुःशासन का बल पाया है
गाण्डीव उठाने का फिर अवसर आया है
घर के राधाकृष्णन ने शंख बजाया है।

शंकर गजेन्द्र प्रसाद देश के मतवाले
बलिदानी भारत फिर बलिदानी बन डाले।
हर नौजवान उर में वह ज्वाला धधका ले
जो लाई को लाई की तरह भून डाले।

शोणित में माँ के चरण जिन्होंने धोए हैं
शिव की माला में अपने मुण्ड पिरोए हैं।
जो कई हजार जवान देश ने खोए हैं
तो हिमपातों का कफ़न ओढ़ कर सोए हैं।

उन के प्रतिशोधी प्राण वहीं मँडराते हैं
वे आश लगाए, नहीं स्वर्ग को जाते हैं।

देखें ! कैसे हम रिपु से भूमि छुड़ाते हैं,
कैसे हम वीरों का प्रतिशोध चुकाते हैं।

यदि युद्ध भयानक प्रलयानल धधकाएगा,
यदि प्रश्न गुलामी या कि मौत का आएगा।
तो भारत का बच्चा-बच्चा कट जाएगा,
लेकिन यह देश गुलाम न बनने पाएगा !

तेरे कपटों की दाल न गलने पाएगी,
जलती पौरुष की ज्वाल न ढलने पाएगी।
अंगुलियों वाली चाल न चलने पाएगी,
चाऊ तेरी खलनीति न फलने पाएगी !

तू फाहियान की वाणी का आसक्त नहीं,
तू ह्वेनसांग की सच्चाई का भक्त
सनयातसेन के गौरव में अनुरक्त नहीं,
लगता है तुझ में पुरखों का ही रक्त नहीं

जो असमय समझौते की बात चलाएगा,
रण की वेला में कायरता दिखलाएगा।
वह भारत का जाफर, जयचन्द कहाएगा,
गद्दार मौत कुत्ते की मारा जाएगा !

हिन्द-मुसलिम सब अपने अपने स्वर में [illegible]
अवसर है भारत के बेटे अब सर देंगे

मा के पद में तन-मन-धन जीवन धर देगे,
उस के ऊपर सब कुछ न्योछावर कर देगे !

बहनें भाई को, रण-किकण पहनाएगी,
माताए इकलौतो को कवच सजाएगी।
वधुए पतियो के रण के तिलक लगाएगी,
बालाए जलती ज्वालाए बन जाएगी !

जो रण मे अपने पति बलिदानी भेजेगी,
चूडावत की प्रेरणा पुरानी भेजेगी।
सिर काट-काट रण की अगवानी भेजेगी,
हाडारानी की तरह निशानी भेजेगी !

जब तक कोई चेतनता मन मे बाकी है,
जब तक तिल भर भी निश्चय प्रण मे बाकी है,
जब तक कि रक्त-सीकर भी तन मे बाकी है,
जब तक कोई भी कण जीवन मे बाकी है,

तब तक मा का सम्मान नही जाने देगे,
तब तक भारत का मान नही जाने देगे।
तब तक स्वदेश की शान नही जाने देगे,
कण-भर भी हिन्दुस्तान नही जाने देगे !

अर्जुन का गांडीव अभी तो जगा हुआ है

श्री भगवत शरण चतुर्वेदी

आज एक खत और लिख रहा हूं मैं तुझको,
मेरा अन्तिम फर्ज़ मुझे ललकार रहा है।
मेरा खून उबलता तूने कभी न देखा--
जिस में दुश्मन के प्रति भी सत्कार रहा है।

मेरे दुश्मन ! तुझे दुश्मनी ही आती है,
दिल से दिल का प्यार निभाना तू क्या जान ?
तेरी मुंदी मुंदी आंखों का ये मुर्दापन--
खून और शबनम का अन्तर क्या पहचाने ?

लेकिन मेरा देश कि जिसकी आंखें ऐसा,
जब तक काजल लगा हुआ है, कजरारी हैं
जिन में सावन है, फागुन का अल्हड़पन है--
जो फूलों की रंगत जैसी मतवारी हैं।

लेकिन जब तक पलक झुके हैं, झुके हुए हैं,
किन्तु अगर खुल गए, भयंकर हो जावेंगे।
तुझ को कैसे समझाऊं मैं, दूर देश के
यहां प्यार के पूजक, शंकर हो जावेंगे।

जिनकी आंखें खुलीं प्रलय फिर मच जाएगी,
दुनिया का शीतल जल ज्वाला बन जाएगा।

अगर किसी ने बदनीयत से भारत देखा—
हर चलता इन्सान शिवाला बन जाएगा ।

यह मेरा वह देश, कि जिस के हर आगन ने—
अन्यायी की लाशो से यह धरती पाटी ।
कुरुक्षेत्र की अभी जवानी जली नही है—
अब तक जिन्दा मचल रही है हल्दीघाटी ।

अर्जुन का गाण्डीव अभी तो जगा हुआ है,
जगा हुआ है राणा का मनवाला भाला ।
वीर राम का तीर नहीं सो पाया अब तक—
अभी कृष्ण का चक्र उगलता जाता ज्वाला ।

वेदव्यास की वाणी अब भी गूज रही है—
'कर्म करो, लेकिन फल की अभिलाषा त्यागो !'
तुलसी का वह दर्शन अब भी बोल रहा है—
'आततायी को मारो, मेरे साथी जागो ।'

लेकिन तुझ को पता नहीं है ओ अधियारे,
मेरा तुझ से सदियो पहले का नाता है ।
मुझे शरम है केवल उस ही रिश्ते की बस—
क्योकि मुझे सम्बन्ध निभाना भी आता है ।

मेरी प्यारी सीमा को हथियाने वाले,
मेरे तन को अपना यो बतलाने वाले !

अपनी एक झूंठ को सच करने की खातिर--
दुनिया का इतिहास अरे झुठलाने वाले !

बेजुबान सीमा से पीछे हट कर देखो,
कुछ मुखरित सीमाएं तुझ को बुला रही हैं ।
जो अपने उस छिपे-झांकते यौवन की हैं--
पूजा में सिन्दूरी दीपक जला रही हैं ।

तू अपनी कुछ भूलों को छोटी कह देगा,
किन्तु अगर इन्सान मर गया, तो क्या होगा ?
अगर पलकें मुंदते ही वह सिन्दूर पुंछ गया--
खिलने वाला फूल झर गया, तो क्या होगा ?

अगर पायलें बजते बजते टूट गईं, तो
अगर खनकते कंगन ये नीलाम हो गए ।
अगर चहकते आंगन सब शमशान बन गए--
और प्यार के प्यासे गर बदनाम हो गए ।

तो तेरी खुदगर्ज़ी को हम दफना देंगे,
तुझ को हम इन्सान परस्ती सिखला देंगे ।
बहुत सुना होगा तूने शेरों की बाबत--
सोया शेर जगा हम तुझको दिखला देंगे ।

अभी वक्त है, अपने घर वापिस जाने का,
अभी वक्त है, अपनी लज्जा रखवाने का ।

अभी वक्त है, गल्ती मे सुधार करने का,
अभी वक्त है, उलझी गुत्थी सुलझाने का ।

मुझे अगर डर है तो केवल इतना ही है,
तेरी गल्ती से ये समय निकल जाए ना ।
तुझ को सबक सिखाने के मसूबे मे ही—
दुनिया का यह नक्शा कही बदल जाए ना ।

इसी लिए मै तुझे वक्त मे बता रहा हू,
इसी लिए मै तुझे पत्र ये पठा रहा हू ।
मुझे बुद्ध की बहुत अहिमा प्यारी है—
इसी लिए मै तुझे खून से उठा रहा हू ।

तू सम्हलेगा, बहुत जिन्दगी बच जाएगी,
कितनो के जलते सुहाग फिर मुसकाएगे ।
कितने ही मासूम जिन्दगी फिर जी लेगे—
फिर किसान खेतो मे मस्ती से गाएगे ।

किन्तु ध्यान इतना तो तू फिर भी रख लेना,
अगर बढा आगे तो हस्ती मिट जाएगी ।
अपनी आजादी को कायम रखने भर को—
मेरी हर जिन्दगी झूम कर कट जाएगी ।

तुम हो चीन तो हम प्राचीन

श्री भरत व्यास

आज हिमालय की छाती पर छुप कर किस ने वार किया ?
अमरनाथ के पथ पर किस ने रण का रथ तैयार किया ?
किसने दिल्ली को ललकारा, किस ने कुटिल विचार किया ?
किस ने गंगा-यमुना की शीतल लहरों को ज्वार किया ?
प्रश्न यही तो उत्तर सुन !
इतिहास हमारा अर्वाचीन,
भूल न शब्दों की समर्थता,
तुम हो चीन तो हम प्राचीन !

'सत्यमंव जयते' वाला यह राष्ट्र शांति का प्यासा है।
'पंचशील' की हरदम मन में रखता यह अभिलाषा है।
किन्तु आक्रमणकारी की यदि कूटनीतिमय भाषा है।
'जंग' 'यद्ध' शब्दों की यहां भी तुझ-सी ही परिभाषा है।
चीन नहीं है नाम तुम्हारा
नाम 'पराई धरती छीन'
भूल न शब्दों की समर्थता
तुम हो चीन तो हम प्राचीन?

सन्तों के सन्देश यहां तो वीरों के हैं धरोहर भी।
'मीरा' के हैं गीत यहां तो पद्मिनियों के जौहर भी।
शांति-क्रान्ति का देश यहां गौ-माता और नाहर भी।
रामकृष्ण की भूमि यहां श्री विनोबा और जवाहर भी।

दुश्मन को घर से खदेड के
राष्ट्र हुआ है यह स्वाधीन
भूल न शब्दो की समर्थता
तुम हो चीन तो हम प्राचीन!

पेकिंग का पैकिंग कर लो यह अष्टग्रहो की राशि है।
जिस भूमि पर विचर रहे उस पर शकर अविनाशी है।
शकर प्रलयकर त्रिपुरारी कही त्रिशूल उठा लेगा।
भस्म लगाने वाला है वो तुम्हे भस्म कर डालेगा।

तुम तीनो मिलकर आए
तो उनकी भी है आखे तीन
भूल न शब्दो की समर्थता
तुम हो चीन तो हम प्राचीन!

अभय गान

श्री भवानी प्रसाद मिश्र

तू किसे देगा अभय
जो खुद हुआ दिलगीर मन !
लौ जगेगी क्या
अगर टपकाएगा तू नीर मन !

दर्द है भीतर
तो अपने दर्द की कीमत चुका,
प्यार की डोरी से अपने
प्राण का धनु ही झुका,
छोड़ दे विश्वास के
इस पर चढ़ाकर तीर मन,
तू किसे देगा अभय
जो खुद हुआ दिलगीर मन !

घन अन्धेरी
अग्नि बानों के बिना
कटनी नहीं,
जुल्म की छाती
मशक्कत के बिना
फटनी नहीं,
उठ खड़ा हो तू
अकेला ही निराशा चीर मन !
तू किसे देगा अभय
जो खुद हुआ दिलगीर मन !

प्यार है सच से
तो अपने काम में उसको उतार
है बहुत मुमकिन
कि दो-एक बार तू जाएगा हार
जीत की लेकिन खिचेगी
एक दिन तस्वीर मन !
तू किसे देगा अभय
जो खुद हुआ दिलगीर मन ।

काम से ताकत बढ़ेगी
काम से सूझेगी बात
काम की किरनों से
क्या खा कर भला जूझेगी रात
काम का सूरज
तेरे हाथों में तू है मीर मन !
तू किसे देगा अभय
जो खुद हुआ दिलगीर मन !

मांग रहा है देश जवानो तुम से फिर कुर्बानियां

श्री भाग सिह

माग रहा है देश जवानो ! फिर तुम से कुर्बानिया,
तुम को अपना खून बहा कर लिखनी नई कहानिया ।

फिर तलवारो की धारो पर तुम को नाच दिखाना है,
अगारो पर चलना है और आगे बढते जाना है ।
सागर से लोहा लेना औ' पर्वत से टकराना है,
कर दो तुम भारत हित अर्पण अपनी शोख जवानिया ।
माग रहा है देश जवानो तुम से फिर कुर्बानिया !

सुन लो मेरी बहिनो तुम मे भी मुझ को कुछ कहना है,
सोने के गहनो मे बेहतर बन्दूको का गहना है ।
सगीनो के साये मे तुम को दुश्मन से कहना है,
गूज रही है घर-घर मे, झासी की अमर कहानियां ।
माग रहा है देश जवानो तुम से फिर कुर्बानिया !

आज हमे अपनी माता के पय का मोल चुकाना है,
शान्तिका गीत भुलाकर हमे अब रण का बिगुल बजाना है ।
जालिम हमलावर को अब करनी का मजा चखाना है,
आज नही करने देगे हम दुश्मन को मन-मानिया ।
माग रहा है देश जवानो तुम से फिर कुर्बानियां !
तुम को अपने खून से लिखनी है फिर नई कहानिया ।

राजपूत बुंदेला जागा, सिक्ख, गोरखा जागा

श्री भारतभूषण अग्रवाल

सत्य अहिंसा और न्याय के बल पर ले आजादी,
दूर कर रहे थे हम अपने जीवन की नाशादी।
लगे हुए थे निर्माणों में तन से, धन से, मन से,
ऐसे में यह ज्वाल जंग की क्यों तुमने सुलगा दी?

बात-चीत का जाल बिछा कर देकर लाख भरोसे,
शान्ति और मैत्री के सपने तुमने पाले पोसे।
और देख कर हमें व्यस्त फिर छल से धावा बोला,
क्यों न आज फिर दुनिया का दिल तुम को जी भर कोसे।

अन्धे और स्वार्थी हो तुम, मित्र भला क्या होते,
जिनके मित्र बनोगे उनका जन्म जाएगा रोते।
पर बेशर्मो! तुम्हें शत्रु भी बनना हाय न आया,
घुसे चोर से घर में जब हम रहे चैन से सोते।

ओ निर्लज्ज लुटेरो, तुम को किस भ्रम ने भरमाया,
भला बात क्या सोची जो यों सोता शेर जगाया।
पूछ ऐंठने का अब तुमको पूरा मजा मिलेगा,
एक हाथ पड़ गया अगर तो होगा तुरत सफाया।

पहले गला फाड कर बोले—हम सब भाई भाई,
फिर कैलाश हिलाकर बोले आओ करो लड़ाई।

त्रेता युग मे भी ऐसा ही हुआ एक अज्ञानी,
जिसने यह कैलाश उठाकर अपनी मौत बुलाई।

भारत की रमणीक घाटिया, भारत के गिरि कानन,
तुमने सोचा, हथिया लोगे इनको आनन-फानन।
पचशील की हँसी उडाने वालो आखे खोलो—
अब भारत के पच आ रहे है बनकर पचानन।

एक हाक पर लो भारत का बच्चा बच्चा जागा,
राजपूत, बुन्देला जागा, सिख, गोरखा जागा।
तुम्हे पराठा कर देने को जागा वीर मराठा,
हुकारो से गगन गुजाता जाग उठा है नागा।

पजाबी, मद्रासी, सिन्धी, मलयाली, गढवाली,
मजा चखाने को आते है गुजराती बगाली।
कान पकड कर चाओ-माओ बैठक-उठक करेगे,
भेड बना करके रख देगी कामरूप की काली!

चाओ से कह दो, जैसे हो अपनी जान बचाओ,
माओ से कह दो तुम अपना सारा दम अजमाओ।
तूफानी कदमो से आती है भारत की सेना,
भला चाहते हो तो इसके रस्ते से हट जाओ।

कदम कदम पर धूम मचाते, सिर से कफन लपेटे,
भारतीय बढते आते है अपनी शक्ति समेटे।
तोड झूठ का जाल तुम्हारा झूठो के सरताजो,
'सत्यमेव जयते' सिखलाएगे बापू के बेटे!

राष्ट्र-सुरक्षा के हित सोया देश जगाते बढ़े चलो

श्री मदनगोपाल सिंहल

यह अपनी मँगलमय धरती
जहां राम ने जन्म लिया ।
जहां पूर्ण अवतार कृष्ण ने
गीता का उपदेश दिया ।।
जिसके एक-एक कण में
देवों का नित्य निवास है ।
'गंगा, गय्या, गायत्री'-सी
सम्पति जिसके पास है ।।
पुण्य भूमि यह, इस धरती को शीश झुकाते बढ़े चलो ।
इसकी रज का निज मस्तक पर तिलक लगाते बढ़े चलो ।।

देखो, इसकी सीमाओं पर
कौन बढ़ा वह आ रहा ।
बुरी नियत से जल्दी-जल्दी
अपने पैर बढ़ा रहा ।।
इधर देश में जयचन्दों की
लम्बी खड़ी कतार है ।
भारत की रक्षा का युवको !
अब तुम पर ही भार है ।।
अपनी निश्चित सीमाओं पर दृष्टि अड़ाते बढ़े चलो ।
लक्ष्मण-रेखा-सी उन सबमें अनिल बसाते बढ़े चलो ।।

जो अपनी सीमाए लाघे
उन पैरो को तोड दो ।
जो भी तुमसे आख मिलाए
उसकी आखे फोड दो ।।
मा पर हाथ उठाए जो, तुम
उसके हाथ मरोड दो ।
शिव के मुण्डमाल मे उन
सबके मुण्डो को जोड दो ।।
हर-हर महादेव के रव से व्योम गुजाते बढे चलो ।
एकलिग की, महाकाल की जय चिल्लाते बढे चलो ।।

सोने वालो !! राणा की—
तुमको हुकार जगा रही ।
शिव राजा की खड्ग भवानी
की झकार जगा रही ।।
सिक्खो ! जागो गुरुओ की
तुमको ललकार जगा रही ।
जाग-जाग सोने वालो को
बारम्बार जगा रही ।।
जागो, विघ्न और बाधाए दूर हटाते बढे चलो ।
सिन्धु पाटते और हिमालय-शिखर झुकाते बढे चलो ।।

जागो रजपूतो ! निद्रा की
उठो खुमारी छोड दो ।
धरी सिरहाने यह अफीम की
प्याली अपनी छोड दो ।।

बप्पा, सांगा, कुम्भा, चण्ड
राणा प्रताप का नाम लो ।
जंग हटाकर प्रखर भुजाली
को हाथों में थाम लो ।।
अपनी रण-हुंकारों से तुम भूमि कँपाते बढ़े चलो ।
बढ़ने वालों के कदमों से कदम मिलाते बढ़े चलो ।।

तुलाधरो ! अब तुला हाथ से
धर दो शस्त्र संभाल लो ।
रणचण्डी के आवाहन पर
हाथों में करवाल लो ।।
यह अवसर फिर नहीं मिलेगा
थैली के मुंह खोल दो ।
राष्ट्रदेव के साथ-साथ जय
भामाशाह की बोल दो ।।
मां की सेवा में अपना, सर्वस्व लुटाते बढ़े चलो ।
उठो देश के कण-कण को तुम शीश नवाते बढ़े चलो ।।

शिल्पी ! आलस्य छोड़ दो
मत पल-भर विश्राम लो ।
हाथों में तुम अस्त्र बनाने
का पावनतम काम लो ।।
आज युद्ध की इस बेला में
'है आराम हराम' रे ।
'काम, काम, बस काम करो'
इस युग का यह पैग़ाम रे ।।

बढने वालो की राहो मे फूल बिछाते बढे चलो ।
सभी सैनिको के हाथो मे शस्त्र थमाते चढे चलो ।।

माताओ ! आरती उतारो
हमको अतिम प्यार दो ।
बहनो ! आगे बढो हमारे
हाथो मे तलवार दो ।।
यह युग-युग की रीति पुरानी
इसे भूल मत जाना री !
देख हमे मरने को जाना
नयन-नीर मत लाना री ।।
हँसते-हँसते ये ही कहना---'रे मुसकाते बढे चलो ।
कवच हमारी आशीशे है तुम तो गाते बढे चलो ।।

इसका रखना ध्यान सदा तुम
वीरो की सतान हो ।
देखो कभी न जीवित रहते
खण्डित मा का मान हो ।।
बढ़ते जाना सम्मुख चाहे
फौलादी चट्टान हो ।
कदम न पीछे पडने देना
अंधड या तूफान हो ।।
बढ़ो, बढ़ो, जन-जन के मन में ज्योति जलाते बढे चलो ।
राष्ट्र-सुरक्षा के हित सोया देश जगाते बढे चलो ।।

ओ देश के मेरे जवान !

श्री मधुर शास्त्री

चन्द्रमा ओझल न हो जाए,
सूर्य ठंडा जल न हो जाए,
इस लिए ओ देश के मेरे जवान !
आज तो सिर पर उठा ले आसमान !

राह तेरी देखती हैं आंधियां,
बिजलियां तेरे पगों में खेलतीं,
ये भुजाएं सिंधु मथती हैं सदा–
वार कितने ही समय के झेलतीं !
वीरता वह याद हो आए,
शत्रुता बरबाद हो जाए,
इस लिए ओ देश के मेरे जवान !
फिर उड़ा संसार पर अपने विमान!

आग की ज़ंजीर में आज़ाद हो–
तू चिता में मुस्कराता फूल है,
फूल है तो शीश पर चढ़, अन्यथा–
पांव के नीचे धरा की धूल है !
मृत्यु भी अभिमान बन जाए,
जन्म भी वरदान बन जाए,
इस लिए ओ देश के मेरे जवान !
तीर बन कर फोड़ दे काला निशान !

जीत कर सौन्दर्य मन का विश्व मे,
साथ ही तन की विजय भी चाहिए,
गूजता है सत्य यह इतिहास का
जन्म लेने को प्रलय भी चाहिए !
सास हर तूफान हो जाए,
देश आलीशान हो जाए,
इस लिए ओ देश के मेरे जवान !
आज फिर बन जा हिमालय-सा महान !

एक हो कर भी अकेला तू नही,
साथ तेरे प्रेम औ' विश्वास है,
तू बहुत कोमल कमल-सा है, मगर—
वज्र-जैसा वक्ष तेरे पास है !
खेत औ' खलिहान भर जाए,
देह को बलवान कर जाए,
इस लिए ओ देश के मेरे जवान !
जाग, बन मजदूर मेहननकश किसान !

जागो हे सांगा के वंशज वीर शिवा जी की संतान

श्री मनोहर प्रभाकर

आज युगों के बाद किया है पुनः हिमालय ने आह्वान,
जागो हे सांगा के वंशज ! वीर शिवा जी की सन्तान !

उत्तर की सीमा पर फिर से फन फैलाते काले नाग,
गूंज उठा कण-कण में फिर से रण का रौद्र भैरवी राग;
मुखर हो रहे इतिहासों के पृष्ठ पुरातन फिर से आज:
जागो अरे हर्ष के पुत्रो ! हूण खड़े फिर सीना तान !

कह दो तुम उन नादानों से, अरे लौट जाओ निज देश !
बहुत बार दुहराया हम ने सत्य-अहिंसा का सन्देश;
लगता इन फौलादी बाहों से तुम हो अब तक अनजान :
मत टकराओ हम से, हम तो खुद चलती-फिरती चट्टान !

लगा प्राण की बाज़ी हम ने किया सदा मां का परित्राण,
अरे कलम के धनियों ने भी यहां चलाई तीक्ष्ण कृपाण;
नर ही नहीं यहां नारी भी स्वयं भवानी का अवतार:
हर ललना धारण कर सकती यहां लड़ाकों का परिधान!

कुल-कलंकियो ! मित्र शब्द को अरे किया तुम ने बदनाम
पंचशील का राग अलापा और इधर छेड़ा संग्राम
मार्क्सवाद की कब्र खोद कर लगा रहे मस्तक पर दाग़
इतने पर भी शर्म नहीं तो हम भी करते शर-संधान

माओ और चाऊ के नाम

डा० महेन्द्र भटनागर

तुम्हारी मुक्ति पर
हमने मनाया था महोत्सव—
क्या इसलिए ?
तुम्हारे मत्त विजयोल्लास पर
बेरोक उमडा था यहा भी हर्ष का सागर—
क्या इसलिए ?
नए इसान के प्रतिरूप मे हमने
तुम्हारा बधु-सम स्वागत किया था—
क्या इसलिए ?

कि तुम—
अचानक क्रूर बर्बर आक्रमण कर
हेय आदिम हिस्र पशुता का प्रदर्शन कर
हमारी भूमि पर निर्लज्ज इरादो से
गलित साम्राज्यवादी भावना से
इस तरह अधिकार कर लोगे ?
युग-युग पुरानी मित्रता को भूल
कटु विश्वासघाती बन
मनुजता का हृदय से अत कर दोगे ?
तुम आसुओ के शाह बन कर
मृत्यु के उपहार लाओगे ?

पूरब से उदित होकर
अंधेरे का, धुएं का
भर सघन विस्तार लाओगे ?
साम्यवादी वेष धर
सम्पूर्ण दक्षिण-एशिया पर स्वत्व चाहोगे ?

इतिहास को—तुमसे कभी ऐसी अपेक्षा थी नहीं
ऐसा दुखद अध्याय
तुम दोगे उसे !

नव-साम्यवादी लोक को—
तुमसे कभी ऐसी अपेक्षा थी नहीं
ऐसा करुण साहाय्य तुम दोगे उसे !

बदलो, अभी भी है समय ;
अपनी नीतियां बदलो !
अभी भी है समय पारस्परिक व्यवहार की
अपनी घिनौनी रीतियां बदलो !

अन्यथा, संसार की जन-शक्ति
मिथ्या दर्प सारा तोड़ देगी !
आत्मघाती युद्ध के प्रेमी, हठी !
बस लौट जाओ, अन्यथा
मनु-सभ्यता
हिंसक तुम्हारा वार
तुम पर मोड़ देगी ! ○

बहने दो बलि पंथी-धारा

श्री माखनलाल चतुर्वेदी

ये हैं हिमगिरी की टेकडिया,
ये हैं गह्वर, ये हैं खाई,
यह है नगाधिराज का मस्तक,
यह विराटता, यह ऊचाई!

यह है सिर वालों का सौदा,
यह है भुजदण्डों का न्योता
आज प्रखरतम वार चाहिए,
फेंक कतरनी, फेंक मरोता!

क्या मैं उसको माफ करूगा,
जो मेरी चोटी से खेले,
जो मेरी सभ्यता, सस्कृति,
उदय, गान को पीछे ठेले?

आओ आज हिमालय से निज
महामौन को तोड पुकारो,
रक्त चाहिए, रक्त चाहिए,
बहने दो बलि पथी-धारा।

बढ़ते हुए हमारे सैनिक पिछड़ा हमें न पावेंगे

○

श्री मैथिलीशरण गुप्त

जो स्वदेश पर बलि जाते हैं, हम उन पर बलि जावेंगे,

ऋषि दधीचि से गांधी जी तक मिली हमे जो दीक्षा है,
बन्धुजनों, प्रस्तुत हो, उनकी फिर आ गई परीक्षा है ।

फिर सब देखें कठिन नहीं निज तपस्-त्याग बलिदान हमें,
परम्परा से पाया अपना, रखना है सम्मान हमे ।

घर संभालने में तटस्थ हो, लगे हुए थे जब हम लोग,
और चाहते थे जब सब का पंचशील-सम्मत सहयोग ।

तभी पड़ोसी चीन अचानक होकर लोभ पाप में लीन,
चला हमारी भूमि छीनने तन का मोटा, मन का हीन ।

आक्रामक होकर ऐसे में आकर जो हम से अटके,
उठो, लगा दो उन्हें ठिकाने, वे मदान्ध भूले भटके ।

आध्यात्मिकता से हट कर वे नंगी भौतिकता में चूर,
हिंस्र-दृष्टि से गुरुकुल को ही घूर रहे हैं कायर क्रूर ।

राष्ट्र-संघ में शुद्ध-भाव से, हमने जिन का पक्ष लिया,
हमें उसी के लिए उन्होंने देखो क्या उपहार दिया !

उनकी यह दी हुई चुनौती हम क्या अस्वीकार करें,
कोई हम पर वार करे तो हम भी क्यों न प्रहार करें !

ठोकर मार चिता दो उनको देख रहे हैं जो सपने,
भूले नहीं प्रताप, शिवाजी, गुरुगोबिन्द हमें अपने ।

आये जो जय-पत्र लिखाने मृत्यु-पत्र लिख रक्खे वे,
लोहे के हैं चने हमारे चखना है तो चक्खे वे !

अपने आप आ गया है यह नई विजय पाने का पर्व,
न था कौरवों को क्या, यदि है उनकी बहुसंख्या का गर्व ।

चर ले भले टिड्डियां उडकर इधर-उधर कुछ हरियाली,
पर जीने जी कहां लौट कर वे हैं फिर जाने वाली ।

पुरुखों की खाई अफीम की पीनक छाई है जिन में,
क्यों न तोडने चले मलिन वे निकट देख तारे दिन में ।

कृष्णा-गोदावरी-पचनद, गंगा-यमुना उमडी आज,
किन्तु एक चुल्लू यथेष्ट है यदि है रिपुओं को कुछ लाज ।

मार्ग न रहने दो जाने का ऐसे आने वालों को,
मुंह की खानी है उन मन के मोदक खाने वालों को !

काल कठिन तो दृढ है हम भी, स्थैर्य धैर्य साहस के संग,
आज वृद्ध भी युवा बने हैं पाकर निज में नई उमंग ।

मातृ-भूमि की रक्षा में हम सिर भी सहज कटा देंगे,
भू-दानी हैं रहो लुटेरो, तुम को धूल चटा देंगे।

हिन्दू, जैन, बौद्ध व सिख हैं, मुसलमान या ईसाई,
अपने एक देश के नाते हम सब हैं भाई-भाई।

उत्पादन का हर्ष जहां हो वहां अधिक श्रम का क्या खेद,
रक्त दे रहे सुभट हमारे, हमें बहुत क्या अपना स्वेद।

बढ़ते हुए हमारे सैनिक पिछड़ा हमें न पावेंगे,
जो स्वदेश पर बलि जाते हैं हम उन पर बलि जावेंगे।

धन तो तन का मैल, किसे है आज स्वयं प्राणों का मोह,
गूंजे-जीवन-गान एक रस क्या आरोह और अवरोह!

भौतिक भूत नहीं कर सकता हम को अपने भय से मुक्त,
जीवन में स्वाधीन रहेंगे, मर कर भी होंगे हम मुक्त।

अपने आप लिया रिपुओं ने न्याय-बुद्धि का यह अभिशाप,
यही बहुत, बैरी बन आया कटने को यह अपना पाप।

बलि दे कर ही बल लेंगे हम भीम-भामिनी-भीमा से
जो पर हैं, वे रहें परे ही, हटें हमारी सीमा से।

मैं हूँ सेनानी नए भारत का

श्री मोहन चोपड़ा

मैं हूं सेनानी
नए भारत का !
उद्यत है गति मेरी
आगे बढ़ने को तत्पर
दृढ़ हैं चरण मेरे ।
क्यों न मर लूं आज
अपने पौरुष की गरिमा में
घहरघहराते सागरों को
कड़कती बिजलियों की
रश्मियों को थाम लूं !
हिमालय आज मेरी
नियति का संकेत है
चवालीस करोड़ प्राणों का
लौह-कवच पहने हूं !

मैं हूं नागरिक
नए भारत का !
दासता की तन्द्रा को
तोड़ कर जागा हूं
नया इतिहास गढ़ने को
अपने पुण्य कृत्यों के
पुनीत चुम्बनों से
इतिहास के पृष्ठों को
सोने-सा बनाने को !
मेरे एक मित्र ने
विश्वास-घात किया है
किन्तु मेरे ओठों पर
जनवाद के तराने हैं
और मीठे लगते हैं
स्वर मानव-प्रेम के ।

मैं हूं शिल्पी नए भारत का !
मेरी अंगुलियों के कौशल में
ताज के मरमरी
मीनारों का भव्य रूप,
कला के उपादान
अजंता और अलोरा के,
सतलुज और व्यास की
उच्छल आबशारों में
ठुनकते हैं मीठे गीत
विद्युत शक्ति के !
नाचती है धुरिया
ताल और झीलों में
विशाल-पट बुनती है !

अबै बेदुला ना बूढ़ा भा, ना बल खाय गई तरवारि

श्री रमई काका

जय सिव संकर प्रलयंकर जय,
विष-धर-धरन बघम्बर नाथ ।
डिं-डिं-डमरू-धर तिरसूली,
है प्रभु लाज निहारे हाथ ।

बं बं भोले जटा-जूट धर, नयना मूँदे भसम रमाय ।
हैं कैलास सिखरके ऊपर, औढर बैठ समाधि लगाय ।

भारत कै कइ रहे सुरच्छा, संकर दिहे अभय वरदान ।
जो कहु कोपि उठे प्रलयंकर, डोली धरती औ' असमान ।

विषु फइलायो तुम सीमा पर, संकर किहिनि छिमाका दान !
माथे धरे सुधाधर तहिते, संकर किहिनि बहुत विषपान ।

सहनसीलता कै सीमा है, तुम कइ दीन्ह्यां वहिका पार ।
ज्वालामुखी हिमालय होइगा, सागर उठिगे ज्वार अपार ।

पग-पग धरती भभकि उठी है, होइगा ललाबम्ब असमान ।
कन-कन चिनगी अस होइगा है, औ' अंगारा सब पाषान ।

लपटैं आसमान तक उठि गईं, ज्वाला काल जीभि अनुहारि ।
दसौ दिसा हाथी चिग्घारेनि, उठिगे सेष नाग फुंकारि ।

जागा धनुष बान रघुवरका, कीन्हेंसि लछिमन भउहै बक्र।
को समुहे होइ लोहा लेई, चक्रपानि अब धारेनि चक्र।

जागा कोपु धनजय का अब, फिरि गाडीव किहिसि टकार।
भीमसेन कै गदा उठी अब, समुहे डटी कौनु सरदार।

वीर सिवाजी खड्ग उठायनि, जागै सबे मरहठा ज्वान।
राना हाथ उठायेनि भाला, जागा सारा राजस्थान।

खौलि उठा पजाब का पानी, अब गुरु गहेनि हाथ तरवारि।
जय जय हिन्द सुभाष पुकारेनि, जागी बग भूमि ललकारि।

बाभन ठाकुर बनिया हरिजन है कह रहे गोरखा जग।
पेस पेसवन ते को पाई करिहै मदरासी मदभग।

तीन ओर से सागर गरजै, उत्तरहिमगिरि सीस उठाए।
कोटि चवालिस पूत देस के, रोवा फरकि फरकि रहि जाए।

तुम भारत पर चढि कै आयो, हम का दिह्यो गरू ललकार।
भारत माता की रच्छा हित, बच्चा-बच्चा भवा तयार।

जब तक तन मा प्रान बराजे, प्रानन होय स्वास सचार।
भुम्मि इच भरि जाय न देबै, बढि-चढि करब सत्रु सहार।

हम अपने देसवा के रच्छक चौहद्दी के पहरेदार।
तुम लाघ्यो 'मकमोहन रेखा', तुम्हारा गरब करब हम छार।

जहि की गोदी मां खेलेन हम, खावा अन्न पिया है छीर।
प्रान गदोरी मां धरिके हम, तहि कै दूरि करब सब पीर।

जो आगे का कदम बढ़ाई, तहि पर गोली देब चलाय।
जो जननी पर हाथु उठाई तहि के देबे भुजा उड़ाय।

जो कोउ देखी टेढ़ी नजरिन तहिकी आंखी लेब निकारि।
टेढ़ी बात कही जो कोऊ, तौ मुंह धांसि देब तरवारि।

जग जाहिर भारत का पानी, बच्चा बच्चा कहै पुकारि।
अबै बेदुला ना बूढ़ा भा, ना बल खाय गई तरवारि।

जागो हे समाधिस्थ, जागो हे कामदहन

डा० रमा सिंह

जागो हे ! दीप्त किरण ! जागो !
जागो हे ! दीप्त सूर्य ! जागो !!

विघ्नों के काले ये बादल मडराये है
खूनी-सी दिशाओं पर कालिख ले आये है
अधकार पीने को—जागो हे ! दीप्त सूर्य !
जागो हे ! दीप्त किरण !!
जागो हे ! समाधिस्थ ! जागो !
जागो हे ! कामदहन ! जागो !!

हिमगिरि के प्राङ्गण मे तृष्णा जो नाच रही
साधना डिगाने को बाधा जो व्याप रही
भस्म वही करने को—जागो हे ! समाधिस्थ !
जागो हे ! काम दहन !!
जागो हे ! दिव्य शक्ति ! जागो !
जागो हे ! महाशक्ति ! जागो !!

लोलुप-सी हिमा के जन्मे जो रक्त बीज
पुण्य-मयी धरती को छलने जो रक्त बीज
आज उन्हे पीने को जागो हे ! दिव्य शक्ति !
जागो हे ! महाशक्ति !!

हिमालय के प्रति

श्री रमेशचन्द्र शाह

पूर्वजों के चरण-चिह्नों पर
प्रवंचक, हिंस्र पंजे गाड़ते
ये भेड़ियों के झुण्ड बढ़ते
आ रहे हैं।
ओ हिमालय !
देख लो निज—
धवलिमा पर
स्याह धब्बे ये
निरंकुश आततायी
आज आंगन में तुम्हारे—
अपशकुन से छा रहे हैं।
देवतात्मा !
पूछ देखो आज इन से
तुम कि जो इनके
व इन के पूर्वजों के
कारनामों के
हज़ारों पीढ़ियों से
मूक, पर अविचल अटल—
साक्षी रहे हो ; तुम,
जिन्होंने कभी देखा था
हज़ारों फाहियानों,
ह्वेनसांगों को
हमारे दीप्त गौरव से
चमत्कृत,
मुग्ध महिमाकृष्ट—
ज्ञानपिपासुओं को:
प्रेरणा, आशीष दे
जिन को कि तुमने
इस दिशा की ओर उन्मुख
कर दिया पहले-पहल था ;
और उन को,
दिग्भ्रमित, दृगहीन
तत्वाकांक्षियों को
दिव्य ज्ञानालोक देकर
चीन की प्यासी प्रजा की
अंध-तामस चेतना में
सत्त्व के निर्झर बहाने
और उनको पूर्ण अन्तर्बाह्य
संस्कृति के चरम उत्कर्ष
का परिचय कराने
'पंथ शुभ' कह गेह वापस
पठाया था।
पूछ देखो आज इन से,
मत्त डकराते निरीश्वर

मनुज-द्रोही
'साम्य' के महिपासुरो मे—
"क्या तुम्ही
उन हिमधवल हसो,
अमन के देवदूतो,
सत्य के निष्काम, नैष्ठिक
पुलक पखी खोजियो के
वशधर हो ?
क्या तुम्हारी ही
अपावन धमनियो मे
'साम्य' की समहीन थापो
पर उछलते
कौडियो के मोल बिकते,
धृष्ट, बेगैरत तुम्हारे इस
लहू मे ही किसी दिन
ओ अधम !
मेरे सुतो ने बुद्ध की
करुणा उलीची थी ?
तुम्हारे शील पर बन्धुत्व
का विश्वास रोपा था ?
"क्या इसी दिन को
तुम्हारे पारदर्शी, मन्त्रद्रष्टा
पितामह कन्फ्यूशियस वे,
राजनीतिक सदाचारो की
चिरन्तन सहिताए रच गए थे ?
दास के भी दास तुम ओ !

दूसरो के इगितो पर
नाचने वालो !
कहो तो, क्या यही नयवर्त्म
पुरखो ने सिखाया था तुम्हे ?"

प्रश्न गूजेगे दिशाओ मे
तुम्हारे और.....हिमगिरि !
सोचता हू मै,—तुम्हारे
प्रश्न की टकार
शायद, कुछ पलो को ही सही,
इन दस्युओ को
मर्म तक बीधे,
कपाये
और ठिठका दे ।
मगर यह भी दुराशा
कौन जाने
इन बधिर, निर्लज्ज कानो तक
पहुचते ही
तुम्हारे शब्द भी
नि स्तब्ध हो जाये ।
बहुत मुमकिन , —तुम्हारे
हितवचन इन धर्महीनो
भीड के दुर्दान्त कपटी भेडियो
के अट्टहासो मे
बिखर कर लुप्त हो जाये ।
इसी मे जानता हू

ओ हिमालय !
व्यर्थ होगा
इन निरंकुश बर्बरों को
सीख देना ।
अब इन्हें
दरकार शिक्षा दूसरी ही ।
देखते हो आज इनको
छद्म सारे फेंक पहली बार
नंगी असलियत
अपनी दिखा कर
ये हमारे धैर्य की सीमा
कुचलते आ रहे हैं ।
चले आएं : अब न
बरजो तुम इन्हें
इन भुखमरों को ।
पूर्व भी हमने बहुत कुछ था
दिया इनको
अभी कुछ और देंगे ;
सब कसर पूरी करेंगे ।
ताकि इस के बाद इन को
फिर इधर रुख मोड़ने की
कुछ ज़रूरत ही न रह जाये ।

मिलन यह भी हमारा
ओ हिमालय ! देखना तुम :
और देना साक्ष्य इस का फिर
अनागत पीढ़ियों को ।
अब बुभुक्षा ज्ञान की इन को
न प्रेरित कर सकेगी ।
तत्त्व की चिन्ता न इनका
पथ-प्रदर्शन कर सकेगी ।

देवतात्मा ओ पिता ! कहदो
तनिक इन दस्युओं से
रक्त-लोलुप भेड़ियों से,
शस्यलोलुप टिड्डियों से,
इंच भी आगे न ये
अब बढ़ सकेंगे ।
धर्मद्रोही ये अमानव
धर्ममय रथ के
न आगे टिक सकेंगे ।
बुद्ध की करुणा इन्हों ने देख ली ।
अब ? .....
रक्तकाली का प्रलयंकर रूप
इन को देखने दो ।

चीन, तेरे भी ज़माने लद गए

श्री रमेशनारायण तिवारी

गूंज उट्ठी गर्जना फिर हिन्द की
विश्व का इतिहास फिर थर्रा रहा
जग गया है सिंह ले जमुहाइया
स्यार-श्वानों के जमाने लद गए !

फिर गरजता है हिमालय का शिखर—
"यह उठा मस्तक न झुकने पाएगा
जिस दिशा में अब उठे मेरे कदम
उस दिशा का चिह्न भी मिट जाएगा

हो महाशिव सा जवाहर पास तो
कौन ताकत सामने टिक पाएगी
छेड़ दी रण-चण्डिका तो अब अधम
चीन, तेरी चाल के दिन लद गए !"

है 'भवानी' फिर उठी फुफकारती
सिंह 'राणा' का दुधारा कौंधता
फिर सुदर्शन गह लिया है 'कृष्ण' ने
'इन्द्र' ऐरावत चढ़ा रिपु रौंदता

मिस्र, रोमा, ग्रीस की हस्ती मिटी
देश गांधी का अमर था और है

दी चुनौती हिन्द को तो जान ले
चीन, तेरे भी ज़माने लद गए !

हम न भूखे शेर हैं, हम वीर हैं
राजपूती शान है, अभिमान है
आज केसरिया किया है, क्योंकि अब
फिर कसौटी पर सुनहरी आन है

है ज़ुबां पर कौल, सर पर है कफन
अब मनाएंगे जशन पीकिंग में हम
हम न लेंगे दम, न लेने देंगे अब,
चीन तेरे चैन के दिन लद गए !

दुश्मन के लोहू की प्यासी भारत की तलवार है

श्री रवि दिवाकर

अरे ! तुम्हारे दरवाजे पर
दुश्मन की ललकार है
भारत की रणमत्त जवानी,
चल क्या सोच-विचार है !

राणा के वशजो, शिवा के पूतो, मा के लाडलो !
समर भूमि मे बढो, शत्रु को रोको और पछाड लो,
तुम्हे कसम है अपनी मा के पावन गाढे दूध की,
चलो चीन मे अपनी चौकी, चादी मढे पहाड लो,
सुन, उजडे तवाग की कैसी करुणा भरी पुकार है ।

जिसने घोटा गला शाति का उस बेहूदे चीन मे,
कह दो, दुश्मन को दलने के है हम कुछ शौकीन से,
जहा दोस्त को दिल देने मे अपना नही जवाब है,
वहा शत्रु को पाठ पढाया करते हम सगीन से,
दुश्मन के लोहू की प्यासी भारत की तलवार है।

कहो शभु से आज तीसरा लोचन अपना खोल दे,
हरबोलो से कहो आज हर, हरहर-हरहर बोल दे,
जाग उठी है दुर्गा लक्ष्मी और पद्मिनी नीद से,
कहो कि अपने भाले पर हर दुश्मन का बल तोल दे,
आज देश की आजादी को प्राणो की दरकार है ।

मानसरोवर की पावनता हिमगिरि के उत्थान को,
जिस दुश्मन ने रौंद दिया हर घाटी, हर चट्टान को,
जिसने एक चुनौती दी है भारत के पुरुषत्व को,
पांवों तले कुचल डालो उस चाऊ के अभिमान को,
किया देश की सीमाओं पर जिसने कुटिल प्रहार है।

गरज रहं ह आज चवालस कोटि एक आवाज़ में,
माफ न होगा चीनी रावण यहां राम के राज में,
अपनी छीनी धरती तो हम ले ही लेंगे मूल में,
पर तिब्बत को भी हम लेकर के छोड़ेंगे ब्याज में,
चप्पे-चप्पे से यह उठ कर गूंज रही हुंकार है।

पंजाब के सैनिक के प्रति

श्री रसिक बिहारी

पंजाब के समतल से दूर, बहुत दूर
अब तुम हो हिमालय की ऊंची चढ़ाई पर—
बाज की नजरों से देख रहे हो तुम,
अदम्य साहस के साथ, हाथ में राइफल साधे।
दुश्मन की राइफल, मार्टर, मशीनगन, कमान—
कुछ भी डरा न पायेगी तुम्हें, जानता हूं,
तुम हो स्वतंत्र भारत के वीर सेनाचर,
देह में रक्त की अंतिम बूंद रहने तक
तुम लड़ोगे, अजेय भीम भयंकर बनकर।
शत्रु कवलित मातृभूमि के उद्धार का व्रत है तुम्हारा
हमें नाज है तुम पर, महान् भारत की सन्तान।
तेज कदमों से तुषार-पिच्छल पथ पर
पीछा करोगे चीनी दुश्मन का संगीन ताने,
दुर्धर्ष वीर हो तुम, अंतिम शत्रु को देश की धरती से
खदेड़े बिना चैन नहीं लोगे, तुम देश के गर्व हो, जाति की शान।
हमारी पुण्यभूमि की शान्तिमय निस्तब्धता
जिन दुष्टों ने तोड़ी है, तुम शान्त करोगे उन्हें,
समझा दोगे उन्हें तुम कि भारत की सदिच्छा जितनी महान् है
उतनी ही प्रचण्ड शक्ति भी, प्रतिहत करने की क्षमता भी,
मातृभूमि को निष्कलंक रखना जानता है भारतीय सैनिक
अपने दुर्दमनीय पौरुष-बल से वह देश का गर्व है
उसके पीछे आसमुद्र हिमाचल खड़े है हम सब।

स्यार, सिंह के घर आया है, निश्चय विजय हमारी है

श्री राजनारायण बिसारिया

खौल रहा है खून हमारा, आंखों में चिनगारी है,
अपनी इंच-इंच धरती भी हमें जान से प्यारी है।

पहले मीठी बोली बोले,
चुपके से दागे फिर गोले,
जहां गिरे दो, वहां देख लो—
पहुंचे हम टोले के टोले।
झुकने दी न पताका हमने, हाथों हाथ उबारी है।

हम हैं जलते अंगारों से,
तेज़ कृपाणों की धारों से,
मां का दूध पिया है हमने,
खेले हैं हम तलवारों से।
मां का दूध चुकाने वाले वीरों की अब बारी है।

जो भी हमसे टकराएगा,
आखिर में मुंह की खाएगा,
जितना तीर खिचेगा पीछे,
उतना ही आगे जाएगा।
स्यार, सिंह के घर आया है—निश्चय विजय हमारी है!
अपनी इंच-इंच धरती भी,
हमें जान से प्यारी है!

हम अपने युग के निर्माता हर पग में अभियान हमारे

श्री राजेन्द्र शर्मा

हम अपने युग के निर्माता, हर पग मे अभियान हमारे !

तोड रूढियो के बधन नव क्षितिज, नवीन प्रभात बनाते ।
अध-पुरातन विश्वासो को त्याग प्रगति-पथ पर बढ जाते ।
श्रम के हाथो बजर धरती का हमने शृगार किया है ।
धान, अन्न, जल, स्वर्ण, दुग्ध सब पृथ्वी ने उपहार दिया है ।
जागा अब जन-जन का गौरव, देश-प्रेम अभिमान पुकारे ।
हम अपने युग के निर्माता, हर पग में अभियान हमारे ।।

गौतम, गाधी, औ' अशोक के उपदेशों से ज्योतिर्मय पथ ।
कर्णधार नेहरू के इगित बढ़ा राष्ट्र का वेगवान रथ ।
बढा राष्ट्र का धन, उत्पादन, जीवन में उल्लास भरा है ।
पतझड के सूखे पातो पर लहलाया मधुमास हरा है ।
आज भाग्य की लिपि लिखने को हाथ बने बलवान हमारे ।
हम अपने युग के निर्माता हर पग मे अभियान हमारे ।।

कोटि-कोटि जन आज देश का करते है निर्माण निराला ।
मुक्त धरा, आकाश, सूर्य का फैला आगन प्रखर उजाला ।
देख रहा है विश्व हमारा यह अभियान शातिमय दृढ़तर ।
एक जगत बाहर बनता है सकल्पो की ज्वाला अन्दर ।
आज क्रांति के स्वर से गूजे, क्षितिज, नवीन विहान हमारे ।
हम अपने युग के निर्माता, हर पग में अभियान हमारे ।।

गर्व से ऊंचा उठा इस देश का सिर झुक न जाए

श्री राजेश दीक्षित

नाज़ करता आ रहा है विश्व का इतिहास जिस पर,
दोस्तो ! तुम को तुम्हारी उस कहानी की कसम है ।
जिन्दगी जिसको बुढ़ापे तक कभी डसने न पाई,
भाईयो ! तुमको तुम्हारी उस जवानी की कसम है ।

है कसम उस कौम की, जिस में 'शिवा', 'राणा' हुए हैं,
और 'टीपू' ने बहुत सम्मान है जिसका बढ़ाया ।
उस धरा की है शपथ, जिस में कि जन्मे 'राम-लक्ष्मण',
'कृष्ण' ने सन्देश गीता का जहां आकर सुनाया ।

हिन्दुओ ! तुम को शपथ है वेद और पुराण सबकी,
मुस्लिमो ! तुम को शपथ अपने अरे कुरआन की है ।
सिख योद्धाओ ! कदम पीछे न हट पाएं तनिक भी,
अब तुम्हें सौगन्ध गुरु गोबिन्द की किरपान की है ।

जैनियो, ईसाइयो, बौद्धो ! नहीं बैठे रहो तुम,
है तुम्हें सौगन्ध गिरजों, मन्दिरों की, औ' मठों की ।
नारियो ! साक्षात हो तुम ही भवानी और चण्डी,
है तुम्हें सौगन्ध पतियों, भाईयों की, औ' सुतों की ।

बांध लो अपनी कमर सब, देर का मौका नहीं है,
क्योंकि दुश्मन अब तुम्हारे देश को ललकारता है ।

एशिया की आस्तीनो मे पला जो नाग काला,
वह हिमालय पर खडा हो हिन्द पर फुफकारता है।

भारतीयो तुम रहे हो सिद्ध बाजीगर सदा के,
आज इस बेशर्म काले नाग के फन को मसल दो।
दुश्मनो के खून मे तुम बाल सीचो द्रौपदी के,
'पाण्डवो!' इन चीन के 'दुर्योधनो' के सिर कुचल दो।

तुम वही हो शौर्य से जिनके गगन भी कापता है,
तुम वही हो थरथराती है धरा जिनके चरण से।
तुम वही हो जीत पाया था नही जिनसे 'दशानन',
तुम वही हो जो कि कुश्ती मे विजय पाते मरण से।

दोस्तो! इस वक्त मा का दूध लज्जित हो न जाए,
देखना हर्गिज न अपनी लाज लुट जाए बहन की।
इस तरह तुम को जला कर खाक करते है लुटेरे,
याद ताजा विश्व मे हो जाए फिर लका-दहन की।

और वे गद्दार अपने मुल्क मे जो पल रहे है,
देखना उन मे कि जिन्दा एक भी रहने न पाए।
जिस जगह मिल जाए वे तुम को वही पर धर दबोचो,
एक भी 'मारीच' अब 'हा राम!' फिर कहने न पाए।

मुश्किलो के बाद आजादी मिली है जो कि उसको,
जो बुराई से तके, तुम आख उसकी फोड डालो।
चीन हो या और, जो भी हिन्द की सीमा उलांघे,
तुम बिना पूछे जवानो टांग उसकी तोड़ डालो।

शांति के हम हैं पुजारी किन्तु यह मतलब न इसका,
हम अमन के दुश्मनों से भी न लड़ना जानते हैं।
खुद डकैती की नहीं, माना डकैती को बुरा है,
पर डकैतों की हमीं गरदन पकड़ना जानते हैं।

इस लिए चीनी डकैतों का करो पहले सफाया
फिर करो मसमार उसको जो हिमायत में खड़ा हो
देवता पैगम्बरों के पुत्र तुम, जय हो तुम्हारी,
नास्तिकों का दल न जीतेगा, भले कितना बड़ा हो।

मोह में अर्जुन तुम्हारा कुछ दिनों तक तो रहा पर
आज इस कुरुक्षेत्र में वह कर्मयोगी बन गया है
शांति की हर एक कीमत आज तक जिस ने अदा की,
अब तुम्हारा वह 'जवाहर', शेर बन कर तन गया है।

इस लिए भाई! करो मत काम अब अलोचना का,
यह वतन की, कौम की, सब की परीक्षा की घड़ी है।
हिन्द के वासी! सभी मिल कर कदम आगे बढ़ाओ,
जीत देखो सामने जयमाल ले करके खड़ी है।

दे नहीं लानत किसी दिन दोस्त! सारा विश्व तुम को,
देखना मेरे वतन का कारवां यह रुक न जाए
पूर्वजों की है शपथ तुम को जवानो याद रखना—
गर्व से ऊंचा उठा इस देश का सिर झुक न जाए!

जाग, भारतवर्ष के सोए हुए अभिमान

श्री रामकुमार चतुर्वेदी

आंख में अंगार, सासों में लिए तूफान,
जाग, भारतवर्ष के सोए हुए अभिमान।

धर्म-पुत्रों ने नहीं देखा कपट का जाल,
फासती ही गई उनको शत्रु की हर चाल।
भीम-अर्जुन भी रहे अपमान भीषण झेल,
बहुत महगा पड़ रहा है, यह जुए का खेल।

द्रौपदी-सी चीखती है यह धरा असहाय,
वस्त्र खींचे जा रही धृतराष्ट्र की संतान,
जाग, भारतवर्ष के सोए हुए अभिमान।

मौन बैठे भीष्म द्रोणाचार्य है चुप-चाप,
कर रहे नत शिर युधिष्ठिर मौन पश्चात्ताप।
हँस रहा दुर्योधनो-दुःशासनो का झुण्ड,
भूमि का जीवन बनेगा क्या नरक का कुंड?

"शत्रु शोणित से धुलेगे द्रौपदी के केश"
भीम! उठकर के सभा मे यह प्रतिज्ञा ठान।
जाग भारतवर्ष के सोए हुए अभिमान।

न्याय घायल, सत्य के मन में व्यथा है आज।
घट रही फिर महाभारत की कथा है आज।
स्वार्थ गाते, नग्न हो पशुता रही है नाच,
पाण्डुनन्दन मोह की गाथा रहे है बाच।

बन्धुता रोती, सिसकते मित्रता के प्राण,
सामने कौरव खड़े हैं मांगते रण दान ।
जाग भारतवर्ष के सोए हुए अभिमान ।

हो रहा है शक्ति-मद में शत्रु रक्त-पिपासु,
कौन है, केशव यहां पर न्याय का जिज्ञासु ?
हिंस्र पशुओं के नयन हर ओर आज सतृष्ण ।
संधि की बातें न छेड़ो ओ कलाधर कृष्ण ।
गोपियों का दल नहीं यह कौरवों का झुंड,
बांसुरी फेंको उठाओ पांचजन्य महान् ।
जाग भारतवर्ष के सोए हुए अभिमान ।

उठ, उठ भारत महाभारत ठनेगा आज,
हम बचा करके रहेंगे द्रौपदी की लाज ।
भीम का प्रण पूर्ण होने पर बंधेंगे केश,
कृष्ण! दो अविलम्ब गीता का अमर उपदेश,
बज रही भेरी नहीं थमते रथों के अश्व,
कहो अर्जुन से करें गांडीव का संधान ।
जाग, भारतवर्ष के सोए हुए अभिमान ।

बज रहा डमरू, हिमालय ध्वनित बारम्बार,
चाहते शिव मुंड माला से नया शृंगार ।
अग्नि बन जाए सुभद्रा की नयन-जलधार ।
उत्तरा की मांग लूटने हो रहे तैयार ।
चक्रव्यूहों का निमंत्रण है तुम्हें अभिमन्यु ।
मांगती है मुग्ध जयलक्ष्मी तुम्हारे प्रान ।
जाग, भारतवर्ष के सोए हुए अभिमान ।

जाग रहे हम वीर जवान !

श्री रामधारी सिंह 'दिनकर'

जाग रहे हम वीर जवान,
जियो, जियो अय हिन्दुस्तान !

हम प्रभात की नई किरण है, हम दिन के आलोक नवल ।
हम नवीन भारत के सैनिक, धीर, वीर, गंभीर अचल ।
हम प्रहरी ऊँचे हिमाद्रि के, सुरभि स्वर्ग की लेते हैं ।
हम हैं शान्ति-दूत धरणी के, छाँह सभी को देते हैं ।
वीर-प्रसू माँ की आँखों के, हम नवीन उजियाले हैं ।
गंगा, यमुना, हिन्द महासागर के हम रखवाले हैं ।

तन, मन, धन तुम पर कुर्बान,
जियो, जियो अय हिन्दुस्तान !

हम सपूत उनके, जो नर थे, अनल और मधु के मिश्रण ।
जिनमें नर का तेज प्रखर था, भीतर था नारी का मन ।
एक नयन संजीवन जिसका एक नयन था हालाहल ।
जितना कठिन खड्ग था कर में उतना ही अन्तर कोमल ।
थर-थर तीनों लोक काँपते थे जिनकी ललकारों पर
स्वर्ग नाचता था रण में जिनकी पवित्र तलवारों पर ।

हम उन वीरों की सन्तान ,
जियो, जियो अय हिन्दुस्तान !

हम शकारि विक्रमादित्य हैं अरि-दल को दलने वाले ।
रण में ज़मीं नहीं, दुश्मन की लाशों पर चलने वाले ।
हम अर्जुन, हम भीम, शान्ति के लिए जगत में जीते हैं ।
मगर शत्रु हठ करे अगर तो, लहू वक्ष का पीते हैं ।
हम हैं शिवा-प्रताप रोटियां भले घास की खाएँगे ।
मगर किसी ज़ुलमी के आगे, मस्तक नहीं झुकाएंगे ।

देंगे जान, नहीं ईमान ,
जियो, जियो, अय हिन्दुस्तान !

जियो, जियो अय देश! कि पहरे पर ही जगे हुए हैं हम ।
वन, पर्वत, हर तरफ चौकसी में ही लगे हुए हैं हम !
हिन्द-सिन्धु की कसम, कौन इस पर जहाज़ ला सकता है ?
सरहद के भीतर कोई दुश्मन कैसे आ सकता है ?
पर की हम कुछ नहीं चाहते, अपनी किन्तु बचाएंगे ।
जिस की उंगली उठी, उसे हम यमपुर को पहुंचाएंगे ।

हम प्रहरी यमराज समान ,
जियो, जियो अय हिन्दुस्तान !

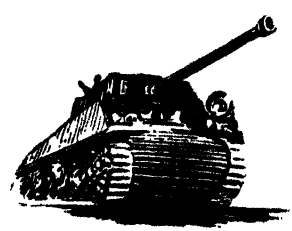

आज हिमालय ने माँगी है भारत से कुर्बानी

○

श्री राममनोहर त्रिपाठी

गष्ट्र वदना की बेला मे कैमी आनाकानी,
आज हिमालय ने मागी है भारत मे कुर्बानी ।

○

हरियाली पर किमी बडे पतझड की आख गडी है,
भगवी पावनता पर कोई शैतानी बिगडी है ।
सत्य-सफेदी पर दुश्मन कालिख मलने आया है,
शान्ति-चक्र को सघर्षो का भय छलने आया है ।

किन्तु तिरगा किमी शक्ति के आगे नही झुका है,
नभ की छाती पर फहरा है यह झडा अभिमानी ।
आज हिमालय ने मागी है भारत मे कुर्बानी ।

○

नादिरशाह, गजनवी, चगेजो को लौटा देगे,
आग बिछी है—अगर बढे तो लोहू ओटा देगे ।
'गौतम' के भोले भारत मे 'भीम' भयकर भी है,
'भस्मासुर' की खातिर 'शिव-शकर'—प्रलयकर भी है ।

इतिहासो की गहराई मे विश्वासो की जड है,
भारत है प्राचीन, चीन है नया—नई नादानी ।
आज हिमालय ने मागी है भारत से कुर्बानी ।

○

झुकना नहीं हिमालय, हम आगे बढ़ते आते हैं,
बर्फ उतार धरो प्रहरी बेटे लड़ते आते हैं।
सिक्किम औ' भूटान गोद में थोड़ी देर संभालो,
फिर तुम जितना लाल चीन का लोहू मिले नहा लो।

बारूदी बांधों से धारा कभी नहीं मुड़ती है,
गंगा से मिलने आएगा ब्रह्मपुत्र का पानी।
आज हिमालय ने मांगी है भारत से कुर्बानी।

हरी-भरी फसलें बल खाती हैं मेरे खेतों में,
नहरें अठखेली करती हैं राजस्थानी रेतों में।
बांध उगलते बिजली लोहे को भी गला रहे हैं,
शक्ति अभी छोटी है उंगली पकड़े चला रहे हैं।

उन्नति की पहली सीढ़ी पर पहला कदम पड़ा है,
प्रजातन्त्र को कोस रही है फिर सामंती वाणी।
आज हिमालय ने मांगी है भारत से कुर्बानी।

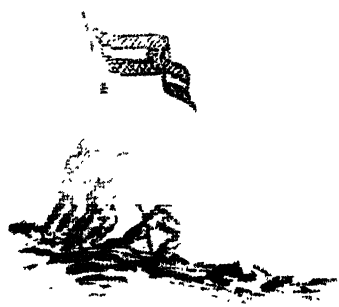

हमारे दृढ़ चरण ने लांघ डाले हैं महासागर

○

श्री रामविलास शर्मा (इंदौर)

हिमालय की शुभ्र नीलम वादियों में—भटकती
बारूद की दुर्गन्ध से बोझिल हवाएं
अग्नि-गोलों के प्रबल आघात सहते
बर्फ आच्छादित, धवल, उत्तुंग शिखरों के—
दरकते वक्ष—सीने
गोलियों की निरन्तर बौछार से आहत
प्रलम्बित बाहुधारी
देवदारु, चिनार, चीड़ के सघन वन
टेरते हैं आज हमको क्योंकि फिर से
स्वार्थ-लोलुप, विश्व-शान्ति का हन्ता
प्रबल आक्रान्ता पड़ोसी चीन
सह-अस्तित्व के सिद्धान्त की होली जला
अपनी हथेली तान को व्यग्र
बिसरा पंचशीला प्रतिज्ञाएं
और धरकर ताक में भ्रातृत्व
लांघकर स्वाभिमान की हदें
बन्धो ! दे रहा है द्वार पर दस्तक
हमारे प्रांगण प्रहरी हिमगिरि के द्वार पर दस्तक
विश्व के न्यायालयों में
हक की इन्सानी हिमायत की सदा हमने
छीने हमारे हक़, हमारी धरती निगलने को

उलटकर फन उठाया है
किन्तु इतना याद रक्खे हम 'दधीचि' हैं
मनुजता के शत्रुओं का—
पूर्णतः संहार करने को—
हमारी हड्डियों से वज्र बनते हैं
ज़रूरत के वक्त
हमारे बाजुओं ने 'द्रोण', 'गोवर्धन' उठाए हैं
हमारे दृढ़ चरण ने लांघ डाले हैं महासागर
अपने जब बिराने हो गए आखें बदल करके
उसी क्षण हमने
कुरुक्षेत्र में रचे भीषण महाभारत
और अब फिर
शत्रु की ललकार के स्वर खुल रहे हैं फ़िज़ाओं में
इसलिए, वक्त का यह है तकाज़ा
छोड़ अपने सैद्धान्तिक सभी मतभेद
बिसरा द्वेष, ईर्ष्या, वैमनस्य
हम, आज हिल-मिल एक हो जाएं
हमारे शौर्य का तेजस हमारी दृढ़ लगन का दीप्ति
हिल्लोरते उत्साह की आभा
उगा दें उत्तरी क्षितिज सहस्र प्रखर ज्योति-पुञ्ज
कि आक्रांता तमस् की तरह
उल्टे पांव अपनी सरहदों में जा शरण खोजे
और फहराएं
'मैकमहोन' रेख की शीर्षस्थ चोटी पर
तिरंगा ध्वज शान्ति का उद्घोष करता
मनुजता, सचाई की जय-दुन्दुभि का घोष करता ! ○

चीन देश हत्यारा है

○

श्री रामस्वरूप 'सिन्दूर'

सकट आया देश पर, धार धरो आवेश पर,
हमको भाई-भाई कह कर, छुरा पीठ मे मारा है।
चीन देश हत्यारा है।

कोटनीस के बलिदानो को भुला दिया इस चीन ने,
ब्रह्म-पुत्र का हृदय चीर कर रक्त पिया इस चीन ने,
वक्त पडे हिन्दोस्तान से सबक लिया इस चीन ने,
रग परवार, गौतम के सर पर वार किया इस चीन ने।
दम्भी को आघात दो,
दोहरी-तिहरी मात दो,
नेहरू के दूधिया-कपोतो पर उठ गया दुधारा है।
चीन देश हत्यारा है।

हम अर्जुन के वशज, नेहरू जैसा अपना सारथी,
अन्यायो का नाश किया, न्याय की उतारी आरती,
हमे महाभारत वाली, रण की भूमिका पुकारती,
दुर्योधनी चाल 'चाऊ' की, प्रगति हमारी पारथी,
अगर प्रतिज्ञा कर डाली,
बात न जाने दी खाली,
चक्रव्यूह रचनेवालो को बदला दिया करारा है।
चीन देश हत्यारा है।

○

डोल उठी है धरा !

○

श्री रामानन्द दोषी

ग्रांधियों ने गोद में हमको खिलाया है, न भूलो,
कंटकों ने सिर हमें सादर झुकाया है, न भूलो !
सिंधु का मथ कर कलेजा हम सुधा की शोध लाए,
ग्रौ' हमारे तेज से सूरज लजाया है, न भूलो !

वे हमीं तो हैं, कि इक हुंकार से यह भूमि कांपी,
वे हमीं तो हैं, जिन्होंने तीन डग में सृष्टि मापी ,
ग्रौर वे भी हम, कि जिनकी सभ्यता के विजय-रथकी
धूल उड़कर छोड़ ग्राई छाप ग्रपनी विश्व-व्यापी ।

वक्र हो ग्राई भृकुटि तो ये ग्रचल नगराज डोले,
दस दिशाग्रों के सबल दिक्पाल ये गजराज डोले ।
डोल उठी है धरा, ग्रंबर, भुवन, नक्षत्रमंडल,
ढीठ ग्रत्याचारियों के ग्रहंकारी ताज डोले ।

सुयश की प्रस्तर-शिला पर चिह्न गहरे हैं हमारे,
ज्ञान-शिखरों पर धवल ध्वज-चिह्न लहरे हैं हमारे ।
वेग जिनका यों, कि जैसे काल की ग्रंगड़ाइयां हों,
उन तंरगों में निडर जलयान ठहरे हैं हमारे ।

मस्त योगी हैं, कि हम सुख देख कर सबका सुखी हैं ,
कुछ ग्रजब मन है, कि हम दुख देख कर सब का दुखी हैं ।

तुम हमारी चोटियो की बर्फ को यो मत कुरेदो,
दहकता लावा हृदय मे है, कि हम ज्वालामुखी है।

लास्य भी हमने किए औ' ताडव हमने किए है,
वश मीरा और शिव के, विष पिया है औ' जिए है,
दूध मा का, या कि चदन, या कि केसर—जो समझ लो,
यह हमारे देश की रज है, कि हम इसक लिए है।

थाम लो संभाल कर देश की मशाल को

श्री रामावतार त्यागी

हिंद के बहादुरो शूरवीर बालको !
थाम लो सम्भाल कर देश की मशाल को !

अन्धकार का ग़रूर आन-बान तोड़ दो,
बालको, भविष्य के लिए मिसाल छोड़ दो,
दो नयी नयी दिशा वर्तमान काल को ।
शूरवीर बालको !
थाम लो संभाल कर देश की मशाल को !

देश मांगता कि खून से रंगा गुलाब दो ,
तुम उठो सिपाहियो चीन को जवाब दो,
झूम-झूम कर मलो युद्ध के गुलाल को ।
शूरवीर बालको !
थाम लो संभाल कर देश की मशाल को !

दूर तक ज़मीन पर शानदार जय लिखो,
तुम विशाल सिन्धु पर खून से विजय लिखो,
तोड़ दो पिशाच के तुम हरेक जाल को ।
शूरवीर बालको !
थाम लो संभाल कर देश की मशाल को !

आज तुम्हें तो बलि शीशों की अपनी यहां चढ़ानी होगी

श्रीमती विद्यावती 'कोकिल'

धूल धूसरित आर्य, उठो हे ! निश्चय विजय तुम्हारी होगी।

यद्यपि प्रभु ने पूर्ण विजय का है चुपके से वचन दे दिया ,
किन्तु तुम्हे तो बलि शीशो की अपनी यहा चढानी होगी ।
देश-मुक्ति का प्रश्न नही यह विश्व-मुक्ति का महायुद्ध है ,
विश्व-जननि के वीर पुत्र की तुम को रीति निभानी होगी ।
जीवन-श्रमश्लथ राहुग्रस्त यह धरा तुम्हारी राह देखती ,
देव-पुत्र हे, मनुज वृत्तिया कर्दम-मुक्त करानी होगी ।
शब्द ब्रह्म, उस जग-कारण की अग्नि तुम्हे पचानी होगी,
और अन्न के इस प्राणी मे वाचा शक्ति जगानी होगी ।
मौन रहो, पीछे मत देखो, आगे आगे बढते जाओ,
अभी बहुत कुछ करना है इक अनुलित शक्ति जुटानी होगी ।
अपनी एक एक दुर्बलता गला-गला फौलाद बना कर,
अग्नि-अस्त्र-शस्त्रो की उस मे अपनी शक्ति बढानी होगी ।
जिस ने हम को दलित बनाया, जिस ने हम को पतित बनाया ,
उस स्वार्थ से बने लघु-लघु बाडो मे आग लगानी होगी ।
सच है जग की सारी आशा भारत पर ही आधारित है,
पर प्रभु मे भारत की आदि-प्रतिज्ञा तुम्हे निभानी होगी ।
तुम आत्मा हो इस ऊचे आदर्श के लिए जीना होगा ,
औ' आदर्श जिए, बस उसके लिए, मृत्यु अपनानी होगी ।

लाज मां की बचाना तुम्हें है कसम

श्रीमती विद्यावती मिश्र

देश है साथ में हर समय, हर कदम !
तुम अकेले नहीं, तुम अकेले नही !!

शीत में प्रीति की आग को ताप लो,
इन पहाड़ों से मां का हृदय माप लो,
राष्ट्ररक्षा सदा वीरता का नियम !
देश है साथ में हर समय, हर कदम !
तुम अकेले नहीं, तुम अकेले नहीं !!

स्वर्ण देंगे कि तुम अस्त्र से सज सको,
रक्त देंगे कि तुम मृत्यु-भय तज सको,
त्याग-बलिदान का टूट पाये न क्रम ।
देश है साथ में हर समय, हर कदम !
तुम अकेले नहीं, तुम अकले नहीं !!

कौन तुम को सका जीत है आज तक,
हार हिम्मत गये हैं सिकंदर तलक,
लाज मां की बचाना तुम्हें है कसम !
देश है साथ में हर समय, हर कदम !
तुम अकेले नहीं, तुम अकेले नहीं !!

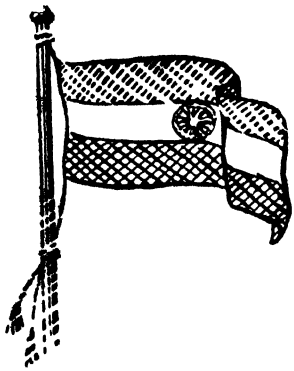

हमारा ऊंचा रहे निशान

श्री विनोद रस्तोगी

वीरो की सन्तान,
हमारा ऊंचा रहे निशान।
ऊचा रहे निशान,
हमारा ऊचा रहे निशान ।।

आगे बढना कर्म हमारा,
ऊपर चढना धर्म हमारा,
टकराते है महाकाल से अपना सीना तान।
हमारा ऊचा रहे निशान।
ऊचा रहे निशान, हमारा ऊचा रहे निशान।

जो कोई आगे आएगा,
चूर-चूर वह हो जाएगा,
हाथो मे है बिजली आखो मे आधी-तूफान।
हमारा ऊचा रहे निशान।
ऊचा रहे निशान, हमारा ऊचा रहे निशान।

सीमा पर चढ़ आने वालो,
सोया शेर जगाने वालो,
भारत का बच्चा-बच्चा है फौलादी चट्टान।
हमारा ऊचा रहे निशान।
ऊचा रहे निशान, हमारा ऊंचा रहे निशान ।।

हटो चीनियों दूर, हिमालय तुमको खा जाएगा

श्री विमलचन्द्र 'विमलेश'

कौन उत्तरी सीमा पर अंगार बिछाने आया ?
किसने गंगा-यमुना की धारा में विष बिखराया ?
किस बर्बर ने अनजाने सोता हिमराज जगाया ?
किसने ऋषियों की धरती के मुंह का ग्रास चुराया ?

चाऊ-माओ ! भारत मां की साड़ी फाड़ रहे हो,
भारत-लक्ष्मी की लज्जा को आज उघाड़ रहे हो,
कायर ! वीरों की धरती पर आज दहाड़ रहे हो,
'भूपण', 'जगनिक' की गलियों में क्यों चिंघाड़ रहे हो?

मैं अपनी भावी आशा की राह संवार रहा था,
आने वाली मुस्कानों को आज पुकार रहा था,
मैं जीवन की स्नेह प्यार की बात विचार रहा था,
अजय शांति की धरती पर तस्वीर उतार रहा था।

पर तूने सोचा हँसती कलियों का ह्रास चुराना,
उत्तर के नन्दन-वन पर छाया मधुमास चुराना,
'ताजमहल' की धड़कन को चाहा विष-पान कराना,
'शीशगंज' की गुरु-वाणी की अक्षय जोत बुझाना।

पर सुन मैंने भी बर्बर सिंहों के दांत गिने हैं,
जाने कितनी बार रुधिर में मेरे गात सने हैं,

जो घूरेगी आख क्रोध मे, उसे फोड दूगा मै,
उठने वाले कोटि सिरो को आज तोड दूगा मै।

कलम और बन्दूक मुझे दोनो प्यारी लगती है,
जन्म-मृत्यु की ताने मेरे गीतो मे जगती है,
'शास्त्र' और 'शर' सदियो मे मेरे जाने पहचाने,
छ्यामी कोटि भुजाए जिसकी वह क्यो झुकना जाने।

हटो चीनियो ! दूर, हिमालय तुम को खा जाएगा,
हटो ! नही तो पीकिग तक मातम सा छा जाएगा,
जो कह सकते 'जीओ, जीने दो' दुनिया वालो को
उनके होठ चूम लेते है, पागल भूचालो को।

जो धरती 'गौतम' के गीले गाने गा सकती है,
वही धरा कण-कण मे ज्वाला भी उगला सकती है,
पचशील का हार प्यार से जो पहना सकते है,
वे ही हाथ तुम्हे मरघट के बीच सुला सकते है।

हटो ! नही तो यहा भैरवी हर स्वर मे गूजेगी,
हटो ! नही तो चीनी मिट्टी शोलो मे जूझेगी,
हटो ! नही तो आग जहा की तुम न बुझा पाओगे,
हटो ! नही तो नेफा के आगन मे सो जाओगे !

पूतन को टेर मातु भारती लगाई है

श्री विष्णु दत्त मिश्र 'तरंगी'

उमड़ पड़े हैं ज्वान उत्तर से दक्खिन लौं,
पूतन को टेर मातु भारती लगाई है।
नेफा व लदाख शहजोर रणधीर वीर,
सजग असाम बंग साजी तरुणाई है।
उत्तर प्रदेश व बिहार युद्ध जोम पूत,
महाराष्ट्र आंध्र उठे केरल के भाई हैं।
पूत पंजआबिन धनी जो युग पौरुष के,
तेहि बलिदानन की लगन लगाई है।

उबला गरम खून त्रिपुरा मणीनपुर,
धीर मध्यदेश, देख बादल विनाश के।
धाये कर्नाटक हिमाचल से देशबन्धु,
विकल उड़ीसा वीर-बाहु मदरास के।
धन्य गुजराती मयसूर के तरुण प्राण,
वीर रजथानी जो खिलाड़ी रणलास के।
उमग बढ़े हैं कशमीरिया सरोष रण,
चमक चढ़े हैं लक्ष सूरज प्रकाश के।

विकट जुझार, हिमशिखर अजेय ज्वान,
पीलिया प्रलय वबा जड़ से उखाड़ देत।
कुचल कुचल फन, विष के उखाड़ दांत,
शत्रु मुंडमालन करत गिरिराज भेंट।

लोथन से पाटत है क्षण मे समर भूमि,
शत्रु को रक्त पीय नाचन है भूत प्रेत।
दहक दहाड से कपाय शत्रु रोम-रोम,
बोल जयहिद वीर भारती चुनौती देत।

कपट चढाई कर भारत घुमे जो दस्यु,
गाजर की भाति रण खेतन उखाडेगे।
प्रलय पयोधि मे डुबाय अभिमान शत्रु,
कागज के शेरन को चीर-फार फाडेगे।
कुटिल कमीन नीच चीन को गिराय कीच,
एक-एक चीनिया को भूमि भीच गाडेगे।
चीनी के खिलौने भाति खडित करेगे चीन,
मार-मार बूटन से नजर उतारेगे।

ऐ रे शाति शत्रु चीन, बढा जो गुमान बल,
पेकिग लौ तोहि को निकाल कर मानेगे।
समर चढे है ज्वान भारत प्रतापी पूत,
क्षार क्षार तेरा इन्द्रजाल कर मानेगे।
तेरे काल मेघन को वज्रन विदारि कर,
चीनिया चनो को दल दाल कर मानेगे।
सिह सिहगढ के बढे है भीम छाती रण,
पीली नदिया को लाल लाल कर मानेगे।

भारत के शकर ने खोला है तृतीय नेत्र,
चीन बदकार को उखार क्षार करिहौ।
जल थल अबर, त्रिलोक तीन खेद खेद,
गिरि शृग वादी व पहार फार लरिहौ।

चरन पखार मातु शत्रु के गरम रक्त,
चूर चूर चीन की दिवारद्वार करिहौं।
ऐरे दगादार तेरे पातक कपार तोहि,
हिम के कछार में पछार चार करिहौं।

आन के पुजारी वीर भारती करत वार,
हिम गिरि शृंगन पै कूंद कूंद धाय धाय।
आंधी अधरत्तन में धावत पवन पूत,
औचक रहे हैं शत्रु ठाढ़े मुख बाय बाय।
खड़क खदेड़ें रिपु संगर पुरन्दर से,
नाचत पिशाची शत्रु भेजन को खाय खाय,
धमक धमक धम्म लोथन पै लोथ चढ़ें,
माओ करे म्याऊं और चाऊ करे हाय हाय।

एक एक इंच भूमि वापस करेंगे हम,
बेड़ा रिपु डोब देंगे बीच मंझधार में।
कड़क कड़क धूम, धड़क धड़क धूम,
मीचन मरोरि देंगे आंधिया अंगार में।
सिक्त कर देंगे चीनी रकत समरभूमि,
लाल लाल खून बहे ह्वांगहो की धार में।
माओ मिल पाय नहीं म्याऊं को ठौर जग,
होश रहे नाहिं चाऊ चुगद लबार में।

वज्र भांति टूट वीर भारती अजेय युग,
दगाबाज तेरी लौह परिघा गिरावेंगे।
तोपन पछाड़ कोप कोपन पछाड़ पुनि,
पौरुष बजार तेरी किस्मत गिरावेंगे।

आहुति हुकार हाक खड्ग कृपाण कोप,
माटिन के मोल चाऊ-माऊ को बिकावेंगे ।
देहली की छाह् तक दाबन न देंगे नीच,
पेकिंग के घाट तेरी हिम्मत मिरावेंगे ।

खाडा प्रतिशोध वीर भारती प्रकोप ज्वाल,
नीच चीनियों को यम द्वार लौ प्रताडेंगे ।
भागन न दैहैं, तोहे छोड के समर भूमि,
जीवित ही नीच तोहि सिह् भांति फाडेंगे ।
नेफा व लद्दाख मे निकाल कर कान खीच,
तिब्बत स्वतन्त्र कर ल्हासा मे दहाडेंगे ।
माऊ को मलीदा कर, चाऊ चटनी सा पीस,
भांति हनुमन हम पेकिंग उजाडेंगे ।

विजय-वधू को बिन जीते न रहेंगे हम,
जाहिर जहान शौर्य भारत बढाइया ।
साच पथ जाने हम अबर पताल लोक,
नीची कर देत उच्च कठिन चढाइया ।
दभ को चटाने कर देत है अभेद्य चूर,
छीन भुज-दड लेत कपट कमाइया ।
भारत पराक्रम प्रसिद्ध अविजेय जग,
रक्षक अमर नाथ साखी गुरु साइया ।

शंकर का यह नेत्र खुला

श्री विश्वदेव शर्मा

हिमगिरि का यह बांध रिस उठा आज अचानक,
और उधर का ज़हर यहां छन कर आया है।
यह चालीस कोटि शंकर का देश मचलकर,
उसको आत्मसात् करने को अकुलाया है ।

एक घूंट में अजगर का सारा विष पीकर,
इसको फिर अफीमची की बेहोशी देंगे ।
ये अस्सी करोड़ बांहों के कड़े शिकंजे,
कसकर इन फुंकारों को खामोशी देंगे ।

अपना कण्ठाभरण बनाकर जिस अजगर को,
शिव निर्माण-समाधि लगाने बैठ गए थे !
वही उलट कर आज काटने को आया है।
(खुश-फहमी के भान कहां तक पैठ गए थे !)

चक्षुश्रवा हुआ करता है अजगर केवल,
कानों सुनता नहीं, मानता आंखों देखी।
इसी लिए इतिहास नहीं यह सुन पाया है,
चेतावनियों पर भी दिखलाता है शेखी ।

शंकर का यह नेत्र खुला, ज्वालाएं धधकीं,
जिनको सुनना नहीं, देखना, सहना होगा ।

जिन मे अपनी सारी चर्बी जला गला कर,
अपने असली ढाचे मे ही रहना होगा ।

छल से पाई हुई जीत पर क्या इठलाना ?
पौरुष भी यो छल-छद्मों मे रीत सका है ?
भले जुए मे जीत सका हो धर्मराज को,
भला महाभारत मे शकुनी जीत सका है ?

भोले भण्डारी शकर को बहुत याद है,
उनके ही वरदान उन्ही को डसने वाले ।
लेकिन भस्मासुर जैसे भी याद बहुत है,
अपनी ही करनी मे आखिर फँसने वाले ।

डम-डम डमरू बोल रहा है, जगी दिशाए,
धक-धक करना जाग रहा पावक प्रलयकर ।
सावधान ! ओ चीन ! आज प्राचीन देश यह,
ताण्डव करने को जागा बनकर शिव-शकर ।

हिमगिरि मे यदि छेद हुए, विष बहकर आया,
हम रुण्डो-मुण्डो का बाध खडा कर देगे ।
इधर युगो से भूखी-प्यासी है रणचण्डी,
अब हम उनके खप्पर पर खप्पर भर देगे ।

भारत देश हमारा है

श्री विश्वप्रकाश दीक्षित 'बटुक'

देश-भक्ति की दीप-शिखा के हम दीवाने परवाने,
बलिपथ के मतवाले राही, चलते हैं सीना ताने,
तन देगे, धन देगे इस पर प्राण निछावर कर देगे,
काली रणचडी का आगन अरि-मुडो से भर देगे ।
तन की हर हड्डी चमकेगी, मानो तेज दुधारा है,
कदम बढेगे, नही रुकेगे, दुश्मन ने ललकारा है,
हम को अपनी धरती प्यारी, भारत देश हमारा है ।

जगो देश की प्यारी बहनो, जगो देश की माताओ,
वीर-पत्नियो उठो कि रण के सब सामान सजा लाओ ।
बहा हमारा अगर पसीना, शस्त्रो की तैयारी हो,
एक खून की बूद हमारी, सौ दुश्मन पर भारी हो ।
वीर-सैनिको उठो कि तुमको मा ने आज पुकारा है,
कदम बढेगे, नही रुकेगे, दुश्मन ने ललकारा है,
हमको अपनी धरती प्यारी, भारत देश हमारा है ।

वह कैसे सोयगा सुख से, जिसका दुश्मन जीता है ?
'जागो, उठो, शत्रु को मारो', गाती अपनी गीता है ।
सासो मे तूफान बसा है, बोली मे पलती आधी,
हमने तो अपने पैरो मे, महाप्रलय की गति बांधी ।
"मरो देश के लिए सपूतो", यही हमारा नारा है,
कदम बढेगे, नही रुकेंगे, दुश्मन ने ललकारा है,
हमको अपनी धरती प्यारी, भारत देश हमारा है ।

सिपाही देश के ! हिमालय छीन ले !

श्री वीरेन्द्र मिश्र

सिपाही देश के !
हिमालय छीन ले !
मुक्त देश पर फिर विदेश से आया सकट क्षण
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले !
हिमगिरि अपना राजमुकुट है प्रहरी जीवनधन
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले !

(१)

वही हिमालय जहा कि गगा यमुना का उद्गम
जहा हमारे वीर शेरपा नही किसी से कम
वही हमारी तपोभूमि है ऋषियो का आगन
हिम-शिखरो पर मुक्ति देवता का है सिहासन
उस सिहासन पर है अब उस की छाया
छलती रही हमे जिस की चचल माया,
जिस के लिए चले विपरीत बहावो मे
पानी भरता गया हमारी नावो मे ।
भाई समझा जिस को अपनाया हमने,
उस से ही विश्वासघात पाया हमने ।
और एक दिन विस्मित होकर देखा तो

लांघ गया वह अपनी लक्ष्मण-रेखा को
इतने छल मे हुआ न होगा कोई अतिक्रमण
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले!
चन्दन-वन को ही मिलना था विषधर का दंशन
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले!

(२)

सौ फूलों का नारा देने वाले को क्या ज्ञात,
हमने उसकी गन्ध सराही और सराहा प्रात।
हम को खुशबू भली लगी पर तोड़ा कभी न फूल,
उस के मधुवन बस लें ऐसी तो की कभी न भूल।
हम गुलाब का सौदा करने नहीं कभी,
शांति चाहते लेकिन डरने नहीं कभी,
वीर सिपाही उसको यह बतला देना:
भारत की सारी जनता ही है सेना!
तू जिस बलिवेदी पर रक्त चढ़ाता है,
उसका हर नदी पर्वत से नाता है,
हर बहार तेरे ऊपर न्यौछावर है,
उत्तर ही क्यों दक्षिण का भी सागर है,
तेरे पीछे खड़े हुए सब भारत जन-गन-मन!
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले!
माता ने आशीश दिए हैं बहनों ने कंगन!
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले!

(३)

उडी हवा अलकनन्दा की करती आखे लाल,
विन्ध्याचल, सतपुडा, अर्वली आज हुए विकराल,
कभी नही देखा जो तूने आज वही तू देख
मदिर-मस्जिद-गुरुद्वारे का पथ हुआ है एक ।
फिर सह्याद्रि शृग मे उठा मराठा है
केरल मे शकराचार्य ने डाटा है ।
है कैलाश प्रकपित शिव के ताडव मे
कौरव फिर लडने आया है पाडव मे !
धरती माता को छीना है रावण ने,
फिर आवाज लगाई युग के चारण ने
जाग देश के प्रहरी सीमा टूटी है !
मधुर दिशा मे खट्टी गोली छूटी है !
तन-मन दोनो मे ही बोना है अपना दुश्मन !
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले !
चिन्ताओ ने घेरा सस्कृति का आनन्द भवन !
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले !

(४)

मन उदास हो रण के इस दुर्गम-पथ म
तू कर शर-सधान, हाकना हू रथ मे
तेरी जय आगे पीछे उसके साधन,
गीता भी है वही जहा है रामायण !
सेतु नही बधना है, पर्वत चढना है,
पवन-पुत्र को कुम्भकर्ण से लडना है !

हिमगिरि ज्वालागिरि होता है तो हो ले,
जो टकराएं आठ-आठ आंसू रो लें !
यहां पुंछे सिन्दूर, वहां चूड़ी टूटे,
टूकड़े कर दे जो आरोप लगे झूठे,
शस्य-श्यामला भूमि नहीं है शबनम की !
चल न सकेगी यहां बन्दरो की धमकी !
भारत माता के हाथों में है रक्षा बन्धन !
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले !
शोणित का सागर बन जाए, हो समुद्र-मंथन !
सिपाही देश के,
हिमालय छीन ले !

बता दे आज चीन को कि जंग है तो जंग है

श्री 'शहाब' लखनवी

हिमालिया की चोटियों पे जंग की घटाएं हैं ।
हमारी पाक सरहदों पे अनगिनत बलाएं हैं ।।
अजल की सर्द घाटियों में बे-जली चिताएं हैं ।
उदास सैकड़ों घरों में बीवियां हैं, माएं हैं ।।
न ले जो इन्तकाम अब वो दिल नहीं है संग है ।
उठो कि वक्ते जंग है, उठो कि वक्ते जंग है ।।

गिरां बहुत है गो ये शब, सहर जरूर आएगी ।
हमें फरेब दे गई है दोस्ती की दुश्मनी ।।
वतन है अपना ज़द पे जब कहां की अम्न-दोस्ती ।
जहादो काविशों से अब है अब हमारी जिन्दगी ।।
लबों पे जंग का रजज दिलों में इक तरंग है ।
उठो कि वक्ते जंग है, उठो कि वक्ते जंग है ।।

खुदाये जर ने भी लिए हैं बे-जरों से कुछ सबक ।
भरी है जिन के खून ने वतन की मांग में शफक ।।
गिरा है आज टूट के सिपहरे जर वरक-वरक ।
हदीसे इत्तिहाद है किताबे दिल का हर वरक ।।
इस एकता पे चीन क्या, जहाने-अक्ल दंग है ।
उठो कि वक्ते जंग है, उठो कि वक्ते जंग है ।।

उड़ाओ परचमे-जफर जमीं वतन की पाक हो ।
तुम्हारे अज्मे बेसफर की दुश्मनों पे धाक हो ।।
तुम्हारी जर्ब से जिगर हिमालिया का चाक हो ।
उठो जो बांध के कमर जहाने जुल्म खाक हो ।।

समझ लो साज़े ज़िन्दगी अजल की जलतरंग है।
उठो कि वक्ते जंग है, उठो कि वक्ते जंग है।।
चली है फौज सफशिकन बहादुरों की ईद है।
वो जां-फरोश बांकपन जो अक्ल से बईद है।।
बराये मादरे वतन जो जान दे, शहीद है।
बंधा है सर से यों कफन अजल भी महवे दीद है।।
हरेक मीनए नफ़्स में जंग की उमंग है।
उठो कि वक्ते जंग है, उठो कि वक्ते जंग है।।
उलट दो चीन की सफें चखा दो ज़ुल्म का मज़ा।
बनें उदू की खंदकें उन्हीं की मरकदे जफा।।
बहा है जो लदाख में वो खून रंग लायेगा।
है हेच सब मसर्रतें, है वक्त इन्तकाम का।।
हिमालिया की बर्फ भी तो आज सुर्ख रंग है।
उठो कि वक्ते जंग है, उठो कि वक्ते जंग है।।
उठाओ तेग हैदरी, चलाओ अर्जुनी कमां।
है नाराए जवाहरी तुम्हारा मीरे कारवां।।
दिलों में आग लग चुकी, जला दो चीन का जहां।
हिमालिया पे फूट ही चुका नसीबे-दुश्मनां।।
बढ़ो कि चीनियों पे अरसाए हयात तंग है।
उठो कि वक्ते जंग है, उठो कि वक्ते जंग है।।
बहादुरो ज़बां पे बस मनेज ही का नाम हो।
मिटा दो चीन की हविश अजल का एहतमाम हो।।
जियो तो यूं कि हर नफस सकूने दिल हराम हो।
चलो तो नग़माए जरस सदाए इन्तकाम हो।।
बता दो आज चीन को, कि जंग है तो जंग है।
उठो कि वक्ते जंग है, उठो कि वक्ते जंग है।। ○

बादलों के पार से हिम पर्वतों ने फिर पुकारा

(८)

डा० शभुनाथ सिह

बादलो के पार से हिम-पर्वतो ने फिर पुकारा ।

मौन नीली घाटिया उत्तर दिशाकी हो गयी है,
घाटियो की तान अन्धी दम्नको मे खो गयी है ।
चीरती हिम-सागरो, आकाशकी गहराइयो को,
आ रही है दूरसे आवाज कोई बेसहारा ।।

जो वहन करती रही है देवताओ की ध्वजाए,
उठ रही उन चोटियो मे दर्दसे डूबी ऋचाए ।
देवदारु विशाल कम्पित हो जिसे दुहरा रहे है
चीड-वनमे गूजता है फिर तुम्हारा नाम प्यारा ।।

याद फिर आने लगी गन्धर्व-लोको की कथाए
नयनमे तिरने लगी है स्वप्न-पखी अप्सराए ।
उठ रही इतिहास के उस पार जो अज्ञात ध्वनिया
भर रहा उनकी प्रतिध्वनिसे समयका यह किनारा ।।

गीत अब झरते नही है किन्नरोकी बासुरीसे ।
लौट आये मेघ यह सन्देश ले अलकापुरीसे--
'स्वाधिकार-प्रमत्त मेरे यक्ष ! फिर तुम हो न जाना ।
झुक न जाये शीश यह, हिम का मुकुट जिस पर सवारा ।'

फिर नए राष्ट्र ने भैरव राग गुंजाया है

डा० शिव मंगल सिंह 'सुमन'

आज़ाद देशकी प्रथम परीक्षा हुई शुरू,
कुरबानीका फिर नया ज़माना आया है।
फिर नयी चुनौती वहशी हूणोंकी आयी,
फिर नये राष्ट्र ने भैरवराग गुंजाया है।

हिमवान् हुआ घायल तो सागर हुंकारा,
चालीस कोटि लहरोंसे फिर फुफकार उठी।
हर नौजवान सिर लेकर चला हथेलीपर,
बलिदानोंकी वेदीपर हवि धधकार उठी।

घर-घरकी भट्ठीका ताप-क्रम तीव्र करो,
जिसमें तपकर सब भेदभावकी खोट गले।
फौलाद ढले! फैक्टरियोंमें फौलाद ढले!!

हर साल दिवालीपर मिट्टीके दीप जला,
हम अन्धकारसे लोहा लेने आये हैं।
इस साल जल उठे आहुतियोंके ज्योति-दीप,
घनघोर अमाके तार-तार थर्राये हैं।

हम कालकूट पीनेवाले प्रलयंकर हैं,
ताण्डवकी तालोंपर असुरोंको रौंदेंगे।
कल जिसको हमने दया-क्षमामय बुद्ध दिया,
उसको बम-बमकी गूंजोंसे थहरा देंगे।

हर भारतवासी जलती हुई मशाल बने,
हर कदम-कदमपर दुश्मनकी छाती दहले।
फौलाद ढले! फैक्टरियोंमें फौलाद ढले!!

मा के लाडलो ! दूधकी कीमत अदा करो,
सिर पर केसरिया कफन बाध झूमो, मचलो।
माताओ-बहनो ! दुर्गाचण्डी बनो आज,
महिषासुर के मद का मर्दन करने निकलो।
चामुण्डाके मुण्डो की माल अधूरी है
काली के कर का खप्पर अब भी रीता है।
जो होम-हुममसे वरण मौत को करता है
वह राष्ट्र अमर हो जाता युग-युग जीता है।
हिमवान हिमालय के शीतल उच्छ्वासो मे
विस्फोटक ज्वालामुखी दग्ध-लावा उगले।
फौलाद ढले ! फैक्टरियो मे फौलाद ढले !!

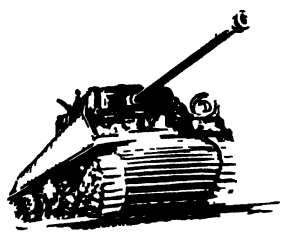

करना है या मरना है

श्री शिव शास्त्री कानोडिया

देश प्रेम का दीप जलाओ आज परीक्षा का दिन आया।
कफ़न बांध कर बढ़े कारवां सब को खरा उतरना है।
करना है या मरना है।।

दुश्मन झांक गया घर भीतर तोड़ हिमालय के द्वारे।
हम विदुला के बेटे! रानी झांसी के साथी सारे।
जयमल फत्ता गोरा बादल गोबिन्द के पाचों प्यारे।
ओ हमीर के हठी वंशजो! आओ सब मिल ललकारें।
बलिदानों को शीश झुकाओ, एक नया इतिहास बनाओ,
तूफ़ानों से टकरा कर भी आगे-आगे बढ़ना है—
पग पीछे न धरना है।

तुम निकलो तो सूरज निकले, हुंकारो डोले अम्बर।
तुम ठहरो तो सृष्टि श्वांस ले, भृकुटि तने तो प्रलयंकर।
जिधर बढ़ो तूफां शरमाये, झुक जाये पर्वत सागर।
शीश जहां अर्पण हो जाए, वहीं तीर्थ हो मंगलकर।
सिर देकर नव-तीर्थ बनाओ, आज रक्त का तिलक लगाओ,
त्याग वीरता से भारत का उपवन सुरभित करना है—
सब कुछ अर्पण करना है।
राणा सांगा शिव प्रताप का विक्रम भूल नहीं जाना।
झालाके अद्भुत सुत्याग को कभी न मन से बिसराना।

जिसका दुश्मन जीवित बैठा अच्छा उसका मर जाना।
मिर झुकने से मिर जाए, तो अच्छा है मिर का जाना।
गीता का सन्देश सुनाओ, घर घर आल्हा-ऊदल गाओ।
बन कर के चाणक्य, शत्रु को हर चालो मे छलना है—
वीरो हमे सभलना है।

दुश्मन लौट गया तो क्या है, हम न इसको छोडेगे।
बदला लेगे, बदला लेगे, कभी न बाकी छोडेगे।
ओ सीमा के वीर शहीदो! शपथ हमे भारत मा की।
अन्यायी दुश्मन की सब मिल पाप गर्गरिया फोडेगे।
वही प्रतिज्ञा फिर दुहराओ, अर्जुन भीष्म सभी बन जाओ।
रक्षा-बन्धन बाध बाध के मा की रक्षा करना है।
शीश हथेली धरना है।
करना है या मरना है।

छोड़ दो और बातें

कुमारी शेफाली

कवि-सम्मेलनों की बात
छोड़ दो किसी कल के लिए
आज तो
चलते हैं हाथ बंटाने--
जहां नई इमारत बनानी है ।

सभा में भाषणों की बात
छोड़ दो किसी कल के लिए
आज तो
चलते हैं कारख़ाने में--
जहां उत्पादन बढ़ाना है ।

शोक-सभाओं की बात
छोड़ दो किसी कल के लिए
आज तो
चलते हैं शहीद के घर--
जहां मदद पहुंचानी है ।

हम भस्म तुम्हें कर डालेंगे, शोलों के पास नहीं आओ

श्री शेरजंग गर्ग

पावन भारत की सीमा पर
बढ़ने वाले दुश्मन कायर,
तुम चूर-चूर हो जाओगे मत चट्टानों से टकराओ

क्यों क्षुद्र दृष्टि से देख रहे भारत के मुकुट हिमालय को?
जीवन इतना बेमोल नहीं, पहले सोचो फिर तनिक बढ़ो
मरघट ही तुम्हें दिखाएगी यह वीरों वाली पुण्य धरा
इस धरती का कोई सपूत दुश्मन से पहले नहीं मरा

सच अपनी जान बचा लो तुम
है मरण-घड़ी यह, टालो तुम
हा भस्म तुम्हें कर डालेंगे, शोलों के पास नहीं आओ !

क्या यही वीरता कहलाती, करके आलिंगन वार किया
तुम ने भोले विश्वासों को स्वार्थ के कारण तोड़ दिया,
कर सके तनिक सन्तोष नहीं इस गुलशन की हरियाली पर
क्या कभी उड़ेला है तुम ने काजल उजली दीवाली पर,

यों तो हम सबके रक्षक हैं,
पर दुष्ट-जनों के भक्षक हैं,
अब तो कोई निस्तार नहीं अपनी करनी का फल पाओ !

यह राम कृष्ण की धरती है, शायद तुम भुल गए होगे,
इस लिए अफीमी पीनक में अपने प्रतिकुल गए होगे,
गांडीव उठाया अर्जुन ने दुर्गा ने भृकुटी तानी है,
भारत के बच्चे बच्चे में फिर जाग उटी कुर्बानी है.

उत्तर औ' दक्षिण जाग गए,
पूरब औ' पश्चिम जाग गए,
केवल तुम को ही सोना है, लो वार सहो और सो जाओ !

हमें नेफा बचाना है, हमें पीकिंग मिटाना है

श्री शैलेन्द्र कुमार पाठक

हमें नेफा बचाना है, हमें पीकिंग मिटाना है

जवानी नाज में बोली
बड़े अन्दाज में बोली
नये स्वर - साज में बोली
लहरियाँ झूम कर बोली
डगरियाँ घूम कर बोली
हमें नेफा बचाना है, हमें पीकिंग मिटाना है

कि हिमगिरि ने दिया नारा
बरफ बन बैठी अंगारा
जो आया सामने, हारा
न हमने झुकना सीखा है
न हमने रुकना सीखा है
हमें नेफा बचाना है, हमें पीकिंग मिटाना है

अब हम ललकार बैठे हैं
कि हम हुंकार बैठे हैं
लिये सहार बैठे हैं
तुम्हारा नाश करना है
कि सत्यानाश करना है
हमें नेफा बचाना है, हमें पीकिंग मिटाना है

हवाएं बोल उट्ठी हैं
घटाएं बोल उट्ठी हैं
दिशाएं बोल उट्ठी हैं
हमें आगे को बढ़ना है
हमें पीकिंग पे चढ़ना है
हमें नेफा बचाना है, हमें पीकिंग मिटाना है

कि भारत बोल उट्ठा है
भुजाएं खोल उट्ठा है
कि पौरुष तोल उट्ठा है
तुम्हें नीचा दिखाना है
तिरंगा - ध्वज लगाना है
हमें नेफा बचाना है, हमें पीकिंग मिटाना है

चवालिस कोटि उठ बैठे
लिये विस्फोट उठ बैठे
कि करने चोट उठ बैठे
मज़ा तुमको चखाना है
तुम्हें जग से मिटाना है
हमें नेफा बचाना है, हमें पीकिंग मिटाना है

लो, रोको वीर चलते हैं
लिये शमशीर चलते हैं
ये आंधी चीर चलते हैं
न खाली वार जाता है
ये दुश्मन को मिटाता है

हमे नेफा बचाना है, हमे पीकिंग मिटाना है

हमी ने कस मारा है
कहा रावण विचारा है
यहा यमराज हारा है
तुम्हारी है कहा हस्ती
भुला देगे सभी मस्ती
हमे नेफा बचाना है, हमे पीकिंग मिटाना है

चढा है आख पर जाला
जो कुछ देखा नही भाला
पडा भारत से अब पाला
तुम्हारी मौत आई है
यहा तक खीच लाई है
हमे नेफा बचाना है, हमे पीकिंग मिटाना है।

स्वतन्त्र देश यह, सदा स्वतन्त्र ही रहेगा

श्री शैलेश मटियानी

अछोर-सिंधु-से बहो,
अडिग हिमाद्रि-से रहो,
अजेय आस्था लिए, अकम्प-कंठ से कहो—
स्वतन्त्र देश यह, सदा स्वतन्त्र ही रहेगा !
प्रत्येक व्यक्ति 'जय महान् हिन्द' ही कहेगा !

शौर्य का प्रतीक यह तिरंग-ध्वज झुके नहीं,
कीर्ति का उदीयमान् सूर्य-रथ रुके नहीं !
प्रशस्त वक्ष पर प्रचण्ड वज्र यदि गिरे, सहो—
मगर प्रत्येक क्षण यही
अकम्प-कंठ से कहो—
स्वतन्त्र देश यह, सदा स्वतन्त्र ही रहेगा !
प्रत्येक व्यक्ति 'जय महान् हिंद' ही कहेगा !

प्राण-मोह त्याग दो, स्वदेश की पुकार पर—
अभीत शीश दो, मगर अनेक सिर उतार कर !
बनो अदम्य अग्नि-ज्वाल, शत्रु-वंश को दहो !
दिशा-दिशा गुंजार दो,
अकम्प कंठ से कहो—
स्वतन्त्र देश यह, सदा स्वतन्त्र ही रहेगा,
प्रत्येक व्यक्ति 'जय महान् हिंद' ही कहेगा !

अतीत कह रहा—भविष्य के सिगार बन जियो !
महान् देश के महान् कर्णधार बन जियो !
शकारि देश के सपूत, शत्रु-दश मत सहो !
अडोल एक लक्ष लो,
अकम्प-कंठ से कहो—

स्वतन्त्र देश यह, सदा स्वतन्त्र ही रहेगा ।
प्रत्येक व्यक्ति 'जय महान् हिद' ही कहेगा ।

यह नेफा की भूमि हमारी, यह लद्दाख हमारा है

श्री श्याम बहादुर सिंह 'नम्र'

अरे चीनियो, सीमा छोडो, यही हमारा नारा है ।
यह नेफा की भूमि हमारी, यह लद्दाख हमारा है ।।

जाग रहा है सारा भारत जाग रहे सीमा के प्रहरी ,
जाग रहा नगराज हिमालय, जाग रही है गगा-लहरी !
नैतिकता का खड्ग हाथ ले जाग रही है अब रणचण्डी,
जैसे तुम्हे निगल जानेको जाग रही है यमुना गहरी !
नागिन बन कर जाग उठी अब ब्रह्मपुत्र की धारा है ।
यह नेफा की भूमि हमारी, यह लद्दाख हमारा है ।।

कन्फ्यूशियस मार्क्स की बाते भी तूने कर दी अनजानी !
पचशीलका गला घोंटना चाह रहा है तू अभिमानी !
जितने थे आदेश बुद्धके, तुमने सबको ठुकराया है !
आज सत्य के ऊपर तुमने फेर दिया धोखे का पानी !
अपने ही अतीत के आगे तेरा तो पौरुष हारा है ।
यह नेफा की भूमि हमारी, यह लद्दाख हमारा है ।।

सावधान लंकेश! राम फिर लेकर तीर-कमान जगे हैं !
अपना पीकिग आज सम्हालो, पवनपुत्र हनुमान जगे हैं!
शंख-चक्र ले कृष्ण जगे है, भीम जगे है गदा सम्हाले !
रे दुर्योधन, गाण्डीव के अर्जुन के अभिमान जगे हैं !

शंकर ने अब नयन तीसरा अपना पुनः उघारा है ।
यह नेफा की भूमि हमारी, यह लद्दाख हमारा है ।।

राय पिथौरा भी ध्वनि-भेदी लिए तीर की धार जगे हैं।
अब फिर से राणा प्रताप लेकर अपनी तलवार जगे है।
युग-सीमा को तोड़ शिवाजी ने फिर से वाहिनी सभाली।
रणचण्डी की पुत्री लक्ष्मीबाई के उद्‌गार जगे है।
जिनके वशज पर अन्यायी ! तू ने प्रलय पुकारा है ।
यह नेफा की भूमि हमारी, यह लद्दाख हमारा है ।।

भाई बनकर भी तूने भाई के ही घर तोडा ताला ।
भारत की हर उमर खौलती, नस-नस उगल रही है ज्वाला।
तुम को सबक सिखा देगे अब चोरी-सीनाजोरी का ।
दुश्मन का सिर काट काट कर गूथेगे चडी की माला ।
जिसको मोम समझते हो वह एक तप्त अगारा है ।
यह नेफा की भूमि हमारी, यह लद्दाख हमारा है ।।

जिस माटी मे पले आज हम उसके हित सब कुछ झेलेगे ।
अगर मौत आ जाए, तो उस से भी डट कर हम खेलेगे ।
तुम सिक्किम, भूटान और आसाम हडपना चाह रहे हो ।
सीमा तो सब ले ही लेगे, तिब्बत को भी अब ले लेगे ।
तुमने सत्य और मानवता के व्रत को ललकारा है !
यह नेफा की भूमि हमारी, यह लद्दाख हमारा है ।।

मेरे हर बांके जवान की तनी हुई संगीन है

श्री श्रीनिवास 'श्रीकान्त'

मैं भारत हूं मेरे पीछे सदियों का इतिहास है,
मुझको अपनी मंज़िल का, पूरा-पूरा अहसास है।

आर्यों से लेकर मुग़लों तक जो भी मुझपर आया है,
उन सबके चेहरे पर मेरे विश्वासों की छाया है।
जाने कैसा सागर है, मेरे मनकी गहराई में,
जो आता है, घुल जाता है, लहरों भरी इकाई में।

यह माना, मेरे स्वभाव की संस्कृति बड़ी पुरानी है,
यह माना, मेरा जीवन अब भूली हुई कहानी है;
लेकिन मुझको अब भी अपनी सच्चाई पर मान है,
मुझे पता है, कौन आदमी और कौन शैतान है।

एक सत्य पर चार युगों का बोझ उठाता आया हूं,
जो भी मिला मुझे मैं उसको गले लगाता आया हूं।
कहने को धरती का टुकड़ा, समझो तो इन्सान हूं,
शान्ति चाहता हूं, शायद मैं इसी लिए नादान हूं।

लेकिन यह मत समझो मेरी भुजा शक्ति से हीन है,
मेरे हर बांके जवान की तनी हुई संगीन है!
मेरी नस-नस में बहता है गंगा-यमुना का पानी,
मेरी आंखों में नाचा करती है झांसी की रानी।

फिर भी मुझ को गाधी के आदर्शों पर विश्वास है,
मुझको अपनी मजिल का पूरा-पूरा अहसास है।
जिसने झेला हो न महाभारत के हाहाकार को,
वह क्या जाने इतिहासो की करुणाभरी पुकार को।

जिसने भुला दिया हो पिछले महायुद्ध की बात को,
जो न देख पाया हो आगे आने वाली रात को,
जिसके अधरो पर आदम की गुहा-मानवी प्यास हो,
जिसके अन्दर सत्ता-लोलुप शैतानो का वास हो।

जो इस युग मे रह कर भी इन्सान न हो, हैवान हो,
वह चाहे 'हिटलर' हो कोई या चगेजी-शान हो--
उसका झूठा दम्भ मिटाना, यही हमारा धर्म है,
उसके आगे शीश झुकाना सब से बडा अधर्म है।

साम्यवाद के खूनी बच्चो रहने दो अभिमान को,
तुम्हे समझना होगा पहले दुनिया मे इन्सान को!
लडना है तो लड़ो भूख से कगाली की आग से,
भला चाहते हो सबका तो बचो युद्ध की आग से!

अभी एशिया मुक्त हुआ है बरसो की बरबादी से,
तुम को क्या खतरा है बोलो, भारत की आजादी से?
'जिओ और जीने दो सबको' यही हमारा नारा है!
हमने हिम-गिरि के शिखरों से--कितनी बार पुकारा है!!

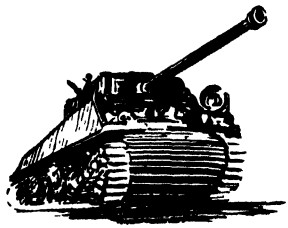

मैं सैनिक बन जाऊंगा

श्रीमती सत्यवती शर्मा

मैं सैनिक बन जाऊंगा

सेनानी वर्दी पहनूंगा, बूट करेंगे ठक-ठक-ठक ।
कंधे से बंदूक लगेगी, मुन्नी देखेगी इक-टक ।
दुश्मन का मैं दमन करूंगा, जय की जोत जगाऊंगा ।
मैं सैनिक बन जाऊंगा ।

चुन्नू मुन्नू तुम भी आओ, सेना एक सजायेंगे ।
हिंद देश के प्रहरी हैं हम, सीमा पर डट जायेंगे ।
तुम रिपु दल की थाह लगाना, मैं बंदूक चलाऊंगा ।
मैं सैनिक बन जाऊंगा ।

मुन्नी हमको तिलक करो तुम, आज जा रहे हम रण में ।
दुश्मन को पीछे पटका दें, यही लालसा है मन में ।
तन-मन का मैं अर्घ्य चढ़ा कर, मां का मान बढ़ाऊंगा ।
मैं सैनिक बन जाऊंगा ।

हिम-मंडित यह शुभ्र हिमालय, ऊंचा भाल हमारा है ।
नीच शत्रु ने मलिन आंख से, इसको आज निहारा है ।
अरि मर्दन कर उसी रक्त से, मां को तिलक चढ़ाऊंगा ।
मैं सैनिक बन जाऊंगा ।

भारत से टकराने वाला मिट्टी में मिल जाएगा

○

श्री सरस्वती कुमार 'दीपक'

हम सबको रक्षा करनी है, लडते हुए जवानो की ,
और हमे रखवाली करनी, अन्न-भरे खलिहानो की ,
तभी योजनाओ का रथ, आगे-आगे बढ पाएगा !
तभी मुक्ति-अभिमन्यु हमारा, विजयकेतु फहराएगा ।
भूखे हाथो मे मशीन का पहिया नही चला करता
भूखे-प्यासे हाथो मे हल, बार-बार उछला करता
भूखे सैनिक के स्वर मे, कब अरि का उर दहला करता !
भूखे देशो का अम्बर मे केतु नही मचला करता ।
हमको फसल नही कटवानी, सरहद पर इन्सानो की,
रक्त-वृष्टि से हमे सृष्टि सुलगानी है शैतानो की——
तभी हमारी सत्यकथा को सारा जग पढ पाएगा !
देश हमारा गौरव के सोपानो पर चढ पाएगा ।
सगीनो की नोक, कथाए कब लिखती अनुराग की,
हिम शिखरो पर चला बहाने को अरि सरिता आग की,
हम पद्मिनियो के बेटे है, आदत रण के फाग की!
अपनी धरती पर उगती है फसल हमेशा त्याग की ।
कफन बाध हम घर से निकले, होड लगी बलिदानो की ,
जन्मभूमि हित तन, मन, धन देने वाले दीवानो की ,
देखे कौन खोलकर सीना, भारत से भिड पाएगा ।
हिमगिरि से टकराने वाला मिट्टी मे मिल जाएगा ।

○

चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता [दुर्गा सप्तशती]

झांसी के दुर्ग के बाहर महारानी लक्ष्मीबाई की प्रस्तर प्रतिमा

वतन की आबरू खतरे में है, होशियार हो जाओ!

श्री साहिर लुधियानवी

वतन की आबरू खतरे मे है, होशियार हो जाओ,
हमारे इम्तहा का वक्त है, तैयार हो जाओ !

हमारी सरहदो पर खून बहता है, जवानो का,
हुआ जाता है दिल छलनी हिमालय की चटानो का।
उठो रुख फेर दो दुश्मन की तोपोके दहानोका,
वतनकी सरहदो पर आहिनी दीवार हो जाओ ।।

वह जिनको सादगी मे हमने आखो पर बिठाया था,
वह जिनको भाई कह कर हमने सीने से लगाया था ।
वह जिनकी गरदनो मे हार बाहोका पहनाया था,
अब उनकी गरदनोके वास्ते तलवार हो जाओ ।।

न हम इस वक्त हिन्दू है, न मुस्लिम है, न ईसाई,
अगर कुछ है तो है इस देश, इस धरती के शैदाई ।
इसीको जिन्दगी देगे, इसी से जिन्दगी पाई,
लहूके रग से लिक्खा हुआ इकरार हो जाओ ।।

खबर रखना, कोई गद्दार साजिश कर नही पाये,
नजर रखना, कोई जालिम तिजोरी भर नही पाये ।
हमारी कौम पर तारीख तोहमत धर नही पाये ,
वतन-दुश्मन-दरिन्दो के लिए ललकार हो जाओ ।।

लुटेरों और चोरों को सज़ा देने का वक्त आया

○

श्री साहिर होशियारपुरी

उदूये-अम्न को दरसे फना देनेका वक्त आया,
सितम ईजादकी हस्ती मिटा देनेका वक्त आया।

वतन पर जानकी बाज़ी लगा देने का वक्त आया।
हमें लद्दाख में दादे-वफा देनेका वक्त आया।

जिसे अपना समझकर हमने शाने-ज़िन्दगी बख्शी,
उसीको बज़्मे हस्तीसे उठा देने का वक्त आया।

जो आंखें आतशे इब्लीसियतके तीर बरसायें,
उन आंखों को जहन्नुममें जला देने का वक्त आया।

जो दिल जंगो-जदलका अज़्म नाहंजार रखता हो,
उसे ख्वाबे मुसलसल में सुला देने का वक्त आया।

जो गर्दन नश्शये-नख़्वत में गर्दूं से भी टक्कर ले,
उसी गर्दनको कदमों पर झुका देने का वक्त आया।

जो ज़ालिम हैं, जो ग़ासिब हैं, जो मोहसिन-कुश जो कातिल हैं,
उन्हें रस्मे वफादारी सिखा देने का वक्त आया।

उठो ए हिन्दियो! इंसाफकी तलवार लहराकर,
लुटेरों और चोरों को सज़ा देने का वक्त आया।

जिसे सरपर चढ़ा रक्खा था हमने मिसले-गुल साहिर,
उसीको आज नज़रों से गिरा देने का वक्त आया।

सीमा के सिपाही के नाम !

○

श्री सुमनेश जोशी

मा का प्यार, बहिन की ममता,
शिशुओ का सुख छोड कर !
यौवन मे यौवन के सपनो से
अपना मुख मोड कर !

आधी सा चल पडा,
हिमानी घाटी मे भूचाल सा !
तन कर खडा राष्ट्र-रक्षा को
तू फौलादी ढाल सा !

ऊबड-खाबड पथ राह का
तू अनजाना आज है
लाघ रहा हिम-शिखर
हाथ में तेरे मा की लाज है !
सर पर कफन, कफन वाला सर
लिए हथेली पर अपने
नेफा की धरती पर करने
चला सत्य मा के सपने !

शोणित का अभिषेक आज
करने पर्वत कैलाश पर
प्रलयकर को चला जगाने
मन के दृढ विश्वास पर !
बलि-पथी ! तू आज प्रलय के
पर्दे स्वय हटाता चल !
हिमगिरि के प्राणो मे सोया
ज्वालामुखी जगाता चल !

(२)

अगर विरह की आग
भडक कर जले उसे जल जाने दे ।
अगर मिलन की बेलाए भी
टले आज, टल जाने दे ।

आज गरजती तोपो से
करना तुझ को आलिगन है ।
आगे बढकर महामृत्यु को
देना विष का चुम्बन है ।

आज मरण त्यौहार राष्ट्र ने
युग-युग बाद मनाया है !
आज जवानी को जौहर
दिखलाने का दिन आया है ।

(३)

मंज़िल दूर, पंथ बीहड़ है
तू झंझा सा बढ़ता जा
मृत्युंजय तू ! आज
चीनियों की सेना पर
चढ़ता जा
तांडव कर नेफा के रण में
प्रलयंकर की तानों पर
तुझे रक्त से लिखना है
इतिहास श्वेत चट्टानों पर

प्रलय-पुत्र तू आज
उगलता चल
अग्नि की ज्वाला को
भस्मसात करता चल
पग पग पर चीनी
हैवानों को ।

(४)

जूझ रहा तू– तेरे पीछे
पूरा हिन्दुस्तान है
तेरे दृढ़ निश्चय में भी
चवालीस कोटि की तान है

राष्ट्र-धर्म की
अमर-ज्योति से
जग-मग पंथ तुम्हारा हो
विजय या कि फिर
बाण मृत्यु का
यही तुम्हारा नारा हो
खड़ा राष्ट्र कर रहा प्रतीक्षा
जयमाला पहनाने को
मरण पर्व के बाद
विजय का उत्सव
नया मनाने को ।

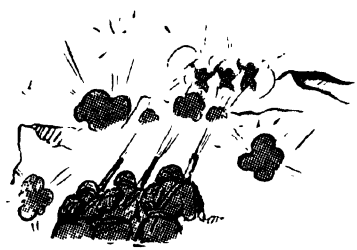

यहां हर जन बलिदानी है

श्रीमती सुमित्रा कुमारी सिनहा

हमारी यही कहानी है,
राष्ट्र की यही कहानी है।

यहां हाथों में पलता त्याग,
हृदय से लुटता है अनुराग,
मरण का पर्व मनाते हम,
यहां हर जन बलिदानी है।

अहिंसा की ही शक्ति प्रसार,
सत्य का हम करते व्यवहार,
किन्तु यदि कोई दे व्यवधान
कला रण की भी जानी है।

साधना हम करते चुप-चाप,
छेड़ने पर देते हैं श्राप,
न सह सकते हम अत्याचार,
शीश देने की ठानी है।

देश की यही कहानी है!
यहां हर जन बलिदानी है, राष्ट्र की यही कहानी है।

राष्ट्र की यही कहानी है

यहां का जन-जन दानी है

नाग के फन को कुचल कर ही दम लेना है

डा० सुरेशचन्द्र गुप्त

अंधेरे मे
शान्ति के जुगनू
टिमटिमाते है
लौ लगा कर
बुझ जाते है ,
फिर भी तुम कहते हो कि
शान्ति की वार्ता
रग लाएगी
होली की फिजा मे
चीन मे नई बहार
आ जाएगी !!
मेरे दोस्त !
इस भुलावे की
गुलाबी दुनिया को
भूल जाओ ।
याद रखो —
दोस्ती का जनाजा
उठ गया है
नेफा के मोरचे का
पहला शहीद
कफन से झाक कर
यो कह गया है—
'मै नही मरा
बल्कि जीवित हू तुम मे,
तब तक नही मरूगा
जब तक बेशर्म शत्रु की
छाती को
चीर कर
तुम खून की होली
नही खेल लोगे ।'
फिर भरोसा भी किस पर ?
क्या उस पर
जिसने हमारे बेटो को
हममे छीन लिया ?
सधवाओ का सिदूर
पोछ लिया ?
घर के चिरागो को गुल किया ?
यह सब देख कर भी
क्या तुम्हे जोश नही आता ?
दोस्तो ! प्रण करो—
नाग के फन को
कुचल कर ही दम लेना है
दुनिया मे सबसे अजेय
भारत की सेना है ।

हिमालय से आ रही पुकार, रहो तैयार, रहो तैयार !

श्री सोहनलाल द्विवेदी

गूजनी है ध्वनि बारम्बार, रहो तैयार, रहो तैयार !
कही लुट जाय न अपना ताज,
कही लुट जाय न अपना राज,
खुल गया दुनिया भर मे राज,
शत्रु है अपना धोखेबाज !
हिमालय से आ रही पुकार,
गूजनी है ध्वनि बारम्बार, रहो तैयार, रहो तैयार !

न चलने देना कोई चाल,
न गलने देना कोई दाल,
न झुकने देना मा का भाल,
न चुकने देना मा का ख्याल,
आज इस पार या कि उस पार,
हिमालय से आ रही पुकार, रहो तैयार, रहो तैयार !

हिमालय की मत भूलो आह,
हिमालय की मत भूलो दाह,
हिमालय से आ रही पुकार,
हिमालय की मत भूलो चाह,
न जब तक खुले विजय का द्वार
हिमालय की मत भूलो राह, रहो तैयार, रहो तैयार ।

धवल हिमालय स्नान कर रहा तप्त रक्त की धारों से

○

श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी'

उँगली पकड़ चलाया जिस को, पाल-पोष कर किया जवान।
वही चीन चढ़ कर आया है हितकारी के लेने प्राण।
पर यह भारत जीर्ण नहीं है, इस में भी है शौर्य महान्।
भारत की सीमा पर रिपु का रह न सकेगा नाम-निशान।
भारत समरभूमि में, आया सज कर अब हथियारों से।
धवल हिमालय स्नान कर रहा तप्त रक्त की धारों से।

पता नहीं था भाई बन कर घुस आए ज़हरीले नाग।
प्रगट हुए प्रकृत-स्वरूप में कपट-केंचुली को अब त्याग।
गीत प्रीत के गाने वाले उगल रहे तोपों से आग।
हिमगिरि के शृंगों पर हम से खेल रहे लोहू की फाग।
हमें सुलाए रखा शत्रु ने कपट-भरे व्यवहारों से।
धवल हिमालय स्नान कर रहा तप्त रक्त की धारों से।

उपकारों का बदला उस ने दिया अचानक करके वार।
चढ़ा हमारी सीमा पर, ले अगणित सेना, शस्त्र अपार।
थे तैयार नहीं हम रण को पाई कुछ प्रारम्भिक हार।
कायर नहीं भारतीय हैं, देख चुका इस को संसार।
बदला लेगा निश्चय जानो, भारत इन हत्यारों से।
धवल हिमालय स्नान कर रहा तप्त रक्त की धारों से।

नए चीन को मित्र मान कर किया सतत ही हमने प्यार।
शब्द हमारे गूजे जग मे बन कर उस के पैरोकार।
गले लगाया हमने उस को शकित था जिस मे समार।
किसे पता था कभी डसेगा, विषधर बन कर, उर का हार।
ऋणी चीन का रोम-रोम है, भारत के उपकारो मे।
धवल हिमालय स्नान कर रहा तप्त रक्त की धारो मे।

टिड्डीदल की तरह हिमालय पर धँस आया कपटी चीन।
माना केवल सख्या-बल मे कई चौकिया ली थी छीन।
पर न करे प्रतिकार, नही है हम भी इतने साहसहीन।
अपनी भूमि चीन से वापस छीनेगा भारत स्वाधीन।
डरा नही सकता रिपु हम को टैको या बममारो मे।
धवल हिमालय स्नान कर रहा तप्त रक्त की धारो मे।

राज-मुकट भारत का हिमगिरि इस पर रखे चीन ने पाव।
चले गए हैं आज हाथ से कुछ छोटे-छोटे से गाव।
हुए हिद के उर में इस मे कभी न भरने वाले घाव।
भारत के कोने-कोने मे जागा प्रचुर समर का चाव।
हिम्मत भारत हार न सकता कुछ प्रारभिक हारो मे।
धवल हिमालय स्नान कर रहा तप्त रक्त की धारो मे।

दिया प्रथम बलिदान जिन्होने उन मे थे दधीचि के प्राण।
होगा उनकी अमर अस्थियो मे अब वज्रो का निर्माण।
भारत का सकल्प अडा है रिपु के सम्मुख बन चट्टान।
क्रूर आसुरी बल पर विजयी होगा भारत का बलिदान।
बढे कदम पीछे न हटेगे रिपु के प्रबल प्रहारो से।
धवल हिमालय स्नान कर रहा तप्त रक्त की धारो से।

भारत का पुरुषार्थ करवटें लेकर आज उठा है जाग।
भारत के प्रत्येक हृदय में धधक उठी है भीषण आग।
भारत के हर नगर-ग्राम में आज छिड़ा है रण का राग।
भारत के उज्ज्वल यश को हम लगने देंगे कभी न दाग।
कस कर कमर बढ़े रण-बांके लड़ने इन बटमारों से।
धवल हिमालय स्नान कर रहा तप्त रक्त की धारों से।

सिंह समान उठा कर मस्तक भारत सहसा उठा दहाड़।
अब डालेगा पामर रिपु के दुस्साहस का सीना फाड़।
रोक न सकते इस की गति को नदी, घाटियां और पहाड़।
रिपु की राज्य-लालसा को अब देंगे हम धरती में गाड़।
मुक्त भूमि भारत की होगी रिपु के अत्याचारों से।
धवल हिमालय स्नान कर रहा तप्त रक्त की धारों से।

आज देश की जीवन-गति में नया सुनिश्चित आया मोड़।
समरभूमि में शौर्य प्रदर्शित करने की तरुणों में होड़।
लोहा लेने चले शत्रु से, जग की ममता-माया छोड़।
हिमगिरि के शिखरों पर गूंजे हैं प्रचंड तांडव के तोड़।
घाटी घाटी गूंज उठी है वीरों की हुंकारों से।
धवल हिमालय स्नान कर रहा तप्त रक्त की धारों से।

कायर नहीं देश भारत है, नहीं प्रलय से भी भयभीत।
उज्ज्वल इसका वर्तमान है, उज्ज्वल इसका रहा अतीत।
रोक नहीं सकते वीरों को आंधी, वर्षा, ज्वाला, शीत।
भारत के अदम्य पौरुष की निश्चय होगी अंतिम जीत।
ज्वार जोश का नहीं रुकेगा गोलों की बौछारों से।
धवल हिमालय स्नान कर रहा तप्त रक्त की धारों से। ○

चल मर्दाने सीना ताने

डा० हरिवंश राय 'बच्चन'

चल मर्दाने सीना ताने
हाथ हिलाते, पाव बढाते, मन मुस्काते, गाते गीत ।

एक हमारा देश, हमारा
वेष, हमारी कौम, हमारी
मंजिल, हम किस से भयभीत ।
चल मर्दाने सीना ताने
हाथ हिलाते, पाव बढाते, मन मुस्काते, गाते गीत ।

हम भारत की अमर जवानी
सागर की लहरें लासानी
गंग-जमुन के निर्मल पानी
हिमगिरि की ऊंची पेशानी
सब के रक्षक सबके मीत ।
चल मर्दाने सीना ताने
हाथ हिलाते, पाव बढाते, मन मुस्काते, गाते गीत ।

जग के पथ पर जो न रुकेगा
जो न झुकेगा, जो न मुडेगा
उसका जीवन, उसकी जीत ।
चल मर्दाने सीना ताने
हाथ हिलाते, पाव बढाते, मन मुस्काते, गाते गीत ।

आज रक्त दान दो, आज प्राण दान दो

डा० हरीश

देश के लिए उठो
देश के लिए जुटो–
दोस्त ! हिन्द की पुकार, आज रक्त-दान दो, आज प्राण दान दो

तुम चलो तो चल पड़े ज़िन्दगी का कारवां
तुम जलो तो जल उठे यह बुझी-बुझी शमां
अंधकार दूर हो भेद-भाव तोड़ कर
टूट सूत्र जो गए आज उन्हें जोड़कर
एकता की ज्वाल लो
हाथ में मशाल लो–
दोस्त ! मांस मांस को, फिर नया विहान दो....

राग गूंजती चले देश के निवासियो
आग जूझती चले मेरे देशवासियो
यह समर है आन का आज रक्त चाहिए
यह समर है प्राण का देश-भक्त चाहिए
छंद छंद गा उठे
जोश गुनगुना उठे–
दोस्त ! प्यार की पुकार, आज नया गान दो....

तुम उसी के देश के मौत जिसे जाननी
तुम उसी के वेश के मौत जिसे माननी

वह प्रताप देश का एक अग्नि-दूत था
वह प्रताप राष्ट्र का भैरवी सपूत था
याद को सवार दो
प्राण रक्त वार दो—
दोस्त ! बार बार आज, दान स्वाभिमान दो

छोड कर पहेलिया प्यार की विलास की
छोड रगरेलिया हार की विनाश की
चीन जान ले सभी यह शिवा का देश है
चीन मान ले अभी सत्य यह सदेश है
मौत हाथ पर धरे
जोश प्राण मे भरे—
दोस्त ! हर युवक को आज, तीर दो कमान दो

शर्म शत्रु को नही नीच है कमीन है
एक बार सब कहो हिन्द की जमीन है
यह जमीन है वही, सिह जन्मते जहा
यह जमीन है वही, शूर गर्जते जहा
एक वही गूज दो
वैरियो को भूज दो—
दोस्त ! चीन हिल उठे, हर कदम जबान दो

भूल कर ही आ गया यह रगा सियार है
साथियो ! क्या सोचते यह बुझा अगार है
दीप पर्व पर यहा चल रही थी गोलिया
रक्त से न खेलोगे ? आ रही है होलिया

धन तो मैल हाथ का
खेल बात बात का–
दोस्त ! खून चाहिए, सिर्फ दान प्राण दा...

जाग उठो देवियो ! रण बुला रहा तुम्हें
चंडियो ! चलो वहां प्रण बुला रहा तुम्हें
चीनियों के रक्त से प्यास लो बुझा सभी
मां ! उठो पिये चलो खून है बहुत अभी

तोप आज चल रही
भैरवी मचल रही–
दोस्त ! एक बार फिर, हर जवान जान दो...

तुम कहां हो ताण्डवी नृत्य चाहिए हमें
जिन्दगी के मूल्य का सत्य चाहिए हमें
लास्य अंगराग को तोड़ दो मरोड़ दो
मेघराज चांदनी नूपुरों को छोड़ दो

वज्र की हैं छातियां
मृत्यु की प्रभातियां–
दोस्त ! बाहुएं उठा, आज वक्ष तान दो...

पार्थ ! तेर तूण के तीर चाहिये हमें
आज दुर्गादास से वीर चाहिए हमें
जाग उठो पद्मिनी लक्ष्मी अमर सती
आज वक्त आ गया ओ बहन ! दुर्गावती

एक बार हूंक दो
शंख एक फूंक दो–

शत्रु को हम नष्ट करके देश को विकसित करेंगे

श्रीमती हीरा देवी चतुर्वेदी 'मस्त'

बढ़ रहा है देश अपना, दिन रहे या रात काली ।

बांध हमने हैं बनाए, और बिजली भी बना ली ।
जगमगा दी आज हमने गांव की गलिया निराली ।

गर्व से अब देश अपना, रेल के इंजन बनाता ।
युद्ध के भी शस्त्र अब तो, मुक्त भारत है बनाता ।

यह सफलता योजना की, कह रहा है विश्व सारा ।
बन चुका है लक्ष्य अपना, हित सभी का मन्त्र प्यारा ।

स्वप्न में भी किन्तु यह सब, चीन को किंचित न भाया ।
भूल सारी मित्रता को, शत्रु बनकर आज आया ।

कर दिया हमला अचानक, आज भारत पर हमारे ।
कर दिए हैं योजना के रुद्ध इसने स्रोत सारे ।

हो भले ही दूर मंज़िल, क्यों रुकेंगे पग हमारे ?
हैं दमकते अन्त में तो, सत्य के ही जब सितारे ।

शत्रु को हम नष्ट करके, देश को विकसित करेंगे ।
चल रही जो योजनाएं, हम उन्हें दीपित रखेंगे ।

चीन ! कान खोल ले ! तूर्य बज रहा यहां
वीरता का जूझता सूर्य सज रहा यहां
जाग उठी आज हैं आग की कहानियां
कह रही हिमालयी हिंद की जवानियां
और कुछ न पायेगा
टूट टूट जायेगा--
दोस्त ! गोलियों से तुम, छातियां वे छान दो...

चाउ चरमरा चला, मौत को बुला गया
जाग उठो दोस्तो ! इन्कलाब आ गया
टेर दो हे भाइयो ! आज वन्दे मातरम्
फेर कायरों को दो आज वन्दे मातरम्
फिर नशे में झूम लो
औ' संगीन चूम लो--
दोस्त ! भाल-भाल को, रक्त आसमान दो..

खून दो हे साथियो ! मांग रहा देश है
रक्त दान भाइयो--प्राण-दान शेष है
शब्द रक्त में ढलें, दीप रक्त के जलें
सान रक्त गीत में, जिन्दगी को ले चलें
रक्त पर चढ़े .चलो
रक्त पर बढ़े चलो--
दोस्त ! आज देश को रक्त का उफान दो...

आज रक्त दान दो, आज प्राण दान दो ।

तूफानों में जन्मे हैं हम

○

श्री हरीश हिमानी

तूफानों मे जन्मे है
आंधी ने हमको पाला है।
मस्तक पर शीतल बरफ लिये
सीने मे लेकिन ज्वाला है।
जितनी विपदाए आए––
मस्ती से उन को झेलेंगे,
अब तक तो तट बैठ––
सभी को
राय सुलह की देते थे,
दुश्मनो ! तुम्हारे आवाहन पर
मझधारो से खेलेंगे।
दुनिया मे, पहले पहल––
हमी ने तुम को––
मान दिया, सम्मान दिया,
अभिमान दिया, लेकिन
तुम कितने जाहिल हो ?
बदले मे हम को
लाशों का मैदान दिया,
रक्त सना श्मशान दिया।
सुनकर ललकारें बारबार
अभिमान हमारा जाग चुका है
और द्वेष का भूत—हमारे घर से
कब का भाग चुका है!
अब कोई आम्भीक––न पोरस की
शक्ति का भेद बताएगा
और नया जयचन्द न अब––
गोरी से हाथ मिलाएगा।
तुमने सोचा था लडने को––
हम शस्त्र कहा से लाएगे ?
तोपो के भारी गोलो मे––
डर जाएगे झुक जाएगे।
देकर बलिदान जवानो ने––
तोपो को क्षण मे मोड दिया
चीनी सेना के सागर का
कुछ वीरों ने मुह तोड दिया
सुनो ! आज से खेतो मे,
हम अन्न नही,
बारूद उगाएगे, गोलिया बनाएगे
भारत पर हमला करने का
दुश्मन को मजा चखाएगे।
भारत की उन्नति के––
पावन दर्पण को–जिसने तोडा है।
उसके सपनो का––
दूषित ससार उजाड़ेगे। ○

चीनी आक्रांताओं के छक्के छुड़ाने वाले उन पंजाबी वीरों की सूची, जिन्हें राष्ट्र ने परमवीर चक्र, महावीर चक्र, वीर चक्र आदि पदकों से विभूषित किया

—:o:—

परमवीर चक्र विजेता

मेजर धनसिंह थापा, बालूगंज, शिमला

सूबेदार जोगिन्दरसिंह, माहिया कलां, जिला फिरोजपुर

महावीर चक्र विजेता

मेजर अजीतसिंह, कोठा शंशा वाला, जिला लुधियाना

मेजर एम० एस० चौधरी, बूबलधान, जिला रोहतक

सिपाही केवल सिंह, कोटली थान, जिला जालन्धर

हवालदार स्टांजिन फुंचोक, सिस्सू, जिला लाहौल एवं स्पिति

मेजर एस० एस० रंधावा, अधोई टोलांवाली, जिला अम्बाला

स्क्वैड्रन लीडर जे० एम० नाथ, बरकताबाद, जिला रोहतक

मेजर गुरदयालसिंह, जिला फिरोजपुर

वीर चक्र विजेता

नायक मुंशी राम, भदाना, जिला रोहतक

विंग कमाण्डर पी० एल० धवन, अम्बाला (वीर चक्र पट्टी)

कैप्टन गुरचरनसिंह भाटिया, यमुनानगर, जिला अम्बाला

कैप्टन बी० सी० चोपड़ा, अमृतसर

सैकंड लैफ्टीनैंट हरिश्चन्द्र गुजराल, लुधियाना

स्क्वैड्रन लीडर एस० के० बधवार, फिरोजपुर

हवालदार धर्मसिंह, गुभाना माजरी, जिला रोहतक

सैकंड लैफ्टीनैंट प्रदीपसिंह भंडारी, बटाला, जिला गुरदासपुर

लैफ्टीनैंट हरिपाल कौशिक, खुसरोपुर, जिला जालन्धर

स्क्वैड्रन लीडर ए० एस० विलियम, जिला रोहतक

(डी० ए०) गुरदीपसिंह, जिला अमृतसर

कैप्टन प्रेम नाथ भाटिया, जिला गुड़गांव

जमे० राम चन्द्र, जिला गुड़गांव

नायक हुकम चन्द, जिला गुड़गांव

जमे० सुरजा, जिला रोहतक

शत्रु को हम नष्ट करके देश को विकसित करेंगे

श्रीमती हीरा देवी चतुर्वेदी 'मस्त'

बढ रहा है देश अपना, दिन रहे या रात काली ।

बाध हमने है बनाए, और बिजली भी बना ली ।
जगमगा दी आज हमने गाव की गलिया निराली ।

गर्व मे अब देश अपना, रेल के इजन बनाता ।
युद्ध के भी शस्त्र अब तो, मुक्त भारत है बनाता ।

यह सफलता योजना की, कह रहा है विश्व सारा ।
बन चुका है लक्ष्य अपना, हित सभी का मन्त्र प्यारा ।

स्वप्न मे भी किन्तु यह सब, चीन को किचित न भाया ।
भूल सारी मित्रता को, शत्रु बनकर आज आया ।

कर दिया हमला अचानक, आज भारत पर हमारे ।
कर दिए है योजना के रुद्ध इसने स्रोत सारे ।

हो भले ही दूर मजिल, क्यो रुकेगे पग हमारे ?
है दमकते अन्त मे तो, सत्य के ही जब सितारे ।

शत्रु को हम नष्ट करके, देश को विकसित करेगे ।
चल रही जो योजनाए, हम उन्हे दीपित रखेगे ।

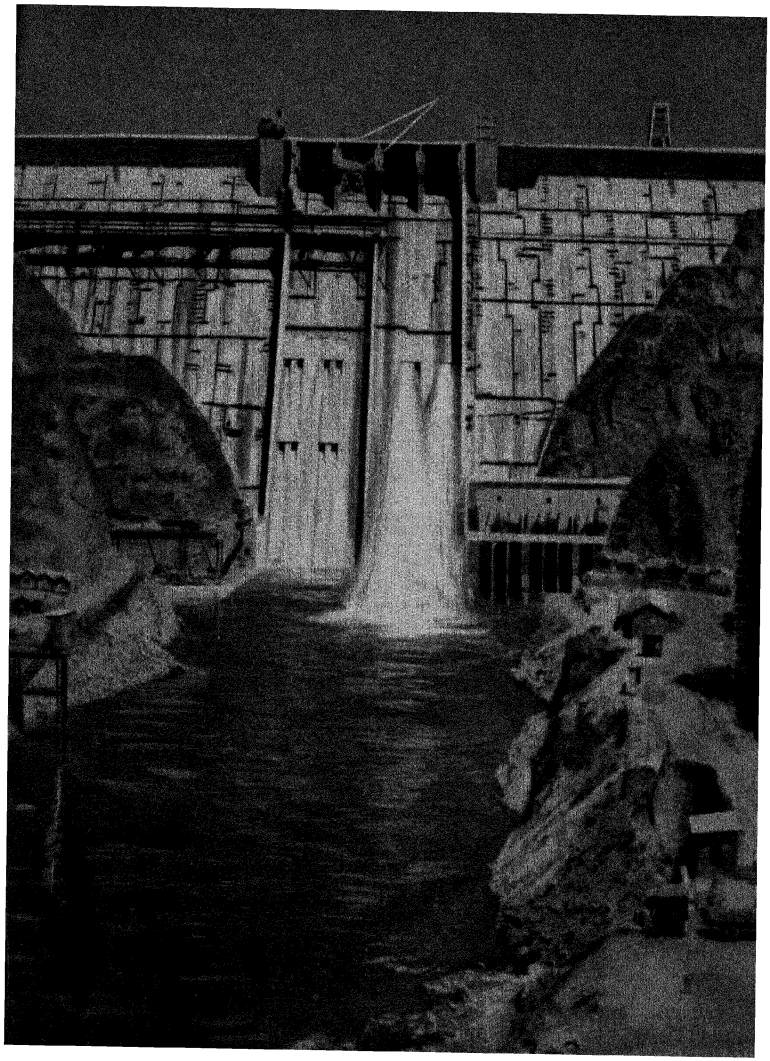

भाखड़ा-बांध

राष्ट्र की समुन्नति और सुरक्षा सुनिश्चित
करने वाली देश की सर्वप्रमुख परियोजना

विश्वासघाती चीन की चुनौती का मुंहतोड़ उत्तर देने वाली कविताओं का यह संकलन राष्ट्र-नायक श्री जवाहरलाल नेहरू को उन की ७४वी वर्षगाठ के उपलक्ष्य मे भेण्ट किया गया ।

रणभेरी